www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 21 जुलाई, 2024

दैनिक जागरण
जहां इच्छा है वहां आंसू हैं

बांग्लादेश के बुरे हालात

बांग्लादेश में आरक्षण विरोधी आंदोलन के हिंसक हो जाने के बाद वहां पढ़ने गए भारतीय छात्रों को जिस तरह सुरक्षित वापस लाने का अभियान शुरू करना पड़ा, उससे यही पता चलता है कि वहां हालात कितने खराब हैं। हालांकि आरक्षण विरोधी उग्र प्रदर्शनों के बाद पूरे देश में कर्फ्यू लगाने के साथ सेना को भी उतार दिया गया है, लेकिन हिंसा थमने का नाम नहीं ले रही है। यह हिंसा कितनी उग्र और व्यापक है, इसका पता इससे चलता है कि अभी तक सौ से अधिक लोग मारे जा चुके हैं। बांग्लादेश में सरकारी नौकरियों में सबसे अधिक 30 प्रतिशत आरक्षण 1971 के मुक्ति संग्राम के स्वतंत्रता सेनानियों के वंशजों के लिए और 10-10 प्रतिशत पिछड़े जिलों के लोगों एवं महिलाओं के लिए है। इसके अतिरिक्त पांच प्रतिशत अल्पसंख्यक समूहों और एक प्रतिशत दिव्यांगों के लिए है। इस प्रकार कुल 56 प्रतिशत सरकारी नौकरियां आरक्षित हैं। विरोध मुख्यतः 1971 के मुक्ति संग्राम के स्वतंत्रता सेनानियों के वंशजों को मिलने वाले 30 प्रतिशत आरक्षण को लेकर है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि इसकी सीमा तार्किक नहीं दिखती। इसी कारण उसका विरोध भी होता रहा है। हालांकि सरकार ने 2018 में इस आरक्षण को खत्म कर दिया था, लेकिन हाई कोर्ट ने उसे फिर बहाल कर दिया। अब आरक्षण का यह मामला सुप्रीम कोर्ट के समक्ष है, लेकिन लगता है कि आरक्षण विरोधी उसके फैसले की प्रतीक्षा करने के लिए तैयार नहीं।

बांग्लादेश सरकार को इससे चिंतित होना चाहिए कि आरक्षण विरोधी आंदोलन को कट्टरपंथी तत्व भी हवा दे रहे हैं। इन तत्वों में वे भी हैं, जिनका संबंध पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी से माना जाता है और जो भारत विरोध के लिए भी जाने जाते हैं। स्पष्ट है कि भारत को वहां के हालात पर गहरी निगाह रखनी होगी। यह राहतकारी है कि अभी तक करीब एक हजार भारतीय छात्र बांग्लादेश से स्वदेश आ गए हैं, लेकिन लगभग अन्य अनेक वहां फंसे हुए हैं। एक अनुमान के अनुसार बांग्लादेश में करीब साढ़े आठ हजार भारतीय छात्र हैं। इसके अतिरिक्त काम-धंधे के सिलसिले में गए भारतीय नागरिक भी हैं। भारत को इन सबकी सुरक्षा की चिंता तो करनी ही होगी, इसे लेकर भी सतर्क रहना होगा कि हिंसा के कारण बांग्लादेशी पलायन कर भारत न आने पाएं। इस सबके साथ ही भारत को इस पर भी विचार करना होगा कि आखिर भारतीय छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए बांग्लादेश जाने की जरूरत क्यों पड़ती है? बांग्लादेश में केवल पड़ोसी भारतीय राज्यों के छात्र ही पढ़ाई करने के लिए नहीं जाते, बल्कि हरियाणा और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों के छात्र भी जाते हैं। इनमें एक बड़ी संख्या उन छात्रों की है, जो मेडिकल की पढ़ाई के लिए जाते हैं। कोई भी समझ सकता है कि आम तौर पर ये वही छात्र होते हैं, जिन्हें देश में मेडिकल की पढ़ाई का अवसर नहीं मिल पाता।

हवाई सेवा

उत्तराखंड के प्रत्येक जिले और महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों को हवाई सेवा से जोड़ने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। यह निश्चित रूप से एक अच्छा प्रयास है, जिस पर गंभीरता से काम करना होगा। उत्तराखंड की भौगोलिक स्थिति कुछ ऐसी है कि यहां अभी तक सड़क मार्ग ही आवागमन का प्रमुख जरिया है। विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में तो सड़क लाइफ लाइन की तरह है। सड़क मार्ग के क्षतिग्रस्त होने से रोजमर्रा की जिंदगी भी प्रभावित होने लगती है। इसका प्रभाव पर्यटन एवं चारधाम यात्रा पर भी पड़ता है। ऐसे में जरूरत है कि वैकल्पिक व्यवस्था विकसित की जाए। हवाई संपर्क को मजबूत करने से न केवल आवागमन सुगम हो रहा है, बल्कि पर्यटन को भी बढ़ावा मिल रहा है। प्रदेश में उड़ान योजना के अंतर्गत हेली एवं हवाई सेवाओं का संचालन हो तो रहा है, लेकिन ये सेवाएं सीमित हैं। इनकी संख्या बढ़ाए जाने की जरूरत महसूस की जा रही है। इस दिशा में सरकार ने कदम बढ़ाए हैं। राजधानी देहरादून एवं पंतनगर एयरपोर्ट से विभिन्न राज्यों के प्रमुख शहरों के लिए हवाई सेवाओं का दायरा बढ़ाया गया है। इससे आवागमन सुगम हुआ है। अब राज्य के भीतर हर जिले में हेली सेवाओं को शुरुआत करने की तैयारी है। हाल ही में उत्तराखंड नागरिक उड्डयन विकास परिषद की बोर्ड बैठक में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने इसके लिए कदम उठाने के निर्देश दिए। साथ ही देहरादून के जौलीग्रांट एयरपोर्ट की तरह पंतनगर एयरपोर्ट पर नाइट लैंडिंग की व्यवस्था तथा इनके विस्तारीकरण एवं अवस्थापना सुविधाओं के विकास पर ध्यान देने को कहा है। उम्मीद की जानी चाहिए कि इस दिशा में अब तेजी से सकारात्मक कदम उठाए जाएंगे। यह समझना होगा कि यहां सुगम आवागमन के जितने भी तरीके विकसित होंगे, उससे राज्य की आर्थिकी को तो बढ़ावा मिलेगा ही, स्थानीय निवासियों के लिए भी रोजगार के पर्याप्त अवसर सृजित होंगे।

आम बजट से अपेक्षाएं

संजय गुप्त

यह ठीक नहीं कि जिन तमाम वस्तुओं का देश में सहजता से निर्माण संभव है, उन्हें तमाम एशियाई देशों और खासतौर से चीन से मंगाया जा रहा है?

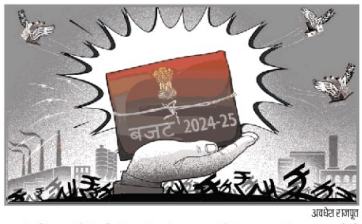

अवधेश राजपूत

संसद का बजट सत्र शुरू होने जा रहा है और यह स्वाभाविक ही है कि सबकी निगाहें मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल के पहले आम बजट पर होंगी। बजट में क्या होगा, यह तो उसके सामने आने पर ही पता चलेगा, लेकिन सरकार को जिन पहलुओं पर सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए, उनमें प्रमुख है भारत मैन्यूफैक्चरिंग का गढ़ कैसे बने? चार वर्ष पहले जब गलवन में चीनी सैनिकों के साथ भारतीय सैनिकों की खूनी भिड़ंत हुई थी, तब भारत में चीन के प्रति आक्रोश की लहर उमड़ पड़ी थी और तमाम लोगों ने चीनी वस्तुओं को जलाने के साथ उनके बहिष्कार का अभियान छेड़ दिया था। गलवन की घटना के कारण भारत ने चीनी एप्स पर प्रतिबंध लगाने के साथ अपने आत्मनिर्भर अभियान को और तेज किया था। चूंकि उन्हीं दिनों चीन की अमेरिका के साथ तनातनी बढ़ रही थी, इसलिए यह उम्मीद की जा रही थी कि इसका लाभ भारत को मिलेगा।

जब चीन से निकली कोविड महामारी ने दुनिया भर में कहर ढाया और चीन के प्रति लोगों की नाराजगी बढ़ने के चलते पश्चिमी देशों ने यह समझा कि चीन पर निर्भरता कम करने की जरूरत है तो इन देशों की बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने वहां से निकलना शुरू किया। तब यह माना गया था कि पश्चिमी देशों की चीन में स्थापित बहुराष्ट्रीय कंपनियां वहां से निकलकर भारत आएंगी। उन दिनों भारत सरकार भी यह आशा कर रही थी कि दिग्गज बहुराष्ट्रीय कंपनियां चीन से पलायन कर भारत को अपने मैन्यूफैक्चरिंग केंद्र के रूप में प्राथमिकता देंगी। एपल जैसी कुछ कंपनियों ने तब भारत में अपने पैर भी जमाए और भारत में अपनी मैन्यूफैक्चरिंग का दायरा भी बढ़ाया। उसी दौरान सरकार पीएलआइ यानी उत्पादन आधारित प्रोत्साहन जैसी पहल के साथ आगे आई। पीएलआइ का उद्देश्य देसी-विदेशी कंपनियों को भारत में अपनी आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना था और इसीलिए उनके लिए राहत का पिटारा भी खोला गया। निःसंदेह पीएलआइ के जरिये कुछ सफलता हासिल हुई, लेकिन यह आयात पर एक बड़ी हद तक कायम निर्भरता को दूर करने में नाकाम रही। आज स्थिति यह है कि लगभग हर क्षेत्र की कंपनियां विभिन्न श्रेणियों में आयात पर निर्भर हैं। इस आयात में बड़ा हिस्सा चीन से आने वाली वस्तुओं का है। बीते एक दशक से जीडीपी में मैन्यूफैक्चरिंग की हिस्सेदारी करीब 15 प्रतिशत पर अटकी हुई है। यह तब है, जब एक के बाद एक सरकारों के दौर में इसे 25 प्रतिशत तक ले जाने की योजनाएं बनाई गईं। स्पष्ट है कि ये योजनाएं अभी तक सिरे चढ़ती नहीं दिख रहीं।

सरकार को बजट का उपयोग औद्योगिक गतिविधियों में जान फूंकने के लिए करना चाहिए। सरकार को एमएसएमई और लार्ज स्केल मैन्यूफैक्चरिंग के मोर्चे पर कायम चुनौतियों के समाधान को प्राथमिकता सूची में शामिल करना होगा। सरकार को इस मामले में गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है कि आखिर भारतीय विनिर्माताओं की उद्यमशीलता की भावना पर क्यों ग्रहण लगता जा रहा है? क्या कारण है कि वे चीनी कंपनियों का मुकाबला करने के लिए कमर नहीं कस पा रही हैं? आखिर ऐसा परिवेश किन कारणों से कायम है कि भारतीय कंपनियां आयात पर निर्भरता घटाने के लिए शोध एवं विकास में निवेश के बजाय चीनी वस्तुओं से लेकर वहां बने पुर्जों के आयात को प्रथामिकता देती आ रही हैं?

यह प्रश्न अनुत्तरित रहना ठीक नहीं कि जिन तमाम वस्तुओं का देश में सहजता से निर्माण संभव है, उन्हें तमाम एशियाई देशों और खासतौर से चीन से क्यों मंगाया जा रहा है? इस प्रश्न की तह तक जाने से यह पता चलता है कि देश में उन सुधारों का अभाव दिखता है, जो विनिर्माताओं में भरोसे का संचार कर सकें। मिसाल के तौर पर श्रम सुधारों की कड़ी एमएसएमई से जुड़ी हुई है। पुराने श्रम कानूनों से उनके हित प्रभावित हो रहे हैं। श्रम कानूनों के मामले में जटिल नियमों का मकड़जाल बना हुआ है। इनके चलते किसी भी कारोबारी गतिविधि के मोर्चे पर अनावश्यक रूप से अधिक समय लगता है। यह स्थिति केंद्र और राज्य, दोनों स्तरों पर बनी हुई है, जिसका लगातार असर विनिर्माताओं के मनोबल पर पड़ता है। सरकार की ओर से इन नियमों को सरल-सहज बनाने के अनगिनत दावे किए जाने के बावजूद वास्तविकता यही है कि इनमें से तमाम नियम-कानून अभी भी पुराने जमाने के हैं, जिनकी प्रकृति शोषणकारी है। इसमें विनिर्माताओं के लिए वैसे प्रोत्साहनों का अभाव है, जो दक्षिण पूर्व एशियाई देशों की तमाम अर्थव्यवस्थाओं में बहुत आसानी से उपलब्ध हैं। यही कारण है कि ये देश निवेश के आकर्षक ठिकाने और मैन्यूफैक्चरिंग गतिविधियों के गढ़ बने हुए हैं।

यह एक तथ्य है कि चीन से निकली कंपनियां भारत आने के स्थान पर दक्षिण पूर्वी एशियाई देश जाना पसंद कर रही हैं। स्पष्ट है कि उन कारणों का भी पता लगाने की जरूरत है, जिनके चलते तमाम भारतीय उद्यमी अपनी जमीनों पर नए मैन्यूफैक्चरिंग प्लांट लगाने या अपने कारोबार का विस्तार करने के बजाय इन जमीनों को बेचना कहीं अधिक पसंद कर रहे हैं। इसके क्या कारण हो सकते हैं? क्या उन्हें श्रम सुधारों को लेकर सरकारी नीतियों पर भरोसा नहीं है या फिर कोई अन्य नियम-कानून उनकी राह रोकते दिख रहे हैं? समय आ गया है कि इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार किया जाए, क्योंकि इसके बिना चीन की चुनौती का सामना नहीं किया जा सकता। इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि चीन के साथ अनेक देशों से व्यापार घाटा बढ़ने का एक कारण भारतीय कंपनियों का उन अनेक वस्तुओं का निर्माण न कर पाना है, जो देश में आसानी से निर्मित हो सकती हैं। भारतीय कंपनियों की इस कमजोरी का कारण इनोवेशन का अभाव, औसत भारतीय श्रमिकों की कम उत्पादकता और चीन से मुकाबला करने की इच्छाशक्ति का अभाव है। भारत सरकार को यह देखना होगा कि भारतीय कंपनियों की यह कमजोरी दूर हो। इस पर इसलिए भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, क्योंकि इससे रोजगार के नए अवसर पैदा करने में भी आसानी होगी। सरकार को यह समझना होगा कि बेरोजगारी की समस्या को दूर करने में लघु एवं मध्यम श्रेणी के उद्योग कहीं अधिक सहायक हैं।

response@jagran.com

एक गिरे हुए पुल की व्यथा-कथा

हास्य-व्यंग्य

संतोष त्रिवेदी

पुल अपने निजी स्वार्थ के लिए नहीं गिरा, बल्कि भ्रष्टाचार का मारा था, इसलिए भरभराकर गिरा

मैं एक गिरा हुआ पुल हूं। अभी हाल में गिरा हूं। सबके सामने, दिन-दहाड़े। मेरे पास मनुष्यों की तरह गिरने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। मैं स्वयं से नहीं गिरा, योजना बनाकर गिराया गया। यह मेरी नहीं, दूसरों की गिरावट है। मुझ पर लगातार आरोप लग रहे हैं कि मैं अचानक गिरा हूं। सच यह है कि बनने से पहले ही मेरे गिरने की नींव रख दी गई थी। मुझे गर्व है कि मैं अपने आप नहीं गिरा, न ही अपने लिए गिरा। वहीं जिन्हें सजीव कहा जाता है, वे अपने लाभ के लिए कभी भी गिर लेते हैं। धन और पद के लिए बह जाते हैं। इधर मुझे देखो। भारी बाढ़ में बहा। जब दबाव बढ़ा, तभी ढहा। मेरे साथ कई निर्दोषों की जान चली गई। इसके लिए मेरी थू-थू हो रही है। जबकि हकीकत यह है कि 'गिरने' और मरने वाले, दोनों ही मनुष्य थे। मीडिया ने सुर्खी दी कि पुल गिर गया। उसे भी नहीं दिखा कि इस 'गिरने' में कौन-कौन और कितना गिरा है, लेकिन वह भी क्या करे। उसे नहीं दिख रहा कि यह सामूहिक गिरावट का दौर है। हम गिरकर भी दूसरों को बचा रहे हैं। यह नए प्रकार का हुनर है।

मैं अकेले नहीं गिरा। मेरे और भी समकालीन भाई गिरे। उन्हें भी ठीक-ठाक बजट के साथ गिराया गया। हमें बनाने वाले विपुल धनराशि में फिसले और हम अथाह जलराशि में। हम गिरने में भी एक नहीं थे, जबकि हमें मिलकर गिराया गया। हमने गिरकर भी गुनाह नहीं किया, बल्कि जनसेवकों, अफसरों और ठेकेदारों के गुनाह उजागर किए हैं। फिर भी हमारी निंदा हो रही है। हमारे निर्माताओं के भीतर कुछ मरा हो या न हो, बल्कि मैं व्यक्तिगत रूप से ऐसे भ्रष्टाचरण से धूल-धूसरित हो गया। उनके हौसले तक पस्त नहीं हुए। नई योजनाओं के साथ 'वे' फिर से प्रकट होंगे। मेरा गिरना एक स्वाभाविक घटना थी। मैं स्वार्थ के लिए कतई नहीं गिरा। अंदर से भरा हुआ था, इसलिए भरभराकर गिरा। जो मैं देख रहा था, बनते समय वह किसी को नहीं दिखा। लूट-खसोट, परसेंट और अनियमितताओं का बोझ मैं अकेले कितने दिनों तक ढोता। मुझे बनते-बनते ही गिर जाना चाहिए था। फिर भी मैंने सब्र किया। भ्रष्टाचारी मुझ पर कूद रहे थे। छाती पर पत्थर रखकर सब सहा। मुझे दूसरों की चिंता थी। असहायों और जरूरतमंदों को उनके अपनों से मिलवाया। युवाओं को उनकी नौकरी और छात्रों को उनकी परीक्षाओं तक सही समय पर पहुंचाया।

यह गिरने से ठीक पहले की बात है। मैंने बिना भेदभाव के सबको नदी पार कराई। फिर भी मुझे उचित महत्व नहीं मिला। यहां तक कि एक ऊंचे कवि ने भी मुझे अहमियत नहीं दी। वह बार-बार सबको चेता रहा था, 'पुल पार करने से नदी पार नहीं होती, नदी में धंसे बिना पुल पार नहीं होता!' अब ऐसी कविता सुनकर कोई भी प्रेरित हो सकता है। मेरे निर्माता अति संवेदनशील थे। मुझसे ज्यादा मेरे निर्माताओं ने इससे प्रेरणा ली। उसी क्षण नदी में मेरा धंसना निश्चित हो गया था। पार होने के लिए धंसना ही विकल्प बचा तो मैं ही क्यों विद्रोह करूं। इसलिए पहली बारिश में ही मुक्ति की राह पकड़ ली।

आगे भी पुल बनेंगे और ढहेंगे। पुलों का बह जाना आगे से कोई खबर नहीं होगी। ठीक वैसे ही जैसे अब मनुष्यों का 'बह जाना' कोई खबर नहीं है। फिर भी यह सवाल उठता है कि अगर मैं नियत समय पर नहीं गिरता, तो आधुनिक इंजीनियरों, अफसरों और जननायकों पर से जनता का भरोसा गिर जाता। मैंने सरकार को बहुत बड़े धर्मसंकट से बचा लिया है। ठेकेदारों का व्यवस्था पर भरोसा नहीं टूटने दिया है। सरकारी काम में एकता की मिसाल आगे भी कायम रहे। सभी मिलजुलकर गिरें, ऐसी कामना है। एक आखिरी बात। मुझमें और नेताओं में समानता की बात कभी मत करना। वे भ्रष्टाचार करते हैं, इस्तीफा तक नहीं देते और जब मैं भ्रष्टाचार में लिप्त पाया जाता हूं, तो प्राणोत्सर्ग कर लेता हूं। एक पुल होने में और एक मनुष्य होने में यही बुनियादी फर्क है।

response@jagran.com

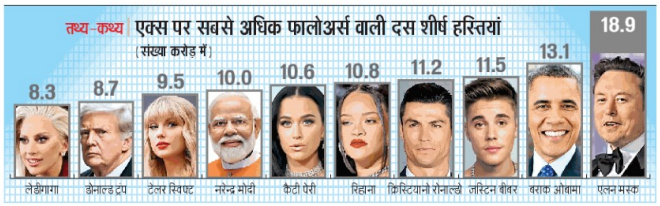
तथ्य-कथ्य एक्स पर सबसे अधिक फालोअर्स वाली दस शीर्ष हस्तियां
(संख्या करोड़ में)

ऊर्जा

गुरु-शिष्य परंपरा

पंचतत्व सृष्टि के मुख्य उपादान हैं, किंतु चेतनता का आधार सूर्य है, जिसके बिना जीवन संभव नहीं, परंतु मानव जीवन का उद्देश्य बाह्य प्रकाश से नहीं, बल्कि ज्ञान के भीतरी आलोक से पूर्ण होता है, जो गुरुकृपा से संभव है। यही मानवी संचेतना का आधार है, जिसके बिना चेतनशील प्राणी भी जीवनभर ठोकर खाता है। इसलिए अज्ञान का तम अधिक भयावह होता है। ''असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय'' की पंक्तियां इसी पीड़ा को रेखांकित करती हैं। बाह्य प्रकाश में संसार का दर्शन तो होता है, किंतु क्या, कब, कैसे और कहां देखना है? इसका ज्ञान नहीं होता। गुरु अंतर्चक्षुओं को उद्घाटित कर सत्-असत् का ज्ञान कराने वाली दृष्टि प्रदान करते हैं, जिससे सभी इंद्रियां सन्मार्गगामिनी होकर मानव को दिव्यता की ओर ले जाती हैं। मानव जीवन की पूर्णता गुरु ज्ञान में है। अक्षरज्ञान के प्रणेता और समस्त कलाओं के अधिष्ठाता भगवान शिव प्रथम गुरु हैं। गीताज्ञान गुरु-शिष्य परंपरा का प्रतिफलन है। समय के साथ इसका रूप जरूर बदला, किंतु इसने हमेशा मानव का पथ प्रशस्त किया है। इसका सर्वाधिक विस्तार वैदिक काल में हुआ। आध्यात्मिक ज्ञान के भंडार उपनिषद् ग्रंथ इसी के परिणाम हैं, जिनमें लोक जीवन के भी अमोघ सूत्र हैं। यह परंपरा सतत गतिमान है।

गुरु पूर्णिमा गुरुओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का पर्व है। महर्षि वेदव्यास के जन्म के कारण इसे व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है, जिन्होंने महाभारत युद्ध में न केवल संजय को, अपितु वेदों का विस्तार कर जन-जन को दिव्य दृष्टि प्रदान की। गुरु की इसी महिमा के कारण परमात्मा भी गुरु के शरणागत हुए। इसीलिए गुरु को परमात्मा से ऊंचा स्थान प्राप्त हुआ। प्रकृति का हर तत्व शिक्षक है। भगवान दत्तात्रेय ने मधुमक्खी आदि कीट-पतंगों को भी अपना गुरु बनाया। ऐसी महनीय गुरु-शिष्य परंपरा को नमन है।

डा. सत्यप्रकाश मिश्र

ग्लोबल वार्मिंग से भूजल पर संकट

मुकुल व्यास

दुनिया में लगभग हर चार में से एक व्यक्ति जीवित रहने के लिए पृथ्वी की सतह के नीचे मौजूद जलाशयों पर निर्भर है

ग्लोबल वार्मिंग भूजल को भी प्रभावित कर सकती है। साफ पानी की झीलों, नदियों और बांधों तक आसान पहुंच नहीं हो पाने के कारण दुनिया में लगभग हर चार में से एक व्यक्ति जीवित रहने के लिए पृथ्वी की सतह के नीचे मौजूद जलाशयों पर निर्भर है। अब विज्ञानियों ने चेताया है कि सदी के अंत तक लाखों लोग पानी की इस मामूली आपूर्ति से भी वंचित हो सकते हैं, क्योंकि बढ़ते तापमान के कारण उथले भूजल के विषाक्त होने का खतरा है। शोधकर्ताओं की एक अंतरराष्ट्रीय टीम ने वैश्विक तापमान वृद्धि के विभिन्न परिदृश्यों के तहत कहा है कि सबसे खराब स्थिति में 2100 में लगभग 59 करोड़ लोग ऐसे जल स्रोतों पर निर्भर हो सकते हैं, जो पीने योग्य पानी के लिए सबसे कड़े मानकों को पूरा नहीं करते हैं।

इस समय गर्मी, पिघलती हुई बर्फ और समुद्रों का बढ़ता स्तर नियमित रूप से सुर्खियां बटोर रहे हैं, लेकिन हमारा ध्यान भूमि पर ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों की तरफ नहीं जाता। जलवायु परिवर्तन पर चर्चा करते हुए हमारा फोकस मौसम की घटनाओं और पानी की उपलब्धता पर रहता है, लेकिन हमें भूजल पर पड़ने वाले जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के बारे में अधिक व्यापक रूप से सोचने की आवश्यकता है। यह आश्चर्यजनक है कि भूजल के गर्म होने के परिणामों पर इतना कम ध्यान दिया गया है। सतह के ठीक नीचे छिद्रपूर्ण चट्टानों के भीतर फंसा पानी घुले हुए खनिजों, प्रदूषकों और संभावित रोगजनकों से भरा हो सकता है, लेकिन बहुत बड़ी आबादी के समक्ष इस प्रदूषित जल पर निर्भर रहने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं है। इन भूमिगत जलाशयों को सिर्फ एक या दो डिग्री गर्म करने से परिणाम भयावह हो सकते हैं। इससे पर्यावरण में आक्सीजन की कमी हो सकती है और खतरनाक बैक्टीरिया के विकास को बढ़ावा मिल सकता है, या आर्सेनिक और मैंगनीज जैसी भारी धातुओं की मात्रा पानी में घुल सकती है।

विज्ञानियों के अनुसार दुनिया में पहले से ही लगभग तीन करोड़ लोग ऐसे क्षेत्रों में रह रहे हैं, जहां भूजल निर्धारित तापमान से ज्यादा गर्म है। इसका मतलब है कि बिना ट्रीटमेंट के वहां का पानी पीना सुरक्षित नहीं है। आसपास पर्याप्त आकार के सतही जलाशयों वाली आबादी के लिए भी गर्म भूजल उन प्रमुख कारकों को बदल सकता है, जो पानी को मानव उपभोग के लिए सुरक्षित रखते हैं। 7.7 करोड़ से 18.8 करोड़ लोगों के ऐसे क्षेत्र में रहने का अनुमान है जहां भूजल 2100 तक पीने योग्य मानकों को पूरा नहीं कर पाएगा। इससे पता चलता है कि भूजल की रक्षा के लिए कार्रवाई करना और भूजल पर जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभाव का मुकाबला करने के लिए स्थायी समाधान खोजना कितना आवश्यक है।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

राजग के प्रवक्ता

आने वाले समय में टीवी चैनलों पर भाजपा, जदयू या किसी अन्य दल के प्रवक्ता की जगह राजग के प्रवक्ता देखने को मिल सकते हैं। राजग प्रवक्ताओं की पूरी सूची तैयार की जा रही है। सभी घटक दलों से अपने-अपने प्रवक्ताओं की सूची मांगी जा चुकी है। इनमें वे घटक दल हैं, जिनका संसद या सरकार में प्रतिनिधित्व है। अगले एक-दो दिनों में इन प्रवक्ताओं की समन्वय बैठक भी सकती है। अहम राष्ट्रीय मुद्दों पर राजग के सभी प्रवक्ता एक स्वर में बोलें, इसके लिए उन्हें इन मुद्दों से संबंधित विस्तृत जानकारी भी उपलब्ध कराई जाएगी। चैनलों पर डिबेट के दौरान यह सुनिश्चित किया जाएगा कि राजग घटक से एक ही प्रवक्ता सरकार का पक्ष रखने के लिए मौजूद रहे। राजग के इन प्रवक्ताओं पर एकजुट होकर विपक्षी दलों के नैरेटिव को ध्वस्त करने की जिम्मेदारी होगी। दरअसल विपक्षी गठबंधन आइएनडीआइए की ओर से सपा, टीएमसी, द्रमुक, एनसीपी से लेकर वामपंथी दलों के नेता इन दिनों मुखर दिख रहे हैं। ऐसे में भाजपा के लिए भी अपने सहयोगियों के चेहरे को आगे लाना शायद सियासत की जरूरत है।

राजरंग

पगड़ी का महत्व

बिहार भाजपा अध्यक्ष सम्राट चौधरी को पगड़ी उतारने के बाद उसका महत्व समझ में आ रहा है। जब तक सिर पर लाल पगड़ी थी, तब तक उन्हें प्रदेश में शीर्ष पद का पहला दावेदार माना जा रहा था, लेकिन जब से उन्होंने अयोध्या जाकर पगड़ी उतारी है, तब से लोगों ने मान लिया है कि उन्हें जितना मिलना था, उतना मिल चुका। नीतीश कुमार के रहते सरकार में उनकी पदोन्नति भी अब संभव नहीं है। पगड़ी हटाने के बाद तो भाजपा संगठन में भी सम्राट के विकल्प की मांग उठने लगी है। पार्टी के अंदर से ही कुछ लोग पटना से लेकर दिल्ली तक अभियान में जुट गए हैं कि सम्राट चौधरी को प्रदेश अध्यक्ष पद से हटाकर राजपूत या अति पिछड़ा वर्ग में से किसी को पार्टी की कमान सौंपी जाए। पूर्व केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे और संजय पासवान तो सम्राट चौधरी के खिलाफ दबी जुबान से बोलने लगे हैं। बिहार में यादव के बाद पिछड़ों में दूसरी सबसे बड़ी आबादी कुशवाहा जाति की है। सम्राट इसी जाति से हैं, जिन्हें लालू यादव के मुस्लिम-यादव (माय) समीकरण को पस्त करने के लिए भाजपा ने आगे किया है। नीतीश जब भाजपा से अलग महागठबंधन सरकार के मुखिया थे, तब सम्राट ने उन्हें हटाने का प्रण लेकर पगड़ी धारण किया था, किंतु जब नीतीश भाजपा के साथ आ गए तो पगड़ी भारी लगने लगी, मगर पगड़ी हटाई तो पद पर भी आफत आती दिखने लगी है।

सेवा के लिए चक्कर

चाहे राजनीतिक समीकरण हों या फिर चुनावी हार, राजग सरकार के नए मंत्रिमंडल में दर्जनों पूर्व मंत्रियों को जगह नहीं मिल पाई। सत्ता सियासत के महकमे में इसका असर यह भी हुआ है कि इन पूर्व मंत्रियों के पीएस, ओएसडी से लेकर स्टाफ का अमला खाली हो गया है। आधे से ज्यादा पूर्व मंत्रियों के स्टाफ के लोगों ने अपने लिए नए मंत्री ढूंढ़ फिर से अपनी जगह बना ली है, मगर कई ऐसे लोग हैं, जो अपने पूर्व मंत्री की सिफारिश लेकर अभी जगह पाने की कसरत में जुटे हैं। कैबिनेट के एक महत्वपूर्ण सदस्य ने अपने पूववर्ती मंत्री के स्टाफ पर पूरी उदारता दिखाते हुए लगभग सबको अपने कार्यालय में रख लिया, मगर अपना पद बचाने के बावजूद ओएसडी स्तर के एक अधिकारी बहुत खुश नहीं हैं। इसलिए राजनीतिक समीकरण साधने के प्रयासों के तहत संघ-भाजपा के पदाधिकारियों के चक्कर लगाने से लेकर दूसरे मंत्रियों के यहां टोह लेने के लिए हर यत्न कर रहे हैं।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****

एक्स से

हमने ऐसे दावे सुने हैं कि डोनाल्ड ट्रंप हमारे वरिष्ठ नागरिकों के लिए लड़ रहे हैं। जब आप सामाजिक सुरक्षा और चिकित्सा सेवाओं में कटौती करने का इरादा रखते हैं, तो आप उनके लिए लड़ने का दावा कैसे कर सकते हैं?- कमला हैरिस/ अमेरिकी उप-राष्ट्रपति

आशा और जन-अवधारणा के विपरीत आए नतीजों ने गफलतों को उतार फेंकने का अवसर भाजपा को प्रदान किया है। उसके पास सबक लेने का समय, साधन और सक्षम नेतृत्व है। पहले दल की दलदल बाहर से नहीं दिखती थी। अब जब बिखराव दिख रहा है, तो पार्टी को अपना लौह-कवच फिर से धारण करना होगा।

स्कैन करें
आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

भाजपा को इस भंवर से निकलना होगा

शशि शेखर

आजकल

ऐसा लगता है, जैसे भारतीय जनता पार्टी की इस्पाती सतह के भीतर कुछ खदबदा रहा है। कभी किसी केंद्रीय मंत्री के बयान पर चर्चाओं का बवंडर उठ आता है, तो कभी किसी उप-मुख्यमंत्री का कथन सुर्खियां बन जाता है। क्या भारतीय जनता पार्टी का अनुशासन एक ऐसा तिलिस्म था, जो उम्मीद के मुताबिक जीत के अभाव में उघड़ने लगा है?

इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए पहले मौजूदा उथल-पुथल पर नजर डाल लेते हैं। जिन राज्यों में इस लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को झटका लगा, उनमें उत्तर प्रदेश अव्वल है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खुद वाराणसी से चुनाव लड़ते हैं। उनके डिप्टी राजनाथ सिंह लखनऊ से चुने जाते हैं। सबसे काबिल मुख्यमंत्रियों में जिनकी गणना होती है, वह योगी आदित्यनाथ वहां के मुख्यमंत्री हैं। इससे पहले के दो लोकसभा चुनावों में भाजपा ने वहां से क्रमशः 71 और 62 सीटें जीती थीं। ऐसे में, 29 सीटों का नुकसान पार्टी को हिला गया। अगर भाजपा को पिछले चुनाव के बराबर सीटें मिल गई होतीं, तो उसे रह बची तीन सीट जुटाकर लोकसभा में बहुमत हासिल करने में कोई खास दिक्कत नहीं पेश आती।

जाहिर है, पार्टी को गंभीर मंथन की जरूरत है, पर भाजपा के तमाम नेता एक-दूसरे पर कीचड़ उछालने में व्यस्त हैं। जो भूल गए हैं, उन्हें याद दिला दूं, अटल बिहारी वाजपेयी के वक्त में कल्याण सिंह को लेकर ऐसी ही चर्चाएं हुई थीं। कल्याण सिंह का जो नुकसान हुआ, वह अपनी जगह है, पर अगली बार विधानसभा में भाजपा औंधे मुंह जा पड़ी थी। यही नहीं, उसके दो साल बाद अटल जी को भी सत्ता गंवानी पड़ी थी। केंद्र की हुकूमत पाने के लिए भाजपा को दस और उत्तर प्रदेश के लिए पंद्रह बरस का वनवास झेलना पड़ा था। वर्ष 2017 से आज तक योगी आदित्यनाथ वहां के मुख्यमंत्री हैं। पार्टी ने योगी के चेहरे को आगे कर 2022 का विधानसभा चुनाव लड़ा और इस बार भी बहुमत हासिल हुआ। यही वजह थी कि लोकसभा चुनावों से पहले माना जा रहा था कि पार्टी वहां 75 के करीब सीटें जीतेगी। ऐसा नहीं हुआ। क्यों?

रॉबर्ट्सगंज संसदीय क्षेत्र का यह किस्सा सुनिए, जवाब मिल जाएगा। चुनाव से ऐन पहले हम रेणुकूट से चलकर हाथी नाला पहुंचने वाले थे। दोनों तरफ जंगल था। अचानक मेरी नजर दूर बाईं तरफ बकरी चरा रही कुछ महिलाओं पर पड़ी। महिलाओं की वेशभूषा से स्पष्ट था कि वे आदिवासी हैं। उन तक पहुंचकर मैंने पूछा कि क्या पिछले 10 सालों में आपकी जिंदगी में कोई परिवर्तन हुआ है? गोंडी, भोजपुरी और हिंदी के मिले-जुले शब्दों में उन्होंने बताया कि हमारे गांव में पानी आ गया है। घर में पानी! उन्होंने 'हां' की मुद्रा में सिर हिलाया। मैंने चारों ओर नजर दौड़ाई। दूर-दूर तक बस रेत, कंटीले पेड़ और चमड़ी झुलसाती धूप। घर पूछा, तो उन्होंने दूर दिखती पहाड़ी की ओर इशारा कर दिया। इस इलाके में घर में नल तो दूर, पेयजल तक दुर्लभ होता था। उनसे अगला सवाल था कि आप किसे वोट देंगी? जवाब मिला- फूल। फूल, यानी कमल। मैंने पूछा, आपको मालूम है कि देश के प्रधानमंत्री कौन हैं? मेरे हाथ में मौजूद अखबार में छपी मोदी की तस्वीर की ओर उन्होंने इशारा कर दिया। मन में सवाल उभरा कि यहां तो अपना दल की उम्मीदवार कप-प्लेट के चिह्न पर चुनाव लड़ रही हैं। ये अबोध महिलाएं ईवीएम पर फूल ढूंढ़ेंगी, तो कैसे मिलेगा?

पूछने पर उन्होंने यह भी बताया कि अभी तक कोई उनसे वोट मांगने नहीं आया है। सुनता आ रहा था कि पार्टी कार्यकर्ता और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लोग इस बार उतने सक्रिय नहीं हैं, जितने पहले होते थे। कहीं ये महिलाएं ईवीएम से निराश होकर लौटने वाली तो नहीं? ऐसा ही हुआ। नतीजतन, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन, यानी एनडीए की प्रत्याशी रिंकी कोल सवा लाख से अधिक मतों से हार गईं। अति-

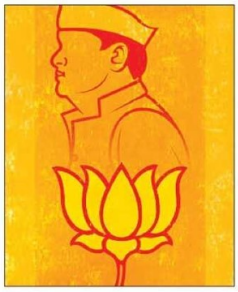

आत्मविश्वास और बिना हाथ-पांव मारे अपने नेता पर अंधा अवलंबन, मजबूत से मजबूत संगठन और शख्सियत को कमजोर कर सकता है। भारतीय जनता पार्टी इसका अपवाद साबित नहीं हुई।

अब एक और वाकया सुन लीजिए। मैं लोकसभा के एक प्रत्याशी से मिला। उनका पहला वाक्य था- भाई साहब, मुझे तो पिछला रिकॉर्ड तोड़ना है। मैंने पूछा, इस आत्मविश्वास की वजह? उन्होंने कहा कि मोदी जी का 'क्रेज' ही इतना है कि यदि आपको मेरी जगह खड़ा कर दिया जाए, तो आप चुनाव जीत जाएंगे। मैं हक्का-बक्का रह गया था। राजनीति में गफलत की गुंजाइशें नहीं होतीं। आशा और जन-अवधारणा के विपरीत आए नतीजों ने इन गफलतों को उतार फेंकने का अवसर भाजपा को प्रदान किया है। उसके पास सबक लेने का समय, साधन और सक्षम नेतृत्व है। पहले दल की दलदल बाहर से नहीं दिखती थी। अब जब बिखराव दिख रहा है, तो पार्टी को अपना लौह-कवच फिर से धारण करना होगा।

भगवा दल को अपने कार्यकर्ताओं के मनोभाव का भी मान रखना होगा। पिछले 10 वर्षों के दौरान कई नए लोग भाजपा के तंबू में आए। इनमें से बहुतों पर भ्रष्टाचार के दाग हैं। इसके बावजूद उन्हें महत्वपूर्ण पदों से नवाजा गया। इससे इन आरोपों को बल मिला कि केंद्रीय जांच एजेंसियों की कार्रवाई से बचने का एक ही तरीका है कि आप भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो जाएं। अन्य दलों से आए लोगों ने निस्संदेह भाजपा के विजय-रथ को गति दी, पर बाद में यह दांव फेल हो गया।

यहां विधानसभा की 13 सीटों पर हाल ही में हुए उप-चुनावों का स्मरण जरूरी है। भाजपा इनमें से महज दो जीत सकी। पाला बदलने वाले लगभग सभी लोग हार गए। अभी चार राज्यों के विधानसभा चुनावों के अतिरिक्त कई राज्यों में उप-चुनाव हैं। उस दौरान इस रीति-नीति की समीक्षा जरूरी है। कार्यकर्ताओं की उदासीनता की एक वजह यह भी है कि उन्हें लगता है, बाहर से आए हुए लोग हमारी हकमारी करते हैं। इसके साथ भाजपा को पार्टी का संदेश देने के तरीकों में भी सुधार करना होगा। संविधान को लेकर फैलाई गई चर्चाओं में भारतीय जनता पार्टी ऐसी उलझी कि उसे उम्मीद के मुताबिक नतीजे नहीं हासिल हुए। इसकी एक वजह यह भी है। बड़े नेताओं द्वारा बार-बार खंडन के बावजूद प्रभावी ढंग से इस नैरेटिव की काट नहीं हो सकी।

अंत में सबसे जरूरी बात। इसमें कोई दोराय नहीं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज भी देश के सबसे आकर्षक नेता हैं, जैसा कि मैंने पहले अनुरोध किया कि सोनभद्र जिले की मीडिया से दूर रहने वाली आदिवासी महिलाएं तक उन्हें पहचानती थीं और उनको वोट देना चाहती थीं। भाजपा के पास पिछले 10 सालों में हुए तमाम लोक-कल्याण के काम गिनाने को हैं। लोक-लुभावन नेता और ये कार्य इस लड़खड़ाहट को सम्हालने के लिए काफी हैं। बस पार्टी को निरर्थक बयानवीरों की बोलती बंद करने के साथ अपने संदेशों पर नई सान चढ़ानी होगी।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

मंगल ताई शाह
समाज सेविका

जिनको अपनों ने ठुकरा दिया उन्हें मंगल ताई ने अपना लिया

कुछ महिलाओं के साथ अस्पताल का रवैया बेहद अमानवीय था। कारण पता किया, तो मालूम हुआ कि वे एचआईवी संक्रमित हैं। मंगल बहुत दुखी हुईं, क्योंकि वे महिलाएं दोहरी मार झेल रही थीं- एक तरफ, अनकरीब मौत का खौफ था, तो दूसरी ओर, सामाजिक दुत्कार का दंश!

आखिर उनका कसूर क्या था? वे तो दुनिया के ऊंच-नीच और सिस्टम की लापरवाही से बिल्कुल अनजान थे। फिर उनके हिस्से में इतनी हिकारत क्यों आई? अपनों ने ही उन्हें ठुकरा दिया, एक जांच रिपोर्ट के आते ही खून के सारे रिश्ते उनके लिए बेमानी हो गए। मगर कुदरत का निजाम इस धरती पर किसी को बेआसरा नहीं छोड़ता। अपनी कुछ संतानों के दिल में वह इतनी करुणा अवश्य डाल देता है कि धरती के अनाथ, परित्यक्त मासूमों को स्नेह की छांव मिल जाए। मंगल ताई ईश्वर की एक ऐसी ही खास संतान हैं। जमाना उनको ताई (मराठी में बड़ी बहन) कहता है, पर वह 150 एचआईवी संक्रमित बच्चों की सच्ची आई (मां) हैं।

महाराष्ट्र के सोलापुर जिले में एक तालुका है बार्शी, मंगल ताई इसी तालुके के एक मध्यवर्गीय किसान परिवार में 72 साल पहले पैदा हुईं। यह वह दौर था, जब आजाद भारत का अपना संविधान लागू हुआ था और उसने मौलिक अधिकारों के जरिये एक झटके में औरत-मर्द के बीच की सदियों पुरानी दूरी पाट दी थी। इसके बाद स्त्रियों, खासकर मराठी महिलाओं में जागृति की एक नई चेतना आई। उस वक्त देश में साक्षरता दर 19 फीसदी के करीब थी, बल्कि महिलाओं के मामले में तो इसने दहाई का आंकड़ा भी पार नहीं किया था। मंगल की मां उन्हें ज्ञान हासिल करने के लिए खूब प्रोत्साहित करतीं। लिहाजा, किशोरावस्था तक पहुंचते-पहुंचते वह काफी कुछ पढ़ चुकी थीं, जिनमें विवेकानंद, मदर टेरेसा और बाबा आम्टे की सेवाओं से जुड़े लेखन भी शामिल थे।

इन मानव-दूतों की सेवाओं ने छोटी उम्र में ही मंगल को बहुत प्रभावित किया था। मगर सामाजिक दस्तूर के मुताबिक 16 साल की उम्र में ही उनका ब्याह कर दिया गया। वह पंढरपुर आ गईं। जिंदगी अचानक बदल गई थी। कुछ ही वर्षों में बेटी डिंपल भी गोद में आ गईं। गृहस्थी की जिम्मेदारियां निपटाने के बाद परिवार की दूसरी स्त्रियां पूजा-पाठ में व्यस्त हो जातीं, मगर मंगल का मन इसमें बहुत ज्यादा नहीं लगता था। वह किसी जरूरतमंद की मदद करने को लेकर ज्यादा उत्सुक रहतीं। चाह थी, तो राह भी मिली। घर से करीब ही एक सरकारी अस्पताल में दिव्यांगों की सेवा करने की अनुमति मिल गई और कुछ ही महीनों में मंगल उस अस्पताल में भर्ती असहाय गर्भवती महिलाओं को घर का खाना मुहैया कराने लगी थीं। इन लोगों की सेवा करके उन्हें एक अजीब किस्म का सुकून मिलता था। इसलिए जब डिंपल दस साल की हुईं, तो वह उन्हें भी अपने साथ ले जाने लगीं। मंगल ने महसूस किया कि कुछ गर्भवती महिलाओं के साथ अस्पताल का रवैया बेहद अपमानजनक, बल्कि अमानवीय होता है। कारण पता किया, तो मालूम हुआ कि वे एचआईवी संक्रमित हैं। मंगल को बहुत दुख हुआ। वे महिलाएं दोहरी मार झेल रही

थीं- एक तरफ, अनकरीब मौत का खौफ था, तो दूसरी ओर, सामाजिक दुत्कार का दंश।

मंगल ने उसी समय फैसला किया कि वह जिले की महिला यौनकर्मियों के बीच एचआईवी/एड्स को लेकर जागरूकता पैदा करेंगी, ताकि वे इसके संक्रमण से बच पाएं। साल 2001 की बात है। मंगल अपनी बेटी के साथ पंढरपुर के रेडलाइट एरिया में यौनकर्मियों को एचआईवी/एड्स के बारे में आगाह कर रही थीं, तभी किसी ने आकर बताया कि पड़ोस के गांव में डेढ़ और ढाई साल की दो बच्चियों को कोई गौशाला में छोड़ गया। मां-बेटी फौरन वहां पहुंचीं, तो पता चला कि इन बच्चियों के माता-पिता की एड्स से मौत हो गई है और कोई रक्त-संबंधी अब इनको अपने साथ नहीं रखना चाहता, क्योंकि उन्हें सामाजिक बदनामी के साथ-साथ संक्रमण का भी खतरा है।

मंगल ने गांव वालों से इन मासूमों की देखभाल करने की गुजारिश की, पर कोई तैयार नहीं हुआ। आखिरकार वह उन दोनों बच्चियों को अपने साथ ले आईं। उन्हें नहलाया, खाना खिलाया और फिर उनके लिए अनाथालय या केयर होम की तलाश में जुट गईं। काफी तलाश के बाद मंगल यह जानकर हैरान थीं कि एचआईवी संक्रमित बच्चों के लिए पूरे सूबे में कोई अनाथालय नहीं था। सामान्य अनाथालय उन्हें किसी कीमत पर अपने यहां रखने को तैयार न थे। तब मंगल ने ऐसे बच्चों के लिए खुद अनाथालय खोलने का फैसला किया। हालांकि, खुद उनके परिवार के लोग भी एचआईवी से जुड़ी वर्जनाओं के कारण थोड़ी दुविधा में थे, मगर मंगल के पति और बच्चों ने उनके फैसले का एहतराम किया और 2001 में उन दो अनाथ बच्चियों के साथ प्रभा-हीरा प्रतिष्ठान के तहत 'प्रोजेक्ट पालवी' की शुरुआत हुई।

मंगल ताई ने जब इन बच्चों के लिए तकली गांव में भवन बनाने का इरादा बनाया, तो गांव वालों ने विरोध किया। एक तरह से उनका जाति-बहिष्कार कर दिया गया। कई लोगों ने उन्हें यह तक समझाने की कोशिश की कि इन दोनों बच्चियों को वह पड़ोस के जंगल में छोड़ आएं, क्योंकि आज न कल इनकी नियति मौत ही है। पर मंगल ताई ने इस संक्रमण से जुड़े मिथकों को तोड़ा और गांव वालों के भीतर पैठी आशंकाओं पर फतह हासिल की। अंततः वे उनकी मदद के लिए आगे आए। सरकारी अस्पतालों से भी सहायता मिलने लगी।

सबसे अधिक एचआईवी संक्रमण वाले सूबे महाराष्ट्र में

आज उनके केयर होम में 150 से अधिक एचआईवी संक्रमित बच्चे रह रहे हैं। इनकी शिक्षा के लिए बाकायदा वहां स्कूल है। यहां उन्हें तरह-तरह का कौशल प्रशिक्षण भी दिया जाता है। मंगल ताई को कई पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है, मगर सच तो यह है कि वह खुद हमारे समाज के लिए एक पुरस्कार हैं!

पहली बार मंगल ताई ने ऐसे बदनसीब बच्चों के लिए गरिमामय जीवन जीने की व्यवस्था की। उनके इस करुण प्रयास ने कई लोगों को आर्थिक मदद के लिए प्रेरित किया। आज इस संस्थान में 150 से अधिक एचआईवी संक्रमित बच्चे रह रहे हैं। इनकी शिक्षा के लिए बाकायदा संस्थान में स्कूल है। यहां उन्हें तरह-तरह का कौशल प्रशिक्षण भी दिया जाता है। मंगल ताई को कई पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। मगर सच तो यह है कि वह खुद हमारे समाज के लिए एक पुरस्कार हैं!

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

आनंद बख्शी
विख्यात गीतकार

जिंदगी के सफर में गुजर जाते हैं जो...

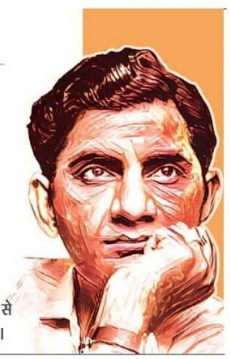

परिवार की खुशी के लिए फिर फौज में भर्ती होना पड़ा। मन ने मजबूर किया, तो एक दिन फौज छोड़ मुंबई पहुंच गए, पर फिर नाकामी हाथ लगी। निराशा के गर्त में ही युवा ने खुद को भटकने से बचाने के लिए अपना घोषणापत्र लिखा- मेरी जिंदगी का मकसद।

चूंकि जिंदगी हर कदम एक नई जंग है, तो जिंदगी इम्तिहान लेती है और लोग इम्तिहान में कामयाब होने की जद्दोजहद में जुटे रहते हैं। रावलपिंडी के आठवीं पास नौजवान के साथ भी ऐसा ही था, जिसकी जुबां उर्दू थी और फितरत फारसी। वह गायक बनना चाहते थे, पर तमाम रिश्तेदार उनके खिलाफ थे। पिता गीत गाने पर खफा हो जाते थे और अंग्रेजों के पुलिस अफसर दादाजी तो बेरहमी से पीट देते थे। वह किस्मत आजमाने लाहौर के फिल्म उद्योग गए, पर उल्टे पांव लौटना पड़ा। परिवार को खुश करने के लिए नौसेना में भर्ती हो गए, पर अंग्रेजों की नौसेना में विद्रोह हुआ, तो वह सेवा से निकाल दिए गए।

उसके तुरंत बाद देश बंटा, तो रावलपिंडी से दिल्ली आना पड़ा। परिवार की खुशी के लिए फिर फौज में भर्ती होना पड़ा। मन ने मजबूर किया, तो एक दिन फौज छोड़ मुंबई पहुंच गए, पर फिर नाकामी हाथ लगी। निराशा के गर्त में ही युवा ने खुद को भटकने से बचाने के लिए अपना घोषणापत्र लिखा- मेरी जिंदगी का मकसद। अक्सर ऐसा होता है कि लोग बस सोचते रह जाते हैं, जबकि सोच को कम से कम कागज पर साकार किया जा सकता है। हो सकता है, शब्दों में साकार हुआ सपना आगे चलकर सच हो जाए। इस बार फौजी ने अंग्रेजी में लिखा, 'चाहे कोई गरीब हो या अमीर, सबका अपनी जिंदगी में एक मकसद होना चाहिए।...मैं आनंद बख्शी आजाद ये एलान करता हूं कि... मेरी जिंदगी का मकसद है कलाकार बनना और इसे पूरा करने के लिए मैं फिल्म, रेडियो या थियेटर में जाऊंगा। मैं गायक, संगीतकार, निर्देशक, जो मुमकिन होगा, बनूंगा।'

कमाल देखिए, जब यह घोषणा कागज पर उतर आई, तब किस्मत भी करवट बदलने की तैयारी में लग गई। वह फौज छोड़ फिर पहुंच गए मुंबई। स्टेशन पर उतरते ही बुरे दिन याद आने लगे, *मैं शायर बदनाम, मैं चला।/ महफिल से नाकाम, मैं चला।* पर इस बार कुछ भी हो जाए, नाकाम नहीं लौटना था, तो रेल से उतरते ही आनंद बख्शी ने एक प्रार्थना को शब्दों में पिरोया, *मेरे भगवान, बंसी वाले/ तूने मुझे जज्बात दिए,/ संगीत का प्रेम मेरे जिस्म के कोने-कोने में भर दिया,/ मैं तेरा एहसानमंद हूं।/ और अब मैं तेरे सामने झुककर, अपने उन हसीन ख्वाबों की ताबीर मांगता हूं, जो तूने मेरी मासूम आंखों में बसाए।*

तमाम दुश्वारियों के बावजूद उन्होंने खुद को गीतों में लगाए रखा। उन्होंने तभी लिखा, *दुनिया में रहना है, तो काम कर प्यारे, खेल कोई नया सुब्हो-शाम कर प्यारे।* खैर, संघर्ष का कहीं अंत नहीं दिख रहा था, किसी बड़े संगीतकार से मिलना मुश्किल था। फिर वही राग छिड़ने लगा, *यहां मैं अजनबी हूं...।* जेब खाली हो चली, घर से पैसे आने बंद हो गए, फौज छोड़ने के फैसले पर हर कोई हमलावर हो गया। बेघर शायर के लिए एक तरह से रेलवे स्टेशन ही ठिकाना हो गया। लगता था कि किसी दिन मजबूर किसी गाड़ी से लौटना पड़ेगा। हर बार दिमाग में गूंजने लगता था, *गाड़ी बुला रही है, सीटी बजा रही है, चलना ही जिंदगी है, चलती ही जा रही है।* जिंदगी इम्तिहान में फेल करने ही वाली थी कि मरीन लाइन्स रेलवे स्टेशन पर एक भले मानुष टीसी चित्तरमल ने उन्हें पकड़ लिया। टिकट था नहीं, पर शायरी काम आ गई। कुछ शेर सुना दिए, तो दोस्ती हो गई। मुंबई में अकेले रहने वाले चित्तरमल अपने नए शायर दोस्त को घर ले आए। रोज दो रुपये भी देने लगे कि दोस्त अपना संघर्ष जारी रख सके। दोस्ती बहुत काम आई, तो दोस्ती पर खूब गीत लिखे गए, *दीये जलते हैं, फूल खिलते हैं, बड़ी मुश्किल से मगर दुनिया में दोस्त मिलते हैं।* उन्होंने ही लिखा, *ये दोस्ती हम नहीं छोड़ेंगे* और *सागर किनारे दिल ये पुकारे, तू जो नहीं, तो मेरा कोई नहीं है।*

आनंद बख्शी की जिंदगी में कदम-कदम पर निर्णायक मोड़ थे। घोषणापत्र को साकार होने लगभग पंद्रह साल लगे, 1965 आते-आते गली-गली में उनके गीत बज उठे, *परदेशियों से न अंखिया मिलाना* और *ना ना करते प्यार तुम्हीं से कर बैठे।* वह खुद को शायर या विद्वान नहीं मानते थे, वह आम आदमी के शब्दों में लिखने लगे और कामयाबी कदम चूमने लगी। बहरहाल, उन्होंने अपनी घोषणा वाले कागज पर ही नीचे, 38 साल बाद लिखा, *मकसद पूरा हुआ, मैं एक कामयाब गीतकार बन गया। मैंने कमा लिया नाम, दाम, शोहरत, मकान, कारें। ...गलतियों के लिए माफ करना... ऊपर वाले मेरी मदद करना।*

21 जुलाई को जन्मे आनंद बख्शी (1930-2002) कहते थे कि जब मेरे पास कोई रास्ता नहीं था, तब चित्तरमल जी को बंशी वाले ने ही भेजा था। लगाव देखिए, उनके बटुए में बंशी वाले की फोटो हमेशा रहती थी। उन्होंने ही यह गीत लिखा है, *बड़ा नटखट है रे, किशन कन्हैया, क्या करे यशोदा मैया।*

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

साहित्य और दो सहृदय चोर

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

घोर कलयुग में भी सतयुग का अनुभव हो रहा है! लगता है, साहित्य फिर अपने मूल स्वभाव में लौट रहा है और अपनी स्वाभाविक पवित्रता का बखान कर रहा है। साहित्य के पावित्र्य की खबर कोई बड़ा साहित्याचार्य या लेखक नहीं दे रहा, बल्कि पाठक से बना एक लेखक और एक पेशेवर चोर दे रहा है। इन दो खबरों ने एक बार फिर साहित्य को 'सच्चा साहित्य' बना दिया है। इस बेदिली के दौर में भी साहित्य हमारे दिलों पर किस तरह राज करता है, यह एक बार फिर सिद्ध हो रहा है। ऐसी दो ऐतिहासिक खबरें पिछले दिनों ही आई हैं, जिनको पढ़कर साहित्य व साहित्यकारों की अहर्निश खिंचाई करने वाले इस लेखक का 'दुष्ट मन' भी आह्लादित हुआ है।

एक खबर के अनुसार, कई बरस पहले केरल का एक किशोर विश्व प्रसिद्ध लेखिका की बेहद पॉप्युलर किताब को एक बुकस्टोर से चुराकर ले गया। तब शायद उसके पास किताब खरीदने के पैसे नहीं थे, पर 17 साल बाद उसी बुकस्टोर को वह किताब लौटाने आया और इस बात का जिक्र उसने अपनी एक किताब में भी किया। जब यह खबर उस प्रसिद्ध लेखिका तक पहुंची, तो उन्होंने 'एक्स' पर लिखा- 'सबसे प्यारी चीज!'

इसी तरह, एक अन्य खबर के अनुसार, मराठी के नामी (अब स्वर्गीय) कवि के घर में एक चोर ने तब चोरी की, जब कवि की बेटी और दामाद बाहर गए हुए थे। वह वहां से एक एलईडी टीवी, कुछ मसाले, कुछ खाद्य तेल आदि चुराकर ले गया। मगर जब उसे मालूम हुआ कि वह उन नामी कवि का घर था, तो वह मराठी में अपने हाथ से लिखा कागज चिपका गया कि अगर उसे मालूम होता कि यह उनका घर है, तो वह ऐसा कभी न करता! एक साहित्यकार को इससे अधिक और क्या चाहिए? वह कीर्ति पर ही जीता है और किसी की कीर्ति ऐसी हो, तो क्या कहने!

ये दोनों कहानियां बताती हैं कि आप चाहे लाख लिख और छप लें, लाख 'पॉजिटिव रिव्यू' करा लें व इनाम झटक लें, अगर आपका लिखा जनता के दिल को नहीं छूता, तो सब बेकार है। जिसका लिखा मर्म को छूता है, वही दिलों पर राज करता है। ये दोनों घटनाएं मनुष्य की साहित्य के प्रति ईमानदारी की विरल कहानियां हैं। ये बताती हैं कि अच्छा साहित्य हमें कुछ दे या न दे, हमारे मन को ईमानदारी सिखाता है; अच्छा साहित्य और साहित्यकार, साहित्य के प्रति हमारे मन में सम्मान व विश्वास का भाव जगाता है। इस तरह वह हमें कुछ अधिक सभ्य बनाता है।

इन कहानियों में साहित्य की खुशबू है, जो बहुत दिनों बाद फैली है। साहित्य की दुनिया है ही ऐसी लुभावनी, जिसमें सभी रहना चाहते हैं। सभी साहित्यकार बनना चाहते हैं और साहित्यकार कहलाना चाहते हैं। कारण? सच्चा साहित्यकार सबसे अधिक अहिंसक प्राणी होता है। वह हमेशा बनाता है, बिगाड़ता नहीं। उसकी चित्त-वृत्ति सृजनात्मक होती है, विध्वंसात्मक नहीं।

मगर जब से साहित्य में विचारधारा व सत्ता की राजनीति का दबदबा बढ़ा है और जब से राजनीति में नफरत व बदलेखोरी प्रमुख हुई हैं, तब से साहित्य भी विचारधारा व सत्तात्मक राजनीति की 'पटा-बनैती' बन गया है। उसका रस सूख गया है और उससे मिलने वाला आनंद बिला गया है। आज का अधिकांश साहित्य भी सत्ता की पटा-बनैती ही है। जिस तरह आज की राजनीति बीमार है, उसी तरह से साहित्य भी बीमार है। इसीलिए किसी कविता की एक लाइन किसी के कंठ में नहीं रहती। कंठ में नहीं, तो आनंद नहीं। आनंद नहीं, तो कविता नहीं।

सच! धन्य है वह 'पाठक', जिसने किताब चुराई और फिर अपनी किताब में 'चोरी' के बारे में लिखा; और धन्य है वह लेखिका, जिसने इस चोरी को भी 'सबसे प्यारी चीज' कहा। वह चोर भी प्रशंसा का पात्र है, जिसने यह जानने के बाद कि उसने एक कवि के घर चोरी की है, पश्चाताप महसूस किया और यह नोट लिखकर गया कि अगर उसे मालूम होता कि वह इतने बड़े कवि के घर चोरी कर रहा है, तो वहां कभी चोरी न करता!

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

बहस करने की फितरत तो घुट्टी में मिली थी हमें

'आपका बंटी' और 'महाभोज' जैसे बहुचर्चित उपन्यासों की लेखिका मन्नू भंडारी का जीवन उनके संघर्षों के दौर का साक्षी रहा है। यह सफर मंदसौर के भानपुरा गांव की महेंद्र कुमारी के मन्नू भंडारी बनने का है। इन सबके बीच उनकी 'एक इंच मुस्कान' भी बनी रही। इन संघर्षों के साथ अपने लेखन को रजनीगंधा-सा महकानेवाली मशहूर कथाकार मन्नू भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' से संपादित अंश...

पोर्ट्रेट : यशवंत नामदेव

चर्चित आत्मकथा-9

मन्नू भंडारी

जन्म : 03 अप्रैल, 1931, निधन : 15 नवंबर, 2021

जन्मी तो मध्य प्रदेश के भानपुरा गांव में थी, लेकिन मेरी यादों का सिलसिला शुरू होता है, अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के उस दो मंजिला मकान से, जिसकी ऊपरी मंजिल में पिता का साम्राज्य था। वहां निहायत अव्यवस्थित ढंग से फैली-बिखरी पुस्तकों-पत्रिकाओं और अखबारों के बीच वे या तो कुछ पढ़ते रहते थे या फिर 'डिक्टेशन' देते रहते थे। नीचे हम सब भाई-बहिन साथ रहते थे। हमारी बेपढ़ी-लिखी व्यक्तित्वहीन मां, सवेरे से शाम तक हम सबकी इच्छाओं और पिताजी की आज्ञाओं का पालन करने के लिए सदैव तत्पर रहती।

अजमेर से पहले पिताजी इंदौर में थे, जहां उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था। कांग्रेस के साथ-साथ वे समाज-सुधार के कामों से भी जुड़े हुए थे। शिक्षा का वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे, बल्कि उन दिनों आठ-आठ, दस-दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया भी है, जिनमें से कई तो बाद में ऊंचे-ऊंचे ओहदों पर पहुंचे। ये उनकी खुशहाली के दिन थे और उन दिनों उनकी दरियादिली के चर्चे भी कम नहीं थे। एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी।

पर यह सब तो मैंने केवल सुना। देखा, तब तो इन गुणों के भग्नावशेषों को ढोते पिता थे। एक बहुत बड़े आर्थिक झटके के कारण वे इंदौर से अजमेर आ गए थे, जहां उन्होंने अपने अकेले के बलबूते और हौसले से अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश (विषयवार) के अधूरे काम को आगे बढ़ाना शुरू किया। यह अपनी तरह का पहला और अकेला शब्दकोश था। इसने उन्हें यश और प्रतिष्ठा तो बहुत दी, पर उतना अर्थ नहीं, जो उन्हें संपन्नता की पहले जैसी स्थिति में पहुंचा सकता। वैसे पांच बच्चों के साथ परिवार का पालन-पोषण और चार की तो शादियां भी कीं, जो भी, जैसी भी, फिर मेहमाननवाजी का तो पुराना स्तर ही बदस्तूर चालू था। लेकिन दोनों हाथों से खुले हाथ खर्च करनेवाले व्यक्ति के लिए हाथ खींचकर चलने की यातना... और शायद निरंतर गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया था। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएं। नवाबी आदतें, अधूरी महत्वाकांक्षाएं, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिये पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा मां को कंपाती-थरथराती रहती थी। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे, जिन्होंने आंख मूंदकर सबका विश्वास करनेवाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आ जाते।

यों हम लोग जैन हैं पर पिताजी आर्य समाजियों के बीच दीक्षित हुए थे, इसलिए हम लोगों ने कभी जैनियों जैसे व्रत-उपवास नहीं किए, यहां तक कि संवत्सरी के दिन भी नहीं। कभी हम लोग मंदिर या मुनि-आचार्यों के व्याख्यान सुनने उपाश्रय नहीं गए। साल में एक-दो बार संग-साथ मिलने पर मां जरूर चली जाती थीं। और तो और, एक बार पैदल यात्रा करते हुए रात काटने के लिए पांच-सात साध्वियों का पड़ाव हमारे यहां पड़ा। मां बेहद उल्लसित। कोई साठ-सत्तर भक्तों से सारा आंगन भर गया। बस, पिताजी ऊपर से नहीं उतरे और मैं अपने कमरे से नहीं निकली। बार-बार के आग्रह पर मैं ही पिताजी को बुलाने के लिए ऊपर गई पर उनका दोटूक जवाब, 'अरे, उन बेपढ़ी-लिखी साध्वियों के पास जाकर क्या करूंगा मैं।' वे नहीं आए तो तबीयत की आड़ लेकर मुझे ही उनके 'नकार के नुकीले कोनों' को मुलायम बनाना पड़ा। जैन दर्शन पर उनकी अच्छी पकड़ थी और उसका भरपूर बोध भी था उन्हें। मैं जरूर जाकर बैठी, पर अपनी नजर में उनके आडंबरों पर इतनी बहस की कि वहां एकत्रित लोग भौंचक होकर देखते ही रह गए।

मारवाड़ी परिवार... लड़की की जात (नीची नजर और बंद जबान का ठप्पा जिस पर जन्म के साथ ही चस्पां कर दिया जाता था) और ये तेवर... ये हौसला! मर्दों के बीच बैठकर साध्वियों से बहस! उन्हें क्या पता कि बहस करने की फितरत तो घुट्टी में मिली थी हमें।

आर्य समाजियों वाले हवन-यज्ञ और मंत्रोच्चार भी कभी नहीं हुए हमारे यहां। पिताजी ने उनका समाज-सुधारवाला पक्ष ही अपनाया था। आज से करीब अड़सठ साल पहले बिना घूंघट-पर्दे के की गई बहिन की शादी काफी क्रांतिकारी कदम था। लड़कियों को लड़कों की तरह पढ़ाना... बाल-विवाह और अन्य सामाजिक कुरीतियों का विरोध... आडंबरों और ढकोसलों की छुट्टी, बचपन से यही सब देखा हमने। याद नहीं घर में कोई धार्मिक अनुष्ठान देखा हो कभी। जैनी होने के बावजूद पड़ोसियों की देखादेखी हम लोग जन्माष्टमी की झांकी जरूर सजाते थे, पर उसमें धर्म से ज्यादा सजाने का शौक प्रमुख रहता था। त्योहारों में केवल दीवाली मनाते थे। हां, उस दिन जरूर पूजा की थाली सजाई जाती थी और पिताजी मां के बताए-लक्ष्मी-गणेश की मूर्तियों पर रोली, चावल, मिठाई, पान, फूल आदि डालकर हाथ जोड़ते और पांच मिनट में पूजा से निवृत्त हो लेते। उनका असली त्योहार तो उस दिन होता, जिस दिन उनके कोश का कोई नया भाग छपकर आता... या फिर कोई बहुत बड़ा 'ऑर्डर' आता। उस दिन वे उतने ही कोमल, वत्सल और दरियादिल हो जाते थे। पिता, वात्सल्य से भरे पिता। एक ही आदमी के कितने-कितने रूप होते हैं, यह मैंने तभी जाना था।

यह पितृ-गाथा मैं इसलिए नहीं गा रही कि मुझे उनका गौरव-गान करना है, बल्कि मैं तो यह देखना चाहती हूं कि उनके व्यक्तित्व की कौन-सी खूबी और खामियां मेरे व्यक्तित्व के ताने-बाने में गुंथी हुई हैं या कि अनजाने-अनचाहे किए उनके व्यवहार ने मेरे भीतर किन ग्रंथियों को जन्म दे दिया। मैं काली हूं, बचपन में दुबली और मरियल भी थी। गोरा रंग पिताजी की कमजोरी थी, सो बचपन में मुझसे दो साल बड़ी, खूब गोरी, स्वस्थ और हंसमुख बहिन सुशीला से हर बात में तुलना और फिर उसकी प्रशंसा ने ही क्या मेरे भीतर ऐसे गहरे हीनभाव की ग्रंथि पैदा नहीं कर दी कि नाम, सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावजूद आज तक मैं उससे उबर नहीं पाई? आज भी परिचय करवाते समय जब कोई तरह-तरह के विशेषण लगाकर मेरी लेखकीय उपलब्धियों का जिक्र करने लगता है तो मैं संकोच से सिमट ही नहीं जाती, बल्कि गड़ने-गड़ने को हो आती हूं। शायद अचेतन की किसी पर्त के नीचे दबी इसी हीनभावना के चलते ही मैं अपनी किसी भी उपलब्धि पर भरोसा नहीं कर पाती... सब कुछ मुझे तुक्का ही लगता है। पिताजी के जिस शक्की स्वभाव पर मैं कभी भन्ना-भन्ना जाती थी, आज एकाएक अपने खंडित विश्वासों की व्यथा के नीचे मुझे उनके शक्की स्वभाव की झलक ही दिखाई देती है... बहुत 'अपनों' के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उपजा शक। होश संभालने के बाद से ही जिन पिताजी से किसी-न-किसी बात पर हमेशा मेरी टक्कर चलती रही, वे तो न जाने कितने रूपों में मुझमें हैं...

(साभार : 'एक कहानी यह भी', राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली से संपादित अंश)

द्वि-राष्ट्र सिद्धांत को जिन्ना ने अमलीजामा पहनाया

मुहम्मद अली जिन्ना भारत विभाजन के संदर्भ में अपनी भूमिका के लिए निंदित और प्रशंसित दोनों हैं। भारतीय राष्ट्रवादी से मुस्लिम विचारों के हिमायती बनने तथा मुस्लिम राष्ट्रवादी से अंततः पाकिस्तान के राष्ट्राध्यक्ष बनने की जिन्ना की पूरी यात्रा को पेश करती है, पुस्तक 'जिन्ना : उनकी सफलताएं, विफलताएं और इतिहास में भूमिका' प्रस्तुत है इस पुस्तक से एक संपादित अंश

पुस्तक अंश

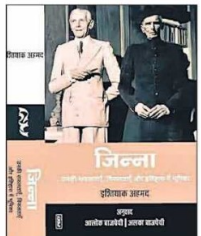

जिन्ना
(उनकी सफलताएं, विफलताएं और इतिहास में भूमिका)
लेखक : इश्तियाक अहमद
अनुवाद : आलोक बाजपेयी, अलका बाजपेयी
प्रकाशक : सेतु प्रकाशन, नोएडा
मूल्य : 700 रुपये

राजनीति को जुआ और शतरंज के खेल के रूप में मानने वाले जिन्ना ने अब भारतीय मुस्लिम राष्ट्र को उन क्षेत्रों में आत्मनिर्णय का अधिकार देने के लिए, जहां वे बहुमत में थे, भारत के विभाजन के औचित्य के रूप में ध्रुवीकरण वाले द्वि-राष्ट्र सिद्धांत और मुस्लिम राष्ट्रवाद को लांच करके अपनी चुनौती बढ़ा दी। 22 मार्च, 1940 के अपने अध्यक्षीय भाषण में जिन्ना ने हिंदुओं और मुसलमानों को विभाजित और अलग-थलग करने वाली सभी चीजों को रेखांकित किया, यह चेतावनी देते हुए कि उन्हें एक राज्य में एक साथ रहने का कोई भी प्रयास बर्बाद कर सकता है और गृहयुद्ध का विस्फोट हो सकता है। अगले दिन मुस्लिम राज्यों के निर्माण की मांग वाला लाहौर प्रस्ताव पेश और पारित किया गया।

जिन्ना ने अवसर का लाभ उठाया

द्वि-राष्ट्र सिद्धांत स्वयं कम-से-कम उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से अस्तित्व में था और बीसवीं शताब्दी के दौरान इसे प्रभावशाली हिंदुओं और मुसलमानों द्वारा प्रस्तुत किया गया था। अल्लामा इकबाल और चौधरी रहमत अली पहले से ही उत्तर-पश्चिमी भारत में एक मुस्लिम राज्य के बारे में बात कर रहे थे और यह कल्पना की जा सकती है कि ब्रिटिश खुफिया विभाग को ऐसी सभी योजनाएं दिलचस्प लग रही थीं लेकिन जिस व्यक्ति ने सही समय और सही अवसर पर इसका लाभ उठाया, वह मोहम्मद अली जिन्ना थे।

राष्ट्रवाद के अलग-अलग रूप

कांग्रेस का भारतीय राष्ट्रवाद और मुस्लिम लीग का मुस्लिम राष्ट्रवाद दोनों सामाजिक निर्माण थे। समाज के स्तर पर चीजें कहीं अधिक जटिल और उलझी हुई थीं। हिंदू जाति व्यवस्था हिंदुओं के बीच ऊर्ध्वाधर एकजुटता के रास्ते में खड़ी थी; जबकि मुसलमानों के बीच समुदाय की भावना मजबूत थी, वर्ग-संप्रदाय और उपसंप्रदायों से मिश्रित जाति की मुस्लिम भिन्नता मुसलमानों के बीच भी मौजूद थी। इसलिए, न तो कोई भारतीय राष्ट्र और न ही कोई मुस्लिम राष्ट्र अविवादित या चुनौती रहित सामाजिक संरचना थी। हालांकि, परस्पर विरोधी राष्ट्रवादों का समाधान अंग्रेजों पर निर्भर था। अंग्रेजों की भारत को आजादी देने की कोई योजना नहीं थी, लेकिन चल रहे विश्वयुद्ध के बीच भारतीयों को घोषणाओं से संतुष्ट करना पड़ रहा था, जिसमें सुझाव दिया गया था कि एक प्रभुत्व के रूप में कट्टरपंथी स्वशासन ब्रिटिश नीति का उद्देश्य था और युद्ध के बाद इसका सम्मान किया जाएगा।

इस बात पर ज्यादा जोर देने की जरूरत नहीं है कि 22 मार्च, 1940 के बाद से जिन्ना ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रति अपने अडिग, स्पष्ट रूप से सांप्रदायिक दृष्टिकोण में एक बार भी हिचकिचाहट नहीं दिखाई। गांधी को एक हठधर्मी हिंदू के रूप में चित्रित किया। यद्यपि गांधी ने अपने मतभेदों के समाधान के लिए जिन्ना को कई प्रस्ताव दिए थे।...

पढ़िएगा जरूर

झड़ते हुए स्वप्न फूलों की खुशबू से तर कविताएं

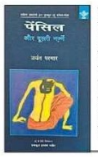

पुस्तक : पेंसिल और दूसरी नज्में (उर्दू कविता-संग्रह)
लेखक : जयंत परमार
उर्दू से हिंदी लिप्यंतरण : इश्राकुल इस्लाम माहिर
प्रकाशक : साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
मूल्य : 190 रुपये

कभी किसी लेखक से एक प्रकाशक ने उनकी किताब छापने के लिए मांगी। लेखक ने पूछा, 'कैसे छापेंगे?' इस पर प्रकाशक का जवाब था, 'दिल से छापेंगे।' यह दिल बड़ी अजीब शै है। यह जो न करवाए, वो कम है।

कुछ ऐसे ही जज्बे के साथ वरिष्ठ कवि जयंत परमार अपने कविता-संग्रह 'पेंसिल और दूसरी नज्में' में नजर आते हैं। संग्रह का शीर्षक भले ही 'पेंसिल...' हो लेकिन ये लिखी दिल से गई हैं। साहित्य अकादेमी पुरस्कार से पुरस्कृत यह उनके उर्दू कविता-संग्रह का हिंदी अनुवाद है। संग्रह में नब्बे से ज्यादा कविताए हैं। ये सभी कविताएं अलग-अलग रंगों और मिजाज की हैं।

एक छोटी-सी कविता है– *'फूल की पत्ती-पत्ती पर/अपनी उंगलियों/लिखता हूं मैं तेरा नाम!/फूल तो झड़ जाता है/लेकिन तेरा नाम/खुशबू बनकर/फैल रहा है चारों ओर!'* –('तेरा नाम') अपने अर्थ में विस्तार लिए यह एक गहरी रोमानी कविता है। इसी कड़ी में 'एक गली मुड़ती है वहां से', 'कौन आया मेरे ख्वाबां विच' और 'कौन उसे रो लेता था' जैसी उम्दा गजलें हैं। सिर्फ रोमानी ही नहीं, जिंदगी के हर मिजाज की कविताएं इस संग्रह में हैं। इनमें 'ब्लैक बोर्ड', 'मीराजी की तस्वीर', 'मां', 'जूते', 'हजारों हाथ', 'मक्की का खेत और कव्वे', 'नरक-कुंड की बास', 'कागज' और 'पेंसिल' जैसी कविताएं अपने कहन में सादगी लिए अपने आसपास के परिवेश की कविताएं हैं, जो अच्छी रचनाएं पढ़ने का सुख देती हैं।

कॉलेज के मस्तीभरे दिन और संघर्ष की कहानी

पुस्तक : आरोही (उपन्यास)
लेखक : मुकुल कुमार
प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य : 300 रुपये

स्कूल की अनुशासित जिंदगी से निकलकर जैसे ही विद्यार्थी कॉलेज के उन्मुक्त वातावरण में पहुंचते हैं, मानो उनकी आजादी को पंख मिल जाते हैं। उनके लिए यह एक नई दुनिया होती है। न स्कूल वाला ड्रेस कोड और न ही टीचरों की बेवजह की टोका-टोकी। उम्र के इस नए पायदान पर उन्हें जैसे पूरी दुनिया ही नई-सी लगने लगती है। पढ़ाई से ज्यादा मौज-मस्ती वाला भाव और नए-नए दोस्त बनाने की उत्सुकता और सब कुछ अपनी मुट्ठी में कर लेने की उमंग एक अलग ही कल्पना-लोक में ले जाती है।

लेकिन इस सबके बीच जीवन में कुछ कर दिखाने, कुछ बन जाने के सपने भी आंखों में जगह बनाने लगते हैं। कोई आईएएस बनना चाहता है, तो कोई नेता, तो कोई कामयाब बिजनेस मैन यानी जितनी आंखें, उतने सपने। इन्हीं सपनों की एक उड़ान का नाम है–'आरोही।' यह आईएएस अधिकारी और कवि-कथाकार मुकुल कुमार के अंग्रेजी उपन्यास 'एज ब्वॉयज बिकम मैन' का हिंदी अनुवाद है। अनुवाद स्वयं लेखक ने किया है। उपन्यास में दिल्ली विश्वविद्यालय के एक कॉलेज में पढ़ने वाले मिहिर की कहानी है, जो आईएएस बनने का सपना देखता है और उसमें कामयाब भी होता है। बड़ी बात यह है कि वह लेखक भी है और कभी-कभी उसके नौकरशाह और लेखकीय रूप में द्वंद्व भी होता है। लेखक ने कॉलेज के मस्तीभरे दिनों के साथ-साथ सिविल सेवा की तैयारी कर रहे युवाओं के रोजमर्रा के संघर्ष को अपने दोस्तों के माध्यम से पूरी विश्वसनीयता के साथ उकेरा है। इसकी वजह है कि यह लेखक की अपनी कहानी है।

अरुण कुमार जैमिनि

रोजनामचा

साप्ताहिक भविष्यफल

(21 जुलाई से 27 जुलाई 2024)

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष (21 मार्च-20 अप्रैल)
संयत रहें। व्यर्थ के क्रोध व वाद-विवाद से बचें। किसी कारोबारी मित्र से भेंट हो सकती है। कारोबार में सुधार होगा। मित्र का सहयोग भी मिल सकता है। यात्रा से लाभ के अवसर मिल सकते हैं।

वृष (21 अप्रैल-20 मई)
मन परेशान हो सकता है। संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। माता की सेहत का ध्यान रखें। भागदौड़ अधिक रहेगी। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में वृद्धि हो सकती है।

मिथुन (21 मई-21 जून)
मन प्रसन्न रहेगा, परंतु बातचीत में संतुलित रहें। व्यर्थ के लड़ाई-झगड़े से बचें। सेहत का ध्यान रखें। कारोबार में वृद्धि होगी। कारोबार के लिए किसी दूसरे स्थान पर भी जा सकते हैं।

कर्क (22 जून-23 जुलाई)
आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन परेशान रहेगा। माता का सान्निध्य मिलेगा। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। शैक्षिक कार्यों में सफल रहेंगे। वाणी के प्रभाव में वृद्धि होगी।

सिंह (24 जुलाई-22 अगस्त)
आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन प्रसन्न तो रहेगा, फिर भी धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। कारोबार में वृद्धि होगी। परिश्रम भी अधिक रहेगा। लाभ में वृद्धि होगी।

कन्या (23 अगस्त-22 सितंबर)
मन अशांत हो सकता है। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। धर्म के प्रति श्रद्धा भाव रहेगा। पिता की सेहत का ध्यान रखें। लाभ के अवसर मिलेंगे।

तुला (23 सितंबर-23 अक्तूबर)
मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। भागदौड़ अधिक रहेगी। परिवार का साथ मिलेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ के अवसर मिलेंगे।

वृश्चिक (24 अक्तूबर-21 नवंबर)
वाणी में मधुरता रहेगी। आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। पाठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। नौकरी में अफसरों से सद्भाव बनाकर रखें।

धनु (22 नवंबर-21 दिसंबर)
मन प्रसन्न तो रहेगा, परंतु आत्मविश्वास में कमी हो सकती है। बातचीत में संतुलन बनाए रखें। कारोबार में सुधार होगा। किसी नए कारोबार की शुरुआत हो सकती है।

मकर (22 दिसंबर-19 जनवरी)
मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जाने के योग बन रहे हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें।

कुंभ (20 जनवरी-18 फरवरी)
मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भी भरपूर रहेगा। भवन सुख में वृद्धि होगी। किसी मित्र से आर्थिक सहयोग मिल सकता है। घर में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। लाभ के अवसर मिलेंगे।

मीन (19 फरवरी-20 मार्च)
मन अशांत रहेगा। आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। कारोबार में बदलाव के योग बन रहे हैं। पिता का साथ मिलेगा। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा।

वर्ग पहेली : 7670

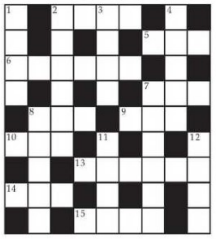

बाएं से दाएं

2. अलग होना; खिसकना; दूर होना; स्थगित होना (4)
5. बसंत; यौवन विकास; शोभा; प्रफुल्लता (3)
6. उलटी लाने वाला; वमन का कारक (3,3)
7. भेंट; मुलाकात; भिड़ंत; मुकाबला; मुठभेड़; लड़ाई (3)
8. घिसना; धीरे-धीरे रगड़ना; मसलना; मालिश करना (3)
9. होंठ; नीचे का; धरती और आकाश के बीच का स्थान (3)
10. समान होने का भाव; तुल्यता; समकक्षता (3)
13. दूसरे का धन हजम करना; हिसाब-किताब में गड़बड़ करना; खयानत करना; घपला करना (3,3)
14. उज्ज्वल; निर्मल; विशुद्ध; स्वच्छ; बेदाग (3)
15. ज्ञात; प्रचलित; देखा-भाला; प्रसिद्ध (2,2)

ऊपर से नीचे

1. मनुष्यत्व; समस्त मानव समाज (4)
2. सहिष्णुता; संतोष; सहनशील होने का भाव (6)
3. परिश्रम; मेहनत; विभिन्न शारीरिक क्रियाएं; व्यायाम (4)
4. महायुद्ध; बड़ी लड़ाई; विश्वयुद्ध (5)
7. अभ्यास करना; काम सिद्ध करना; उपासना करना (3,3)
8. ममता से भरी (5)
11. दबाने के लिए प्रवृत्त करना; दबाने का काम करवाना (4)
12. अन्न-जल; खाना-पीना (2,2)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली 7669 का उत्तर

1 च	प्या	2 च	प्या	छा	3 न	डा	4 ल	ना
ट	■	प	■	■	ग	■	च	■
5 क	रा	रा	प	6 न	■	7 चू	क	ना
र	■	सी	■	का	■	■	दा	■
8 ना	9 का	■	10 च	रा	ना	■	11 र	12 से
■	ला	■	■	त्म	■	13 कि	■	या
14 ल	बा	दा	■	15 के	ह	र	डा	ना
■	जा	■	16 सू	■	■	मि	■	हो
17 पे	र	द	बा	क	र	च	ल	ना

सुडोकू : 7654

* मध्यम

7	8		1					
9					6		5	
		1	9	4				
1							6	
		2		7		1		
	5							8
				1	3	6		
	4		6					5
					8		7	4

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। तर्क से इसे हल कर सकते हैं। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

हल : सुडोकू नं.7653

1	2	6	9	8	7	3	4	5
9	5	3	6	2	4	1	7	8
4	7	8	1	5	3	9	2	6
6	9	7	8	3	5	4	1	2
5	1	4	2	6	9	7	8	3
8	3	2	7	4	1	6	5	9
2	4	1	5	9	6	8	3	7
3	8	9	4	7	2	5	6	1
7	6	5	3	1	8	2	9	4

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

21 जुलाई, रविवार, 30 आषाढ़ (सौर) शक संवत् 1946, 06 श्रावण मास प्रविष्टे (पंजाब पंचांग) 2081, 14 मुहर्रम सन् 1446, आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा तिथि (विक्रमी संवत्) अपराह्न 03.47 तक। श्रवण नक्षत्र, विष्कुंभ योग रात्रि 09.11 मिनट तक पश्चात प्रीति योग, बव करण। चंद्रमा धनु राशि में प्रातः 07.27 मिनट तक उपरांत मकर राशि में।

सूर्य दक्षिणायन। सूर्य उत्तर गोल। वर्षा ऋतु। सायं 04.30 मिनट से सायं 06 बजे तक राहुकालम्। आषाढ़ी पूर्णिमा। गुरु पूर्णिमा। व्यास पूजा।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

कृपया यह बताएं कि नकारात्मक चीजों को हटाने के लिए वास्तु के अनुसार क्या उपाय करें? –पूजा, उज्जैन

नकारात्मक चीजों को हटाने के लिए आप निम्न कार्य करें–

- घर के मंदिर को हमेशा साफ रखें वरना वहां देवताओं का वास नहीं होता।
- घर के पंखों को साफ करके रखें वरना स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो सकती है।
- घर के शीशे एवं खिड़कियों को सदैव साफ करके रखें वरना यह धन की समस्या उत्पन्न कर सकता है।
- यदि दीवार घड़ी गंदी हो गई है या उस पर जाले लग रहे हों तो उसे साफ कर दें। यह नकारात्मक चीजों को आकर्षित करता है।

यही समय है जब मां-पिता अपने बच्चों को यह सिखाएं कि विविधता में ही सौंदर्य और शक्ति है।

- माया एंजिलो

उसे ढूंढ़ो जो मिल नहीं सके

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

> जब तक हमारे पास निम्नस्तर की शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा होगी, तब तक भारत विकसित नहीं बन सकता। शिक्षा, खासकर स्कूली शिक्षा, निस्संदेह व्यापक है, लेकिन इसकी गुणवत्ता खराब है। आधे बच्चे किसी भी भाषा में एक सामान्य पाठ पढ़ने या लिखने में असमर्थ और संख्यात्मक हिसाब-किताब में फिसड्डी हैं।

अर्थव्यवस्था के अनेक अन्य ईमानदार शुभचिंतकों की तरह, मैं भी हमेशा वार्षिक केंद्रीय बजट की पूर्व संध्या पर पढ़ता, चिंतन करता और लिखता हूं- और बजट वाले दिन प्रायः संसद भवन से निराश होकर निकलता रहा हूं।

इसके बाद, मैं लोगों के पास जाता हूं और विधायकों, अर्थशास्त्रियों, व्यापारियों, किसानों, महिलाओं, युवाओं और सबसे अधिक, पार्टी कार्यकर्ताओं सहित विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोगों से बात करता हूं। कार्यकर्ता मुझे जमीनी स्तर से, खासकर स्थानीय बाजारों में होने वाली चर्चाओं से, 'फीडबैक' लेकर मुझे बताते हैं। पिछले दस वर्षों के दौरान लगभग हर वर्ष मैंने देखा है कि बजट की 'घोषणाएं' अड़तालीस घंटों के भीतर बिना अपना कोई प्रभाव छोड़े गायब हो जाती हैं, और उनके बारे में चर्चा बंद हो जाती है।

कठिन चुनौतियां

इन निराशाजनक नतीजों का मुख्य कारण यह है कि बजट बनाने वाले हकीकत से दूर होते और आर्थिक स्थिति का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करने में विफल रहते हैं। चलिए, 2024-25 की ही बात करें, जिसके लिए 23 जुलाई, 2024 को बजट पेश किया जाएगा। आर्थिक स्थिति का वस्तुपरक मूल्यांकन करने से पता चलेगा कि :

- बेरोजगारी युवाओं, परिवारों और सामाजिक शांति के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। कुछ दर्जन रिक्तियों या कुछ हजार पदों के लिए, लाखों उम्मीदवार आवेदन करते और परीक्षा या साक्षात्कार देते हैं। परीक्षा से पहले पर्चे बाहर हो जाते हैं। रिश्वत दी जाती है। कुछ परीक्षाएं या साक्षात्कार अंतिम समय में रद्द कर दिए जाते हैं, जिससे बहुत परेशानी होती है। ये विस्फोटक बेरोजगारी की स्थिति के प्रत्यक्ष परिणाम हैं। सीएमआइई के अनुसार, अखिल भारतीय बेरोजगारी दर 9.2 फीसद है। कृषि (वास्तव में छिपी हुई बेरोजगारी), निर्माण (अनियमित) और 'गिग इकोनामी' (असुरक्षित) में तथाकथित नौकरियों में वृद्धि हुई है।

युवा नियमित नौकरी चाहते हैं, जिसमें कार्यकाल की थोड़ी सुरक्षा और उचित वेतन हो। ऐसी नौकरियां सरकारी और सरकार द्वारा नियंत्रित निकायों में उपलब्ध हैं। 2024 की शुरुआत में, ऐसे पदों पर दस लाख रिक्तियां थीं, मगर इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि केंद्र सरकार रिक्तियों को भरने के लिए उत्सुक है। ऐसी नौकरियां विनिर्माण क्षेत्र और वित्तीय सेवाओं, सूचना प्रौद्योगिकी, जहाजरानी, हवाई परिवहन, आतिथ्य, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और अनुसंधान तथा विकास जैसी उच्च मूल्य वाली सेवाओं में भी सृजित की जा सकती हैं। विनिर्माण उत्पादन सकल घरेलू उत्पाद के पंद्रह फीसद पर स्थिर हो गया है, क्योंकि भारतीय प्रवर्तकों ने निवेश करने में काफी बेरुखी दिखाई है। विनिर्माण और उच्च मूल्य वाली सेवाओं के तीव्र विस्तार के लिए आर्थिक नीतियों में आमूलचूल परिवर्तन और विदेशी निवेश तथा विदेशी व्यापार को साहसपूर्वक अपनाने की आवश्यकता है।

- मूल्य वृद्धि या मुद्रास्फीति दूसरी बड़ी चुनौती है। सरकार द्वारा मापी गई थोक मूल्य मुद्रास्फीति 3.4 फीसद के उच्च स्तर पर है। सीपीआइ मुद्रास्फीति 5.1 फीसद और खाद्य मुद्रास्फीति 9.4 फीसद है। चूंकि भारत एक साझा बाजार नहीं है, जहां देश के हर हिस्से में वस्तुओं और सेवाओं का मुक्त प्रवाह होता है, इसलिए दरें राज्य-दर-राज्य और राज्य के भीतर, परस्पर जुड़े जिलों से लेकर गरीब और दूरदराज के जिलों में भिन्न होती हैं। शायद आबादी के शीर्ष 20-30 फीसद को छोड़कर, हर परिवार मुद्रास्फीति से आहत है। कुछ लोग चिड़चिड़े, तो अधिकतर नाराज हैं।

बजट भाषण और आबंटनों में बेरोजगारी और मूल्य वृद्धि से निपटने के लिए विश्वसनीय कदमों की रूपरेखा के मद्देनजर आप अपनी संतुष्टि के स्तर के पैमाने पर पचास अंक निर्धारित कर सकते हैं।

दो अन्य चुनौतियां

शेष पचास अंक शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और बाकी लोगों की प्राथमिकताओं के आधार पर आबंटित किए जा सकते हैं। जब तक हमारे पास निम्नस्तर की शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा होगी, तब तक भारत विकसित देश नहीं बन सकता। शिक्षा, खासकर स्कूली शिक्षा, निस्संदेह व्यापक है, लेकिन इसकी गुणवत्ता खराब है। हकीकत यह है कि एक बच्चा औसतन सात से आठ वर्ष एक स्कूल में बिताता है। लगभग आधे बच्चे किसी भी भाषा में एक सामान्य पाठ पढ़ने या लिखने में असमर्थ और संख्यात्मक हिसाब-किताब में फिसड्डी हैं। वे किसी भी कौशल वाली नौकरी के लिए उपयुक्त नहीं हैं। हजारों स्कूलों में एक-एक शिक्षक हैं। स्कूलों में कक्षाओं, शौचालयों और शिक्षण सहायक सामग्री की भारी कमी है, पुस्तकालयों या प्रयोगशालाओं की तो बात ही छोड़ दीजिए। केंद्र सरकार को इन मूलभूत समस्याओं को दूर करने के लिए राज्यों को प्रेरित करना और उनकी मदद करनी चाहिए- और अपने संसाधनों तथा समय को विवादास्पद एनईपी या घोटालों से भरे एनटीए/एनईईटी को आगे बढ़ाने में बर्बाद नहीं करना चाहिए।

स्वास्थ्य सेवा बेहतर है, लेकिन पर्याप्त नहीं। सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा मात्रात्मक रूप से बढ़ रही है, लेकिन गुणवत्ता में नहीं। कुल स्वास्थ्य व्यय में जेब से किया जाने वाला खर्च अब भी लगभग 47 फीसद है (एनएचएई, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय)। निजी स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में मात्रा और गुणवत्ता दोनों बढ़ रही है, लेकिन वह अधिकांश लोगों की पहुंच से दूर है। कुल मिलाकर, डाक्टरों, नर्सों, चिकित्सा तकनीशियनों, नैदानिक उपकरणों तथा मशीनों की भारी कमी है। स्वास्थ्य सेवा पर केंद्र सरकार का व्यय जीडीपी के अनुपात में 0.28 फीसद और कुल व्यय के अनुपात में 1.9 फीसद (15 जुलाई, 2024 का 'टीओआइ') रह गया है। सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा को लेकर जनता में संतोष का स्तर बहुत कम है।

कड़ा, तगड़ा तमाचा

अन्य लोगों की प्राथमिकताएं वेतन, बढ़ते घरेलू कर्ज, रोजमर्रा के उपभोग की वस्तुओं की घटती खपत, न्यूनतम समर्थन मूल्य की कानूनी गारंटी, शिक्षा ऋण के बोझ और अग्निपथ योजना आदि को लेकर हैं। इन चुनौतियों का यही समाधान हो सकता है कि न्यूनतम मजदूरी 400 रुपए प्रतिदिन, एमएसपी को कानूनी गारंटी दी जाए, शिक्षा ऋण माफ हो और अग्निपथ को खत्म किया जाए। इन मुद्दों की उपेक्षा, जो उपहास उड़ाने जैसा है, का ही नतीजा है कि 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा की सीटों में विनाशकारी गिरावट आई। मगर भाजपा को इसका पछतावा नहीं है। न ही, सार्वजनिक बयानों के अनुसार, वह अपने माडल पर पुनर्विचार करने को तैयार है: जो मुख्य रूप से मित्र पूंजीपतियों को प्रोत्साहन, 'ट्रिकल-डाउन', पक्षपाती पूंजी और संरक्षणवाद पर आधारित है। जुलाई में हुए तेरह विधानसभा उपचुनावों में लोगों ने भाजपा को जोरदार तमाचा मारा : आइएनडीआइए धड़े ने उनमें से दस सीटें जीत ली और अपने वोट साझीदारी में नाटकीय रूप से बढ़ोतरी हासिल की। क्या बजट दीवार पर लगी इन चेतावनियों का जवाब देगा? आप बेहतरी के लिए दुआ करते रहिए।

दुराग्रह की राजनीति

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

> पिछले सप्ताह एक उदाहरण एक बार फिर मिला, जब कांवड़ यात्रा के नाम पर ठेले वालों से लेकर बड़ी दुकानों को आदेश दिया गया उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ से कि दुकानदार का नाम लिखा जाए उन जिलों में जहां से यात्रा गुजरती है। इस आदेश ने यादें ताजा कर दीं नाजी जर्मनी की, जब यहूदियों को बिल्कुल ऐसा ही आदेश मिला था।

किधर गए वे आला नेता जो कल तक संविधान के रक्षक बने फिर रहे थे? राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे, कहां थे आप जब आपके एक मुख्यमंत्री ने संविधान का उल्लंघन करके कानून पारित करने की कोशिश की थी कि कर्नाटक में निजी कंपनियों में नौकरियां आरक्षित होंगी कर्नाटक के लोगों के लिए? क्या संविधान के खिलाफ नहीं है ऐसा करना? अपने इस सवाल का जवाब मैं खुद देना चाहती हूं। किसी भी नजरिए से देखें इस कानून को, तो साफ दिखेगा कि संविधान के बिल्कुल खिलाफ है।

इस तरह के कानून अगर भारत के हर राज्य में पारित होने लगेंगे तो भारत एक देश न रह कर छोटे-छोटे प्रांतों में बंट जाएगा। सीमाएं बन जाएंगी राज्यों के बीच, ऐसी कि भारत के नागरिक अपने देश के अंदर पासपोर्ट लेकर घूमने के लिए मजबूर हो जाएंगे, ताकि साबित कर सकें कि उनको नौकरी मिल सकती है कि नहीं। जीत होगी किसी की तो सिर्फ उनकी जो भारत को कमजोर करना चाहते हैं, संविधान को कमजोर करना चाहते हैं। हल्ला जब मचने लगा तो कर्नाटक के मुख्यमंत्री ने इस कानून पर रोक लगा दी है फिलहाल। लेकिन कौन कह सकता है कि हल्ला कम होने के बाद इस असंवैधानिक कानून को फिर से पारित करने का प्रयास नहीं होगा?

माना कि बेरोजगारी देश के युवाओं के लिए सबसे बड़ी समस्या है, लेकिन समाधान इस तरह का आरक्षण नहीं हो सकता है, सिर्फ इसलिए कि गैर-संवैधानिक है। इसलिए भी कि ऐसा करके भारत की जड़ें, भारत की अखंडता कमजोर करने का काम किया जाएगा। साथ में निजी क्षेत्र में जो सफल उद्योग हैं, उनको भी कमजोर करने का काम होगा। खासतौर पर बंगलुरु जैसे महानगर में, जो भारत का 'सिलिकान वैली' कहलाता है। इंफोसिस और विप्रो जैसी कंपनियों, जिन्होंने बंगलुरु में अपने मुख्यालय बनाए हैं, शायद उनको बंद करके चले जाएंगे किसी दूसरे राज्य में प्रशिक्षित साफ्टवेयर नौजवानों की जरूरत पूरी करने। फिलहाल बंगलुरु जाते हैं पूरे देश से कंप्यूटर इंजीनियर। आश्चर्य की बात नहीं है कि इस कानून के विरोध में पहले बंगलुरु की सिलिकान वैली से आवाजें उठीं। अफसोस कि दलील यही रही है कि उनके लिए आरक्षण अनिवार्य न हो। कहना यह चाहिए था कि यह नया लाइसेंस राज किसी भी क्षेत्र में नहीं होना चाहिए।

बंगलुरु जैसे महानगरों में देश भर से जाते हैं लोग। इन महानगरों में आते हैं व्यापारी, जिनके कारखाने और कारीगर अलग-अलग राज्यों में होते हैं। यही भारत की ताकत है। लंबी फेहरिस्त है उनकी, जो कर्नाटक जाते हैं कारखाना लगाने, रोजगार ढूंढ़ने। तो क्या इन सबको अपनी दुकान बंद करके अपने राज्यों में जाना होगा, अगर ऐसा कानून भविष्य में पारित होगा? ईमानदारी से सोचते हमारे राजनेता तो बेरोजगारी का असली समाधान ढूंढ़ने की कोशिश करते। असली समाधान है सरकारी स्कूलों में क्रांतिकारी सुधार लाना, ताकि यहां से बच्चे वास्तव में शिक्षा पा सकें। फिलहाल साक्षरता ही हासिल करके निकलते हैं सरकारी स्कूलों से बच्चे। अगली मुसीबत उनकी होती है किसी ऐसे उच्च स्तरीय शिक्षा संस्थान में दाखिला लेने की, जिसमें कोई हुनर सीख सकें।

एक बड़े उद्योगपति ने मुझे एक बार समझाया था कि समस्या निजी क्षेत्र में नौकरियों की कमी की नहीं है। बहुत बड़ी गुंजाइश है नौकरियां देने की, लेकिन दे नहीं पाते हैं उद्योगपति, क्योंकि जो तथाकथित शिक्षित नौजवान आते हैं, वे शिक्षित हैं ही नहीं। कई सर्वेक्षण दिखाते हैं कि सरकारी स्कूलों में से बच्चे निकलते हैं ऐसे, जो मुश्किल से थोड़ा-बहुत पढ़-लिख लेते हैं। बस। उनके लिए वही नौकरियां मिलती हैं जो अनपढ़ लोगों को दी जा सकती हैं।

बहुत बड़ी समस्या है यह जो पैदा हुई है पिछले उन दशकों में जब अक्सर प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री कांग्रेस पार्टी के हुआ करते थे। उस दौर में स्कूल, अस्पताल और बच्चों के लिए अन्य संस्थाएं बनाई गई थीं नाम के वास्ते। इसलिए जहां 'बच्चों का पार्क' लिखा होता है आज भी हमारे छोटे शहरों में वहां दो-तीन झूले होते ही हैं, लेकिन ज्यादातर जमीन काम आती है कचरा फेंकने के लिए। मेरे जैसे जो कभी मोदी भक्त हुआ करते थे, इस उम्मीद से समर्थन दिया मोदी को कि शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में वे खास ध्यान देंगे।

अफसोस की बात है कि ऐसा मोदी ने न अपने पहले शासनकाल में किया और न दूसरे शासनकाल में। उनके मुख्यमंत्री लगे रहे ऐसे कार्यों में जिनसे मुसलमानों को तकलीफ पहुंचाई जा सके। पिछले सप्ताह एक उदाहरण एक बार फिर मिला, जब कांवड़ यात्रा के नाम पर ठेले वालों से लेकर बड़ी दुकानों को आदेश दिया गया उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ से कि दुकानदार का नाम लिखा जाए उन जिलों में जहां से यात्रा गुजरती है। इस आदेश ने यादें ताजा कर दीं नाजी जर्मनी की, जब यहूदियों को बिल्कुल ऐसा ही आदेश मिला था।

इससे पहले गौ रक्षा के नाम पर कई मुसलमानों को मारा गया है और जो उनके रोजी-रोटी के साधन थे, उन पर हमला किया गया। पशु-पालन तकरीबन असंभव हो गया है और अवैध बूचड़खानों को रोकने के बहाने जो जायज थे, वे भी बंद किए गए। ऊपर से, जहां भी भारतीय जनता पार्टी के मुख्यमंत्री थे, उन्होंने बुलडोजर चलाए हर दंगे-फसाद के बाद, लेकिन घर टूटे सिर्फ मुसलमानों के। इन चीजों के बदले अगर इन मुख्यमंत्रियों ने ध्यान दिया होता सरकारी स्कूलों में सुधार लाने पर, तो हिंदू-मुसलिम दोनों का भला होता और देश का भी।

अब शुरू हुआ है मोदी का तीसरा कार्यकाल, इसलिए उनको एक मौका और मिला है उन चीजों पर ध्यान देने का, जिनसे बेरोजगारी वास्तव में समाप्त हो सकती है। ध्यान दीजिए मोदीजी, मेहरबानी करके इस बात पर कि अशिक्षित देश कभी विकसित नहीं होते हैं।

चिंता और चुनौती

समाज

जगमोहन सिंह राजपूत

> पश्चिम के प्रभाव और उसके साथ वैश्वीकरण की चकाचौंध में हम भारतीय संस्कृति की मूल भावना से दूर होते गए। देश में साक्षरता बढ़ी, 18 फीसद से हम 80 फीसद के आसपास आ गए, वह भी जब जनसंख्या 40 करोड़ से 140 करोड़ हो गई। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। मगर शिक्षा व्यवस्था भूल गई की 'विद्या ददाति विनयम्' का दर्शन इसी बीच कहीं खो गया।

देश के युवाओं में अपने भविष्य के प्रति चिंता लगातार बढ़ी है। पालकों और परिवारों में तनाव भी उसी परिमाण में बढ़ा है। लगभग सभी अपने व्यक्तिगत अनुभव से जानते हैं कि जब भी बच्चे तनावग्रस्त होंगे, तो परिजन उनसे अधिक तनाव में आ जाएंगे। पिछले कुछ वर्षों से प्रवेश परीक्षाओं और प्रतियोगी परीक्षाओं में लगातार गड़बड़ी और धांधली की ऐसी घटनाएं हुई हैं, जो देश भर के युवाओं के मन-मस्तिष्क ही नहीं, सामान्य नागरिक के जीवन में भी व्यवस्था के प्रति अविश्वास और आशंकाएं लगातार बढ़ रही हैं। केवल नीट नहीं, संचार माध्यम बता रहे हैं कि, सत्तर ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं। युवाओं से संबंधित अनेक समस्याओं की चर्चा जब भी होती है, यह अवश्य दोहराया जाता है कि छह-सात दशक पहले ऐसी समस्याएं नहीं थीं। यह सच है। जिन लोगों ने 1970 के पहले किसी विश्वविद्यालय से परीक्षा पास की हो, वे निश्चित रूप से बताएंगे कि सत्र नियमित ढंग से चलते थे, परिणाम समय पर आते थे, अपवाद स्वरूप अगर नकल के प्रकरण व्यक्तिगत स्तर पर पकड़े भी जाते थे तो नकल करनेवाले की ही नहीं, उसके परिवार की भी सामाजिक स्थिति रसातल में चली जाती थी।

देश के लोक सेवा आयोग तथा राज्यों के सेवा आयोगों पर युवाओं को पूर्ण विश्वास था। उनके अध्यक्ष और सदस्य राजनीतिक आधार पर नियुक्त नहीं होते थे। प्रतिभा, ईमानदारी तथा सामाजिक योगदान के लिए जाने जाते थे। पीढ़ियां बदलीं, सामाजिकता बदली, पश्चिम की सभ्यता की चकाचौंध में व्यक्ति तथा समाज की सोच ने नए आयाम ग्रहण किए। अगर पिछले तीस वर्षों में केवल कुछ बड़े राज्यों के विभिन्न नियुक्ति आयोगों की सदस्यता तथा उनकी सुयोग्यता का अध्ययन किया जाए तो आंख खोलने वाले तथ्य सामने आएंगे। परीक्षा व्यवस्था के नियोजन और आयोजन के लिए शीर्ष पदों पर बैठे लोगों का केवल तबादला होता, या उनको मुअत्तल कर दिया जाता है, जिसका न तो कोई महत्त्व होता है और न ही ऐसे लोगों के 'करिअर' पर कोई आंच आती है। राजस्थान में एक विश्वविद्यालय ने तैंतालीस हजार फर्जी डिग्रियां कुछ वर्षों के अंतराल में बांट दी।

क्या ऐसा केवल अक्षमता के कारण होता है? ऐसा नहीं माना जा सकता। इसका कारण केवल स्वार्थ लिप्सा, अकूत धन संग्रहण की लालसा तथा देश की न्याय व्यवस्था की निर्मम शिथिलता के कारण ही संभव होता रहा है। अगर ऐसा न होता तो ऐसी खबरें कैसे आतीं कि जिस माफिया ने इस बार परीक्षा पत्र बेचे थे, वह ऐसा पहले भी एक से अधिक बार कर चुका है! ऐसा वर्षों से चल रहा है। न पुलिस सुधार होते हैं, न न्याय व्यवस्था अपने को व्यवस्थित करने का कोई प्रयास करती है। अगर जनता के चयनित प्रतिनिधिओं को- अपवाद छोड़कर- लोक की चिंता होती, या कर्तव्यबोध उनकी प्राथमिकता होती, तो यह स्थिति बहुत पहले सुधार चुकी होती।

पश्चिम के प्रभाव और उसके साथ वैश्वीकरण की चकाचौंध में हम भारतीय संस्कृति की मूल भावना से दूर होते गए। देश में साक्षरता बढ़ी, 18 फीसद से हम 80 फीसद के आसपास आ गए, वह भी जब जनसंख्या 40 करोड़ से 140 करोड़ हो गई। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। मगर शिक्षा व्यवस्था भूल गई की 'विद्या ददाति विनयम्' का दर्शन इसी बीच कहीं खो गया। व्यक्ति समाज के लिए सुपात्र तभी बनता है जब उसमें वियनशीलता लगातार बढ़ रही हो! हमारे पास ऐसा कोई प्रावधान कहीं नहीं है, जिसके तहत सरकारी नौकरियों में सुपात्रता के लिए वियनयशीलता का भी मूल्यांकन होता हो!

केवल धनसंग्रह से सुख नही मिलता, धन और सुख के बीच कुछ और भी आवश्यक है, और वह है धर्म या सही आचरण। व्यक्ति का पंथ/आस्था कोई भी हो, धर्म सभी के लिए समान है; राजधर्म, राष्ट्रधर्म, सेवाधर्म सभी के लिए प्रकृति तथा मानवता के प्रति उत्तरदायित्व निर्वहन के लिए आवश्यक है। अगर स्वतंत्रता के पश्चात देश की भावी पीढ़ी को इस 'सद आचरण या धर्म' को आत्मसात करने का अवसर प्रदान किया गया होता तो आज देश के लाखों युवा व्यथित न होते, एक बड़ा अधिकारीवर्ग अपने सामाजिक तथा नैतिक उत्तरदायित्व से मुंह न मोड़ चुका होता।

1932 में कार्ल वाशबर्न ने 'रिमेकिंग आफ मैनकाइंड' नाम की अपनी पुस्तक में गांधीजी से अपनी भेंट का वर्णन लिखा है। उनका प्रश्न था कि स्वतंत्र भारत के समक्ष सबसे बड़ी समस्या या चुनौती क्या होगी? जो उत्तर आया उसकी कल्पना भी शायद वाशबर्न या किसी भी अन्य ने शायद कभी न की होगी। उत्तर था- चरित्र निर्माण! इसी कथा में एक और प्रकरण पहली बार सुना था। एक ईसाई मिसनरी डाक्टर मोटे ने गांधीजी से पूछा था कि स्वतंत्र भारत के लिए उनकी सबसे बड़ी चिंता क्या है। गांधीजी ने प्रश्न दोहराया और फिर कहा- पढ़े-लिखे और प्रबुद्ध लोगों की बेरुखी! स्वतंत्रता के पश्चात अगर नीति निर्धारकों ने ये दो शब्द- चिंता और चुनौती- गांधी की निगाहों से देखे होते तो शायद चरित्र निर्माण और प्रबुद्ध वर्ग की सतर्कता बढ़ाने को नीतियों में आवश्यक प्राथमिकता मिल गई होती।

कई महामानव, कई भगवान

बाखबर

सुधीश पचौरी

> एक भाजपा नेता ने कह दिया कि 'जो हमारे साथ हम उसके साथ'। फिर बिहार के एक भाजपा नेता ने कहा कि हमने उनका ऐसा क्या बिगाड़ा है कि वे हमें वोट नहीं देते। यह शुद्ध 'आत्ममुग्धता' और 'खिसियाहट' का मिश्रण है।

एक दिन सत्तापक्ष ने आपातकाल का विरोध करने के लिए '25 जून' को 'संविधान हत्या दिवस' मनाने का फैसला किया। सत्तापक्ष कहिन कि कुर्सी बचाने के लिए आपातकाल लगाकर संविधान खत्म किया गया, विपक्ष के हजारों लोगों को जेल में डाला गया, तो विपक्ष की ओर से जवाब आया कि आज भी तो 'अघोषित आपातकाल' है। इन दिनों विपक्ष हर मुद्दे पर 'फ्रंट फुट' पर खेलता नजर आता है, जबकि भाजपा 'बैक फुट' पर नजर आती है। ये भाजपा के दुर्दिन हैं। ऐसे ही एक दिन भाजपा ने ट्रंप की 'हत्या की साजिश' की तरह प्रधानमंत्री की 'हत्या की साजिश' का मुद्दा उठाया और फिर वही हुआ, जिसकी उम्मीद थी। एक कहिन कि जिस तरह जो बाइडेन ने ट्रंप के खिलाफ ऐसा 'नेरेटिव' बनाया, जिस तरह बहुत-से 'नफरती भाषणों' ने ट्रंप को 'आसान निशाना' बनाया, उसी तरह प्रधानमंत्री के खिलाफ 'नफरती भाषण' भी ऐसा वातावरण बनाते हैं। अब तक उनको तीन बार 'निशाना' बनाया गया है।

कुछ भाजपा नेता 'हार की मार' से इतने विचलित दिखते हैं कि 'मतदाताओं' को ही निशाने पर लेने लगते हैं। इस क्रम में एक दिन बंगाल के एक भाजपा नेता ने कह दिया कि 'जो हमारे साथ हम उसके साथ'। फिर बिहार के एक भाजपा नेता ने कह डाला कि हमने उनका ऐसा क्या बिगाड़ा है कि वे हमें वोट नहीं देते। यह शुद्ध 'आत्ममुग्धता' और 'खिसियाहट' का मिश्रण है, जो इन दिनों बहुत से भाजपा नेताओं की भाषा में दिखता है। सर जी! ये ऐसे 'दुष्ट दिन' हैं कि खिसियाने वालों, रोने वालों को कोई 'भाव' नहीं देता।

फिर एक शाम भाजपा की हिम्मत बढ़ाने वाली एक 'खबर' आई कि 'एक्स' (पूर्व नाम 'ट्विटर') पर पीएम मोदी के सौ मिलियन 'फालोअर' हैं, जो दुनिया में सर्वाधिक हैं। फिर खबर आई कि भोजशाला के सर्वे में मंदिर होने के प्रमाण मिले। आने वाले दिनों में अब इस पर भी कुछ दिन 'ले-दे' होनी है। इसी बीच सुप्रीम कोर्ट के 'तलाकशुदा मुसलिम औरत को मुआवजा देने' के फैसले के खिलाफ 'मुसलिम पर्सनल ला बोर्ड' ने अपील करने की बात कही। बहसों ने एक बार फिर सिद्ध किया कि 'मुसलिम पर्सनल ला बोर्ड' के नेता अपने पुराने मत से एक इंच भी हटने वाले नहीं।

इसके बाद, हार के कारणों पर 'आत्ममंथन' करने की खबरों के साथ उत्तर प्रदेश में भाजपा की 'अंतर्कलह' भी चैनलों में व्यक्त हुई। एक बयान में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने चेताया कि सरकार को एक खरोंच तक आई... तो दूसरे नेता ने चेताया कि संगठन सरकार से बड़ा था, है और रहेगा। सहयोगी दल के एक नेता ने कहा कि बुलडोजर चलाओगे तो यही होगा।

इसके बाद, उत्तर प्रदेश सरकार के नए एलान की खबर आई कि अब पंतनगर आदि में 'बुलडोजर' नहीं चलेगा और शिक्षकों की 'बायोमेट्रिक उपस्थिति' की अनिवार्यता के आदेश को भी टाल दिया गया है। इसे देख एक विपक्षी नेता ने कहा कि उत्तर प्रदेश में भाजपा कमजोर हो रही है, कि उत्तर प्रदेश में कठपुतली सरकार चल रही है। एक पत्रकार ने टीप लगाई कि यूपी में 'कल्याण सिंह पार्ट-2' चल रहा है। एक चैनल के अनुसार भाजपा ने अपने नेताओं को चेताया कि 'जो बोलें सावधानी से बोलें', लेकिन कोई माने तब न! शायद इसीलिए उत्तर प्रदेश में शुरू हुई 'अंतर्कलह' सीधे 'उत्तराखंड' पहुंची। वहां एक पूर्व मुख्यमंत्री ने वर्तमान मुख्यमंत्री की मौजूदगी में जम कर कटाक्ष किया कि जनता आगे बढ़ गई, हम पीछे रह गए। आप आज यहां हैं, कल पीछे बैठ सकते हैं। पीछे वाले आगे बैठ सकते हैं। मैंने छोड़ा, तब आप आए... फैसलों को थोपो मत... कहीं भी बैठो, जमीन मत छोड़ो। और ऐसे हर वाक्य पर तालियां पड़ती दिखीं। एक एंकर ने कहा कि भाजपा में लगता है 'जूतम-पैजार' चल रही है।

फिर एक दिन कर्नाटक सरकार की मार्फत खबर आई कि उसने कर्नाटक में नौकरी करने वाले सभी के लिए 'कन्नड़ भाषा' में दक्ष होना जरूरी कर दिया है। 'नासकाम' ने इसका तुरंत विरोध किया और कह दिया कि अगर ऐसा किया गया तो सारी कंपनियां बाहर चली जाएंगी। इस धमकी के आगे सरकार ने तुरंत समर्पण कर दिया और इस प्रस्ताव को रोक दिया।

इसके बाद उत्तर प्रदेश का नया फरमान बहसों को गरम करता रहा। फरमान के अनुसार 'कांवड़ यात्रा' के मार्ग पर सभी विक्रेताओं और दुकानदारों को अपने नाम लिखकर प्रदर्शित करने होंगे। ओवैसी ने तुरंत कहा कि ये 'छूआछूत' है। एक अन्य विपक्षी नेता ने कहा कि यह हिटलर की तर्ज पर 'प्रोफाइलिंग' कराना है। भाजपा के एक पूर्व मुसलिम मंत्री तक ने कह दिया कि ऐसा अफसरी आदेश 'अस्पृश्यता' को ही बढ़ावा दे सकता है। और अंत में दिखे 'गुरु जी' के 'व्यंग्य वाण' कि कई 'सुपरमैन' बनना चाहते हैं, कई 'देवता', फिर 'भगवान' बनना चाहते हैं, लेकिन भगवान कहते हैं कि वे विश्वरूप हैं। अब आप खोजते रहिए कि इन 'दुर्दिनों' में भी कौन 'सुपरमैन' बनना चाहता है, कौन 'देवता' बनना चाहता है और कौन 'भगवान' बनने के चक्कर में है?

ये रहे आपके सवालों के जवाब

रिश्तों में जब होने लगे मेरा-तुम्हारा

पिछले हफ्ते हमने पति-पत्नी के रिश्तों पर पूरे पेज की सामग्री दी थी। इस पर पाठकों के सवाल भी मांगे थे। कई पाठकों ने हमें अपने सवाल भेजे हैं। यहां आपके भेजे हुए सवालों में से चुनिंदा के जवाब दे रहे हैं सीनियर सायकायट्रिस्ट डॉ. समीर पारिख और मैरिज काउंसलर गीतांजलि शर्मा से लेकर दे रहे हैं:

पिछले हफ्ते हमने रिलेशनशिप पर यह पेज प्रकाशित किया था।

AI Images

...तब ज़रूरी हो सकता है स्टैंड लेना

Q किसी भी रिश्ते में, खासतौर पर प्रेम संबंधों में यह कैसे तय करें कि कब तक हमें रिश्ते में समझौता करना है और कब किसी फैसले पर पहुंच जाना चाहिए?

पति-पत्नी का रिश्ता या फिर प्रेम संबंध ऐसा होना चाहिए जिसमें लाइन खींचने की बात ही न हो। सच तो यह है कि हर शख्स का व्यक्तित्व अलग-अलग होता है। इसलिए दायरा भी अलग-अलग होना चाहिए। खुद ही फैसला करना होगा कि कहां तक छूट देनी है, कितनी छूट देनी है और कहां पर स्टैंड लेना है? इन सभी सवालों के जवाब खुद खोजने होंगे। फिर भी कुछ बातों का ध्यान रखा जा सकता है। सबसे पहले तो स्टैंड लेने का मतलब समझना जरूरी है। इसकी नौबत अमूमन तब आती है जब कोई एक पार्टनर चीटिंग कर रहा हो या फिर उसका स्वभाव बदल गया हो। चीजें छुपाई जा रही हों और पूछने पर झूठ बोला जा रहा हो। ऐसा बार-बार बोला जा रहा हो। अगर एक पार्टनर दूसरे पार्टनर को इग्नोरनली परेशान करे। उससे ऐसी बातें कहे जो दूसरे के आत्मविश्वास को कम करे। मसलन: बहुत झगड़ा करे, बार-बार कमियां निकाले। अगर कोई एक पार्टनर हिंसा या गाली-गलौज पर उतारू हो जाए यानी डोमेस्टिक वॉयलेंस करने लगे तो स्टैंड लेने की बात होनी चाहिए। वैसे तो इस तरह का बर्ताव एक बार भी नहीं होना चाहिए, पर जब यह बार-बार होने लगे तो स्टैंड लेना जरूरी है। इनके अलावा फाइनैंस भी ऐसा ही मुद्दा है। कई बार लड़के या फिर लड़कियां भी पार्टनर को अपने कमाए पैसे में हिस्सा नहीं देना चाहते जबकि वे अपने पार्टनर के पैसों पर पूरा हक समझते हैं। अगर इस वजह से समस्या पैदा हो रही है तो यह भी एक बड़ा मुद्दा है। कोई पार्टनर बार-बार डिवोर्स देने की धमकी दे, घर छोड़कर चले जाने की धमकी दे या भागे तो सोचने की जरूरत है। पहले बातचीत और फिर काउंसलिंग से समस्या दूर करने की कोशिश होनी चाहिए। अगर बात फिर भी न बने तो किसी फैसले पर पहुंचने की कोशिश करनी चाहिए।

1 गलती निकालने पर 5 बार हो तारीफ

Q सास हर दिन गलतियां निकालती रहती हैं। पति भी साथ नहीं देते। मैं क्या करूं?

कोई भी शख्स अपने माता-पिता के खिलाफ कुछ सुनना नहीं चाहता, चाहे वह पति हो या पत्नी। उन्हें अपनी मां के बारे में शायद पता हो कि उनकी गलतियां क्या हैं? मुमकिन है कि इसलिए आपके पति भी अपनी मां के बारे में बात नहीं करना चाहते। पर इसका मतलब यह कतई नहीं है कि आपकी सास सही कर रही है या फिर आपके पति के स्वभाव को जायज ठहराया जा सकता है। आपकी सास और पति, दोनों को यह समझना चाहिए कि जब किसी महिला की बार-बार गलतियां निकाली जाएंगी तो वह खुद को असुरक्षित महसूस करेंगी। उसे लगेगा कि वह कुछ भी कर ले, उसके काम की तारीफ नहीं होगी। वह यह भी महसूस करेगी कि इसका सिर्फ एक ही मकसद है, बहू को नीचा दिखाना। यह परिवार के माहौल के लिए सही नहीं है। ऐसा नहीं है कि गलत चीज के लिए टोकना नहीं चाहिए या फिर जहां सुधार की गुंजाइश हो, वहां भी सुझाव न दिया जाए। कहने का मतलब यह है कि सुझाव दिया जाए सुझाव की तरह, न कि आदेश की तरह। अगर कोई एक शख्स दूसरे शख्स में 1 कमी निकाल रहा है तो उसकी यह जिम्मेदारी है कि वह दूसरे शख्स के काम की कम से कम 5 बार तारीफ करे। पति को यह समझना चाहिए कि सास और बहू के बीच में पति एक ब्रिज की तरह होता है। दोनों को जोड़कर रखना है। बैलेंस बनाकर चलना चाहिए।

अगर पत्नी अपने पति से कोई बात बार-बार कह रही है तो उस पर ध्यान दे। वह अपनी मां को समझाए कि यह दौर आज से 40 या 45 साल पहले का नहीं है, जब तुम बहू थी। चीजें बदल गई हैं। सोच बदल गई है। जेनरेशन बदल चुकी है। आपको सोच बदलनी चाहिए। इसी तरह पत्नी से बात करे कि मां कुछ पुराने विचारों वाली हैं। पूरी तरह से बदलना तो मुमकिन नहीं है, मैंने बात की है। तुम चाहो तो कुछ समझौता कर सकती हो। पति चाहे तो यह भी कह सकता है कि तुम दोनों ही मेरे लिए सबसे अहम हो। तुम दोनों दुखी रहोगी तो मैं सुखी कैसे रह सकता हूं। क्या तुम दोनों मुझे दुखी देखना चाहती हो!

चिल्लाना तो हरगिज़ नहीं

Q बहू बात-बात पर बहुत जोर से चिल्ला देती है। बेटा भी ध्यान नहीं देता। क्या उसे समझाने का कोई तरीका है?

इस तरह की परिस्थितियां कई घरों में दिखाई देती हैं। कई बार बहू को सास क्या, बेटे को अपनी मां की मौजूदगी घर में चुभने लगती है। शायद इसलिए वृद्धाश्रम में बुजुर्गों की तादाद लगातार बढ़ती जा रही है। यह स्थिति अच्छी नहीं है। अगर कोई बहू अपनी सास पर चिल्लाए तो इसे सही नहीं कहा जा सकता। वैसे चिल्लाना तो बच्चों पर भी नहीं चाहिए। सास तो उम्र और रिश्ते में भी बड़ी होती हैं। सास को अपनी बहू से पूछना चाहिए कि मेरी किस बात से तुम्हें नाराजगी है? क्या मैं कुछ गलत कर रही हूं जिससे तुम्हें दुख होता है? अगर कोई ऐसी बात है जिसे मैं बदल सकती हूं तो मैं उसे बदलने की कोशिश करूंगी। कई बार सास को इस बात का गुमान होता है कि उनके पास बहुत अनुभव है। कई बार सास को लगता है कि जब वह बहू थी तो बहुत सारा घर का काम करती थी। उनके जमाने में घर में कोई हेल्प नहीं थी। ऐसे में इस बात को समझना चाहिए कि पहले का दौर अलग था और यह दौर अलग है। इसके अलावा सभी की आदतें अलग-अलग होती हैं। काम करने की आदत भी होती है। इसलिए तुलना तो नहीं होनी चाहिए। सास-बहू दोनों को ही समझौतावादी बनना चाहिए। वैसे चिल्लाना बिलकुल ही गलत है। वहीं कई जगह यही स्थिति पत्नी और पति के बीच हो सकती है। पत्नी भी पति के द्वारा किए हुए घर के काम में इसी तरह से कमी निकालने लगती हैं या फिर पति अपनी पत्नी के कामों में बार-बार कमियां निकालने लगते हैं। इस वजह से पति-पत्नी के ताल्लुकात बुरे दौर में पहुंच जाते हैं।

किचन की ज़िम्मेदारी दोनों की

Q पति हर दिन मेरे बनाए खाने में कमी निकालते रहते हैं। लेकिन वही खाना घर के बाकी लोगों को पसंद आता है। वही खाना मेरी सास और ससुर को भी पसंद आता है। मैं इस बात से परेशान हूं। समझ नहीं आता कि क्या उपाय करूं?

दूसरों के किए कामों में कमी निकालना अमूमन हर इंसान की फितरत होती है। उन्हें अपना काम अच्छा लगता है और दूसरों का बेकार। आपके पति भी शायद इसी सोच से ग्रसित हैं। वैसे अच्छी बात यह है कि आपकी सास और ससुर आपके साथ हैं। ऐसे में आप अपनी सास और ससुर से इस बारे में बात कर सकती हैं। साथ ही अपने पति से पूछिए कि आपको क्या पसंद है, उसी तरह से खाना बनाती हूं। अगर फिर भी बात न बने तो उन्हें कुछ दिन खुद खाना बनाने के लिए कह दें। उनसे कहें कि वह आपको सिखा दें कि कैसे खाना बनाना है। मुमकिन है कि इसके बाद चीजें बदल जाएंगी। शायद उन्हें अपनी गलती का अहसास होगा। यह सच है कि कई लोग कुकिंग को महिलाओं की पहचान से जोड़ देते हैं। हकीकत यह है कि किसी भी काम को जेंडर से नहीं जोड़ना चाहिए।

कमाएं भी, बचाएं भी

Q मैं हर महीने करीब 50 हजार रुपये कमाता हूं। मुझे लगता है कि एक मिडल क्लास परिवार में इतनी कमाई से 3-4 लोगों का खर्च उठाया जा सकता है। लेकिन मेरी पत्नी और मेरे पिताजी को लगता है कि यह नाकाफी है। इस वजह से मुझे ताने सुनने पड़ते हैं। मैं क्या करूं?

आपने सही कहा है कि एक छोटे परिवार को अपना खर्च चलाने के लिए 50 हजार रुपये काफी हैं। कई लोग इससे भी कम कमाते हैं और उसमें खुश भी रहते हैं। कई लोग इससे ज्यादा कमाते हैं, फिर भी दुखी रहते हैं क्योंकि उनका खर्च ज्यादा होता है। अगर आपके परिवार का खर्च भी ज्यादा है तो मुमकिन है कि यह कमाई कम लगे। अगर परिवार में किसी को लगता है कि यह कमाई कम है तो उसे खुद भी पैसे कमाने की कोशिश करनी चाहिए। जहां तक ताने मारने की बात है तो ऐसा हरगिज नहीं होना चाहिए। कभी-कभी मजाक चल सकता है, लेकिन बात ऐसी नहीं होनी चाहिए जो किसी के दिल पर चोट पहुंचाए। एक शख्स जो हर दिन मेहनत करता है और पैसे कमाकर लाता है। उसे ताने सुनाना सही नहीं है। हां, परिवार की तरक्की के बारे में जरूर सोचना चाहिए।

शक का हो आधार

Q मुझे अपने पति पर शक है कि शायद उनका किसी के साथ अफेयर है। मैं जब भी इस बारे में पूछती हूं तो वह हंसकर टाल देते हैं। मैं कैसे पता करूं?

अगर शक करने की कोई खास वजह हो, सबूत हो। जैसे कि अगर उनके स्वभाव में या आपकी केयर करने के मामले में बड़ा फर्क आया हो। आप पर पहले की तुलना में ज्यादा गुस्सा करते हो। आपसे दूर-दूर रहते हों। आपसे दूर-दूर रहना चाहते हों। घर न आने के बहाने खोजते हों। कुछ तो बड़ा आधार होना चाहिए अपने पति पर शक करने का या फिर किसी पति के लिए अपनी पत्नी पर शक करने का। कई बार हम ज्यादा सोचते हुए आगे निकल जाते हैं, सिर्फ निगेटिव ही सोचते रहते हैं और शक का कीड़ा अपने अंदर पाल लेते हैं। मुमकिन है कि यह सिर्फ आपका वहम हो। ज्यादातर ऐसे मामलों में वहम ही होता है। यह भी संभव है कि उनको लगता हो कि आप फिजूल ही उन पर शक कर रही हैं। शायद इस वजह से वे हसकर टाल देते हों। कई बार चीजें सही चल रही होती हैं, लेकिन हम रिश्तों में शक का घुन लगाकर चीजों को बिगाड़ देते हैं। फिलहाल आप उन पर भरोसा करिए।

(पाठकों की गुजारिश पर उनके नाम नहीं दिए गए हैं।)

विचार विंडो

मुकेश: इक प्यार का नगमा है...

बात शायद सन 1968 की है। कहा जा सकता है मुकेश अपनी गायकी के शिखर पर थे। उन्हीं दिनों एक निर्माणाधीन फिल्म 'विश्वास' के निर्देशक केवल कश्यप और संगीतकार कल्याणजी-आनंदजी बहुत परेशान थे। वजह यह कि एक गीत मुकेश की आवाज में रिकॉर्ड किया जाना था, लेकिन मुकेश विदेश यात्रा पर होने की वजह से उपलब्ध नहीं थे। गीत की शूटिंग भी जल्द ही जानी थी। अचानक संगीतकार आनंदजी को सूझा कि गीत उस लड़के की आवाज में रिकॉर्ड कर लिया जाए, जो स्टूडियो में रिकॉर्डिंग जैसे कामों में उनकी सहायता करता था और जिसे गाने का भी शौक था। वही किया गया। गीत उस लड़के की आवाज में रिकॉर्ड कर लिया गया और शूटिंग हो गई।

हेमन्त अग्रवाल

बाद में मुकेश विदेश यात्रा से लौटे तो उन्हें सारी बात बता कर उनसे अनुरोध किया गया कि वह अब अपनी आवाज में इस गीत को रिकॉर्ड करा दें। मुकेश तैयार हो गए। रिकॉर्डिंग की पूरी तैयारी कर ली गई। अचानक मुकेश बोले 'जरा मुझे यह गीत तो सुनवाइए जो रिकॉर्ड किया गया है'। गीत सुनते ही मुकेश बोले 'प्लीज, दोबारा रिकॉर्ड मत कराइए। लड़के ने इतना अच्छा गाया है। आप इसका इंस्ट्रूमेंट नहीं करेंगे तो बेचारे लड़के का दिल टूट जाएगा'। संगीतकार के साथ ही निर्माता-निर्देशक ने भी मुकेश के आग्रह को स्वीकार कर लिया। बाद में यही गीत फिल्म 'विश्वास' का सबसे हिट गीत साबित हुआ। गीत था 'आपसे हमको बिछड़े हुए एक जमाना बीत गया'। इसके साथ ही बॉलिवुड में एंट्री हुई एक नए पार्श्वगायक मनहर उधास की। वही मनहर उधास, जिनका छोटा भाई पंकज उधास बाद में गजल गायक के रूप में मशहूर हुआ। आज भी फिल्मजगत में जब इस घटना की चर्चा होती है तो लोग कहते हैं कि मुकेश का सुर ही नहीं, दिल भी सोने का था।

जन्मदिन विशेष
मशहूर गायक मुकेश
22.07.1923- 27.08.1976

पुरानी दिल्ली में इंजीनियर जोरावर चंद माथुर और चांद रानी के घर 22 जुलाई 1923 को जन्मे मुकेश चंद माथुर का गायक बनना एक अजब संयोग का ही परिणाम था। मुकेश ने संगीत की कोई औपचारिक शिक्षा कभी नहीं ली। एक शिक्षक उनकी बहन को संगीत सिखाने घर पर आते थे। मुकेश बराबर वहां कमरे में बैठकर सुनते रहते। कभी-कभी दोस्तों के बीच उस दौर के मशहूर गायक कुंदन लाल सहगल के गीत गा दिया करते थे। बहन की शादी हुई तो बरात में आए मेहमानों में हिंदी फिल्मों के मशहूर अभिनेता मोती लाल भी थे। शादी में मेहमानों के स्वागत में मुकेश से कुछ गाने के लिए कहा गया तो उन्होंने सहगल का एक गीत सुना दिया। विवाह संपन्न हो गया। अगले दिन सुबह-सुबह मोती लाल घर आ धमके और उन्होंने जोरावर चंद से मुकेश को अपने साथ मुंबई (तब बंबई) ले जाने की अनुमति मांगी। मुकेश के पिताजी को बात ज्यादा जमी नहीं और उन्होंने यह कहकर मामला टाल दिया कि वह फिलहाल बेटे को इतनी दूर भेजने के लिए तैयार नहीं। उसे यहीं दिल्ली में किसी सरकारी विभाग में क्लर्क की नौकरी दिलवा दी जाए।

करीब 1 साल बाद मोती लाल ने फिर मुकेश को मुंबई भेजने का आग्रह किया तो पिता जोरावर को लगा कि वाकई बेटे मुकेश में कुछ न कुछ प्रतिभा होगी, तभी इतना बड़ा फिल्मस्टार उसे बार-बार बुला रहा है। वैसे भी पढ़ाई-लिखाई में मुकेश की कोई रुचि नहीं थी। 10वीं पास करने के बाद मुकेश ने पढ़ना-लिखना छोड़ दिया था। लिहाजा प्रस्ताव स्वीकार करने में कोई बुराई नजर नहीं आई। मुकेश के मुंबई पहुंचने पर मोती लाल ने पहले कुछ दिन उन्हें पंडित जगन्नाथ प्रसाद के पास संगीत सीखने के लिए भेजा और फिर जल्द ही फिल्म 'निर्दोष' में गायक-अभिनेता की भूमिका दिला दी। हालांकि फिल्म कामयाब नहीं रही, लेकिन मुकेश को मुंबई में टिकने का बहाना मिल गया। सफलता के लिए मुकेश को ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। साल 1943 में आई फिल्म 'पहली नजर' में उन्हें अपने अभिभावक सरीखे अभिनेता मोती लाल के लिए ही गाने का मौका मिल गया। गीत था 'दिल जलता है तो जलने दे'। संगीतकार थे अनिल बिस्वास और गीतकार सफदर आह सीतापुरी। इस गीत ने फिल्मी दुनिया में मुकेश की धूम मचा दी। लेकिन इस गीत के गायन पर सहगल की छाप साफ-साफ दिखाई देती है। इसे लेकर एक बहुत ही रोचक संस्मरण है। जब यह गीत किसी ने सहगल साहब को सुनवाया तो वह अपना सर खुजाते हुए बोले 'मुझे याद ही नहीं आ रहा मैंने यह गीत कब गाया था'।

SUBRATA DHAR

मुकेश के गाए कुछ बेमिसाल गीत

मस्ती भरे गीत
- उम उम ठिगा ठिगा (छलिया)
- आवारा हूं (आवारा)
- मेरा जूता है जापानी (श्री 420)
- सुहाना सफर और ये मौसम हसीं (मधुमती)
- सब कुछ सीखा हमने न सीखी होशियारी (अनाड़ी)
- किसी की मुस्कराहटों पे हो निसार (अनाड़ी)
- मेरे मन की गंगा (सरगम)
- हम तो तेरे आशिक है (फर्ज)
- कहता है जोकर सारा जमाना (मेरा नाम जोकर)

दर्द भरे गीत
- ज़िंदा हूं इस तरह कि गमे जिंदगी नहीं (आग)
- आ, लौट के आजा मेरे मीत (रानी रूपमती)
- दिल जलता है तो जलने दे (पहली नजर)
- तो सुबह कभी तो आएगी (फिर सुबह होगी)
- सारंगा तेरी याद में (सारंगा)
- दुनिया बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई (तीसरी कसम)

बहरहाल, इसके बाद संगीतकार अनिल बिस्वास और नौशाद ने मुकेश को सलाह दी कि वह सहगल की छाया बनकर न चलें और खुद को इस छाप से तुरंत मुक्त करें। मुकेश ने ऐसा ही किया। संगीत प्रेमियों को लगा कि मुकेश की मौलिक आवाज प्यार की मिठास और विरह के दर्द का अनूठा मेल है। संगीतकार अनिल बिस्वास ने मुकेश की आवाज को 'गोल्डन वॉइस' का नाम दिया। खैयाम को नजर मे मुकेश की आवाज में कोई 'जादुई आकर्षण' था। मुकेश ने कई फिल्मों में बतौर हीरो अभिनय भी किया था। इनमें 'निर्दोष' (नलिनी जयवंत के साथ) और 'माशूका' (उस समय की सबसे मशहूर अभिनेत्री सुरैया के साथ)। इतना ही नहीं उन्होंने 'मल्हार' नाम से एक फिल्म भी बनाई थी। लेकिन उन्हें कामयाबी एक गायक के रूप में ही मिली। राज कपूर के अलावा जिन दूसरे अभिनेताओं ने अपने लिए मुकेश की आवाज का खूबसूरती से इस्तेमाल किया, उनमें मनोज कुमार, सुनील दत्त, धर्मेंद्र, राजेश खन्ना, फिरोज खान, शशि कपूर और अमिताभ बच्चन शामिल हैं। भले ही बाद में मोहम्मद रफी अभिनेता दिलीप कुमार की आवाज बन गए थे, लेकिन उनकी कई शुरुआती फिल्मों में उनके गीतों के लिए भी मुकेश की आवाज का ही इस्तेमाल हुआ था (अंदाज, मेला, यहूदी और मधुमती आदि फिल्में)। राज कपूर तो कहते थे 'मैं शरीर हूं और मुकेश मेरी आत्मा'। यही वजह है कि 27 अगस्त 1976 को जब डेट्रॉइट (अमेरिका) से मुकेश के आकस्मिक निधन का दुखद समाचार आया तो राज कपूर के कांपकांपाते होठों से बस यही निकला -'मेरी तो आवाज ही चली गई'।

संगीतकारों की बात करें तो मुकेश संगीतकारों की लगभग सभी जोड़ियों के चहेते गायक थे। शंकर-जयकिशन, कल्याणजी-आनंदजी, हुस्नलाल-भगतराम और लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल ही नहीं खैय्याम-ओमी और सचिन-जगमोहन भी मुकेश की प्रेमरस में पगी, माधुर्य से भरी और दर्द में डूबी आवाज को ही पसंद करते थे। इन जोड़ियों के अलावा मुकेश ने रोल्टन एस के जिन संगीतकारों की धुनों को अपनी आवाज से संवारा, उनमें अनिल बिस्वास, खैयाम, सचिन देव बर्मन, सलिल चौधरी, बसंत देसाई, राहुल देव बर्मन, रोशन और सरदार मलिक जैसे नाम शामिल हैं। मुकेश हालांकि अनिल बिस्वास, नौशाद और खैयय्याम प्रकाश जैसे संगीतकारों के साथ पहले ही काम कर चुके थे, लेकिन सोने को सुहागा तब हुआ जब उन्होंने राज कपूर की आवाज बनकर शंकर-जयकिशन के निर्देशन में शैलेंद्र और हसरत जयपुरी जैसे गीतकारों के गीतों को अपने सुरों से सजाना शुरू किया। इस टीम ने फिल्म 'बरसात' (1949) से बरसना शुरू किया था और लगभग 3 दशक तक धुंआधार बरसते रहे। 'आवारा', 'श्री 420', 'जिस देश में गंगा बहती है', 'संगम' और 'मेरा नाम जोकर' में मुकेश के गाए गीत फिल्मों से भी अधिक लोकप्रिय साबित हुए। फिल्म 'आवारा' का शीर्षक गीत 'आवारा हूं, या गर्दिश में हूं आसमान का तारा हूं' और फिल्म 'श्री 420' का 'मेरा जूता है जापानी' तो भारतीय ट्रस्टियों को आज लगभग 7 दशक बाद भी रूस की सड़कों पर सुनने को मिल जाते हैं। मुकेश को 1 बार राष्ट्रीय पुरस्कार और 4 बार फिल्मफेयर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जिस गीत के लिए मुकेश को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार हासिल हुआ, वह है- 'कई बार यूं ही देखा है' (फिल्म रजनीगंधा 1974)। जिन 4 गीतों के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार प्राप्त हुए, वे हैं- 'यस कुछ सीखा हमने न सीखी होशियारी' (अनाड़ी 1959), 'सबसे बड़ा नादान वही है' (पहचान 1970), 'जय बोलो बेईमान की' (बेईमान 1972) और 'कभी-कभी मेरे दिल में' (कभी-कभी 1976)।

उल्लेखनीय है कि ये चारों ही गीत अपनी-अपनी फिल्मों के शीर्षक गीत यानी टाइटल सॉन्ग हैं। यह भी सच है कि भले ही मुकेश का दर्द भरे गीतों का बेताज बादशाह कहा जाता है, लेकिन उन्हें ज्यादातर पुरस्कार हल्के-फुल्के गीतों के लिए ही दिए गए। वैसे अपने दर्द भरे स्वर से श्रोता के मन को ही नहीं, आत्मा को छू लेने वाले इस महान गायक ने एक बातचीत में खुद कहा था कि अगर मुझे कभी एक ओर 10 हल्के-फुल्के गीत गाने की पेशकश हो और दूसरी ओर सिर्फ 1 दर्द भरा गीत हो तो मैं दर्द भरे गीत को चुनूंगा। वही रोमांटिक गीतों की बात करें तो मुकेश के गाए अनेक गीत आज भी लोगों के होठों पर बरबस आ जाते हैं। जैसे कि 'मेरे मन की गंगा और तेरे मन की जमना का' (संगम), 'चांद-सी महबूबा हो मेरी' (हिमालय की गोद में), 'जो तुमको हो पसंद' (सफर) या 'चंदन-सा बदन, चंचल चितवन'(सरस्वतीचंद्र)।

आपकी राय

हमारे सपनों पर किसका हक?

पिछले हफ्ते हमने 'सपना अपना हो, ना कि अपनों का' लेख प्रकाशित किया था और आपकी राय मांगी थी। हमें ढेरों जवाब मिले, उनमें से चुनिंदा जवाब यहां प्रकाशित किए जा रहे हैं:

बात सही नहीं

अकेले नहीं जी सकते

अगर इंसान अपने सपने के साथ अपनों को इस तरह सहमत कर ले कि वह स्वार्थी न लगे तो अच्छा है। सिर पर मां-बाप का हाथ हो तो वह सपना पूरा करने से मिली खुशी के क्या कहने! आखिर मनुष्य अकेला नहीं जी सकता।

-सुषमा आहूजा

परिवार और समाज साथ हो

यह बात सही है कि इंसान को अपने सपनों को जीना चाहिए। लेकिन यह भी सच है कि समाज और परिवार के सहयोग से ही कोई शख्स आगे बढ़ता है। इसलिए अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला नहीं झाड़ना चाहिए।

-दीपाली जैन

समाज के उलट है यह सोच

किसी को भी सफल भाई-बहन या रिश्तेदारों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। लेकिन यह भी सच है कि समाज और परिवार के सहयोग से ही कोई शख्स आगे बढ़ता है। इसलिए अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला नहीं झाड़ना चाहिए। यह सोच कहना ठीक नहीं कि आपका जन्म अपने माता-पिता और परिवार सहित दूसरों को कोई खुशी, कोई आराम, कोई सेवा देने के लिए नहीं हुआ है। यह हमारे समाज के उलट है।

-राजीव गुप्ता

...तो पैरंट्स अपने लिए ही सोचते

अगर पैरंट्स भी खुद के लिए ही सपना देखते और अपने ऐशो-आराम में ही व्यस्त रहे होते, हमारा पालन-पोषण न करते तो क्या आज हम इस दुनिया में खुद के लिए सपना देख पाते। माता-पिता को देवता तुल्य माना जाता है। उनके लिए हम सपना न देखें तो यह गलत होगा।

-जय गोविंद मिश्रा

क्या अकेले सपने पूरे होंगे?

कुदरत में कई उदाहरण हैं कि पौधे साथ-साथ तो बढ़ते हैं लेकिन एक पौधे को दूर किया जाए तो अकेला रहनेवाला पौधा कुछ समय में सूख जाता है। इसी तरह अगर आज हमने परिवार की परवाह नहीं की और कल किसी वजह से बीमार पड़े और अस्पताल जाना पड़ा तो कौन देखभाल करेगा? मिल-जुलकर चलने में ही असली आनंद है।

-नवीन कत्याल

सपनों से जुड़ा है परिवार

अगर हम सफल या असफल होते हैं तो उसके सुख-दुख में हमारा परिवार भी शामिल होता है। क्या बच्चों के सपनों के दायरे में उनका परिवार और समाज नहीं आता? अगर आपके सपनों के दायरे में आपका परिवार नहीं है तो वे सपने अधूरे हैं और आप स्वार्थी हैं।

-पंकज चंदवाल

सही है बात

बच्चों को मिले खुला आसमान

इस लेख ने यह सोचने को मजबूर किया कि हम जो कुछ अपने जीवन में नहीं पा सके (उसकी वजह या परिस्थितियां चाहे कुछ भी रही हों), हमें कोई अधिकार नहीं है कि मौजूदा पीढ़ी या अपने बच्चों पर उसे थोपने का। बल्कि हमें उन्हें यह पंख देना चाहिए कि वे खुले आसमान में उड़ सकें और अपनी मंजिल हासिल कर सकें। हां, जब भी बच्चों को मार्गदर्शन की जरूरत हो तो जरूर दें।

-विनोद कुमार

पैरंट्स क्यों तय करें हमारे सपने

जब तक यह समझने की उम्र होती है कि हमारा सपना क्या है और हमें जीवन में क्या करना है तब तक तो बहुत देर हो चुकी होती है। हमारे माता-पिता हमारे लिए सपने तय कर चुके होते हैं। माता-पिता बचपन से ही बच्चों पर उनकी पसंद की नहीं बल्कि अपनी पसंद की पढ़ाई चुनने का दबाव डालते हैं। कुछ जिद्दी और हिम्मती लोग बगावत करते हैं। कुछ कामयाब हो पाते हैं और कुछ नहीं।

-विजय लक्ष्मी शर्मा

अपने सपने में हैं सुख

सपना हमारी आकांक्षाओं का वह गुच्छा है जिसके केंद्र में सुख बसता है। उसकी लालसा में ही हम सपने देखते हैं और इसका सुख सबसे पहले खुद को ही मिलता है। एक छात्र को नौकरी का सपना बेचैन करता है। उसे सपने की कामयाबी की खातिर उद्योजदर करनी है तो सपना भी उसी का होना चाहिए। माता-पिता, भाई-बहन का सपना किसी खास मकसद पर थोपा जाए तो सपना टूट सकता है।

-मामचंद सागर

आर.एन.आई. नं. DELBIL/2004/13076 सर्कुलेशन सुपरिंटेंडेंट। लिथो प्रिंटर्स प्रा. लि. प्लॉट नं. 7, सेक्टर-140, नोएडा-201305 के लिए राजीव चंदन द्वारा मुद्रित और टाइम्स हाउस, प्लॉट नं. 7, सेक्टर-140, नोएडा-201305 के लिए राजीव चंदन द्वारा प्रकाशित। टाइम्स हाउस, प्लॉट नं. 7, सेक्टर-140, नोएडा-201305 से प्रकाशित तथा एडिटोरियल एवं एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिस: टाइम्स हाउस, प्लॉट नं. 7, सेक्टर-140, नोएडा-201305 में मुद्रित। संपादक: एन.के. सिंह। संपादकीय कार्यालय : टाइम्स हाउस, प्लॉट नं. 7, सेक्टर-140, नोएडा-201305। किराया दिल्ली में : 7 रु.(सभी वस्तुओं पर), किराया मेरठ में मुद्रण : संपादक: नेवाली ± 8 रु., हरियाणा : नेवाली ± 8 रु. स्थानीय समाचारपत्र* (हिंदी) : दरियाल निवास। *मुद्रण क्षेत्र में प्रकाशित समाचार अखबारों के भाषण एवं संपादन हेतु ही है। आर.सी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी।

ग्लोबल वार्मिंग को ध्यान में रखकर बना रहे धरती माता को हरा-भरा: मुख्यमंत्री

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ गोरखपुर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कभी अत्यधिक गर्मी तो कभी अतिवृष्टि और कभी असमय बाढ़ भविष्य के प्रति आगाह करने वाली तथा ग्लोबल वार्मिंग की चेतावनी है। इस चेतावनी का संज्ञान लेकर हम धरती माता को फिर से हरा-भरा बनाने के संकल्प को पूरा करने में जुटे हैं। इस संकल्प की कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर सरकार ने व्यापक जनसहभागिता से उत्तर प्रदेश एक दिन में 36.50 करोड़ पौधरोपण का लक्ष्य हासिल कर नया कीर्तिमान रच दिया है। मुख्यमंत्री ने इस नए रिकॉर्ड के लिए सभी प्रदेशवासियों को बधाई दी है।

सीएम योगी शनिवार शाम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर 'एक पेड़ मां के नाम' को समर्पित 'पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ वृक्षारोपण जन अभियान-2024' के अंतर्गत शनिवार शाम शहीद अशफाक उल्ला खां प्राणी उद्यान (गोरखपुर चिड़ियाघर) में पारिजात पौध का रोपण करने के बाद यहां आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने पर्यावरण में आ रहे परिवर्तन की चर्चा करते हुए कहा कि इस वर्ष की गर्मी लोगों को लंबे समय तक याद रहेगी। अमूमन गोरखपुर और आसपास के जिलों में 42-43 डिग्री तापमान रहता था लेकिन इस वर्ष तापमान 46-47 डिग्री तक पहुंच गया। अत्यधिक गर्मी, भीषण लू, अतिवृष्टि, असमय बाढ़, कभी सूखा पड़ जाना, ये सभी ग्लोबल वार्मिंग की तरफ ध्यान आकृष्ट करते हैं। गत वर्ष अक्टूबर में बाढ़ आई जबकि पहले अधिकतम 15 सितंबर तक बाढ़ आती थी।

सीएम योगी ने कहा कि कभी जुलाई के प्रथम सप्ताह में बाढ़ नहीं आती थी। पर, इस वर्ष जुलाई के प्रथम सप्ताह में बाढ़ आई और इससे प्रदेश के 24 जिले प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि मौसम में यह बदलाव भविष्य के प्रति आगाह करने वाला है। हमें समय रहते

सुधार करना होगा अन्यथा प्रकृति अपने हिसाब से सुधार करेगी। प्रकृति की इस चेतावनी का संज्ञान लेकर आज पूरे प्रदेश में जनता जनार्दन की सहभागिता से रिकॉर्ड पौधरोपण किया गया है। पीएम मोदी के आह्वान पर एक पेड़ मां के नाम का अनुसरण करते हुए प्रदेश में हर व्यक्ति, संस्था, विभाग इस पवित्र कार्य से जुड़े हैं। राज्य में एक व्यक्ति की तरफ से मां के नाम तीन-तीन पेड़ लगाए गए हैं। हर तरफ एक ही आह्वान नजर आया, पेड़ लगाना है, पेड़ बचाना है और पर्यावरण को बचाना है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि विगत सात वर्ष में प्रदेश में 168 करोड़ पौधरोपण कर कीर्तिमान रचा गया है। इनमें से 75-80 प्रतिशत पेड़ सुरक्षित भी हैं। कहीं नक्षत्र वाटिका बनाई गई है तो कहीं नवग्रह वाटिका और हरिशंकरी वाटिका।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में पौधों की कमी नहीं है। वन व उद्यान विभाग तथा निजी नर्सरियों के पास 50 करोड़ पौधे थे। इनमें से 36.50 करोड़ का इस्तेमाल आज के अभियान में हुआ है और शेष पौधों का भी क्रमिक रोपण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि अब वैश्विक संस्थाएं भी उत्तर प्रदेश में पौधरोपण को मान्यता दे रही हैं। उन्होंने कहा कि कार्बन उत्सर्जन से पर्यावरण को क्षति हो रही है। उसके बचाव के लिए किसानों ने पेड़ लगाने के साथ ही कार्बन क्रेडिट अभियान के साथ अपना पंजीकरण कराया। सरकार के प्रयास से उत्तर प्रदेश के 25 हजार किसानों को कार्बन क्रेडिट के लिए 200 करोड़ का अनुदान प्राप्त हो रहा है। सीएम योगी ने कहा कि 50 साल पहले लखनऊ में कुकरैल नदी का गोमती नदी में संगम होता था। 50 सालों में इसे पाटकर भूमाफियाओं ने कब्जा कर लिया। वहां बांग्लादेशी और रोहिंग्या तक बस गए। कुकरैल नदी को उसका स्वरूप देने के लिए सरकार को बड़े पैमाने पर अभियान चलाना पड़ा। सुप्रीम कोर्ट तक जाना पड़ा। अब कुकरैल नदी को इको टूरिज्म के स्पॉट के रूप में निखारा जा रहा है। वहां भगवान श्रीराम के छोटे भाई लक्ष्मण जी के नाम पर सौमित्र वन बसाया जा रहा है।

सीएम योगी ने गोरखपुर के गोड़धोइया नाला परियोजना का उल्लेख करते हुए कहा कि इससे जलनिकासी की समस्या का समाधान होगा। नालों से अतिक्रमण हटेगा तभी शहरों में जलभराव को दूर किया जा सकेगा। उन्होंने आमजन से अपील की कि कभी भी गलत को प्रश्रय नहीं देना है। सीएम योगी ने कहा कि गोरखपुर के चिड़ियाघर को काकोरी कांड के नायकों में शामिल शहीद अशफाक उल्ला खान के नाम पर नामकृत किया गया है। यह चिड़ियाघर मनोरंजन और ज्ञानवर्धन का माध्यम है। यहां पौधरोपण कर चिड़ियाघर के पर्यावरण को वन्यजीवों के अनुकूल किया जा रहा है।

सरोजनीनगर विधायक ने एससीआर की अधिसूचना जारी होने पर जताया मुख्यमंत्री योगी का आभार

● डॉ. राजेश्वर सिंह ने 15 जून 2022 को सीएम को पत्र लिखकर प्रस्तुत की थी एससीआर की परिकल्पना, अधिसूचना जारी होने पर व्यक्त की खुशी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश में राज्य राजधानी क्षेत्र की अधिसूचना जारी होने पर सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने ट्वीट कर खुशी जताते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का हृदय तल से आभार व्यक्त किया।

अपने आधिकारिक एक्स (ट्विटर) पर पोस्ट कर डॉ. सिंह ने इसे ऐतिहासिक निर्णय और अभिनंदनीय पहल बताते हुए लिखा कि दिनांक 15 जून 2022 को मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर राज्य राजधानी क्षेत्र (एससीआर) की परिकल्पना प्रस्तुत की थी। लखनऊ सहित समीपवर्ती 6 जनपदों- लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, हरदोई, सीतापुर, बाराबंकी के क्षेत्रों को मिलाकर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) की तर्ज पर राज्य राजधानी क्षेत्र (एससीआर) के गठन की अधिसूचना जारी हो गई है। एससीआर के अंतर्गत 27,826 वर्ग किलोमीटर का यह विस्तृत क्षेत्र अत्याधुनिक ट्रांसपोर्ट, ई-फ्रास्ट्रक्चर सुविधाओं के साथ औद्योगिक व अन्य व्यावसायिक गतिविधियों का केंद्र बनेगा। सरोजनीनगर विधायक ने एससीआर के गठन को दूरदर्शी निर्णय बताया और लखनऊ परिक्षेत्र एवं उत्तर प्रदेश के सर्वांगीण उन्नति को समर्पित दूरदर्शी निर्णय के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आभार व्यक्त किया।

व्यापारियों की समस्याएं प्राथमिकता से दूर की जाएंगी: ब्रजेश पाठक

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश कपड़ा उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के पदाधिकारियों ने शनिवार को उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने भेंट की। पदाधिकारियों ने उन्हें व्यापार से संबंधित समस्याएं बताईं और छह सूत्रीय मांगों से संबंधित ज्ञापन सौंपा।

उत्तर प्रदेश कपड़ा उद्योग व्यापार प्रतिनिधिमंडल अध्यक्ष अशोक मोतियानी, महामंत्री अनिल बजाज के नेतल में उपमुख्यमंत्री से मिलने उनके आवास पर पहुंचा। प्रतिनिधिमंडल में मुख्य रूप से व्यापारी नेता श्याम कृष्णानी, सुशील गुरनानी, प्रभु जालान, पुनीत लाल चंदानी, घनश्याम दास , पप्पू ग्रोवर, हरीश चुग, मनीष सलूजा शामिल थे।

ज्ञापन के माध्यम से मांग की गई है कि उत्तर प्रदेश प्रदेश में व्यापारी कल्याण बोर्ड का आयोग का गठन किया जाना चाहिए। जिससे प्रदेश सहित देश के व्यापारियों की समस्याओं का समाधन एक ही प्वाइंट पर हुआ करे। जिसका अध्यक्ष/ चेयरमैन व्यापार मंडल से होना चाहिए। पूजा सामग्री में इस्तमाल होने वाले सस्ते कपड़ों और अंतिम यात्रा में इस्तेमाल होने वाले कपड़ों को जीएसटी मुक्त किया जाना चाहिए। जीएसटी में रजिस्टर हर उद्य के व्यापारियों को 14 करोड़ रुपये का स्वास्थ बीमा मिलना चाहिए। कपड़ों व रेडीमेड गारमेण्ट, पॉलिस्टर धागे पर जीएसटी पांच प्रतिशत होनी चाहिए। मौजदा समय में रेडीमेड गारमेण्ट व पॉलिएस्टर यान धागे पर 12 प्रतिशत जीएसटी है जबकि कपड़ों पर 5 प्रतिशत जीएसटी लागू है। व्यापारिक संगठनों के साथ तीन माह में एक बैठक पार्टी कार्यालय में होनी चाहिए, जिसमें पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष या उप मुख्यमंत्री को व्यापारिक समस्याओं से अवगत कराया जा सके।

43 बीएच एमएसमई में रजिस्टर व्यापारियों को पेमेंट देने का दायरा 45 दिनों से बढ़ाकर 90 दिन किया जाना चाहिए जिससे रिटेल सेक्टर को राहत मिल सके।

तीन नए आपराधिक कानूनों पर कार्यशाला का समापन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कुलाधिपति सतीश चंद्र मिश्रा, प्रति कुलाधिपति कपिल मिश्रा एवं कुलपति डॉ प्रशांत त्रिवेदी के मार्गदर्शन में टी.एस मिश्रा विश्वविद्यालय में शनिवार को तीन नए आपराधिक कानून पर कार्यशाला का समापन हुआ। कार्यशाला में पहले दिन के प्रमुख वक्ता जामिया मिलिया विश्वविद्यालय दिल्ली के प्रोफेसर असद मलिक तथा दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रोफेसर वागेश्वरी देशवाल थी। आज की प्रमुख वक्ता बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय के सेटर फार पोस्टग्रेजुएट लीगल स्टडीज की डायरेक्टर प्रोफेसर प्रीति सक्सेना एवं उसी विश्वविद्यालय के स्कूल आफ लीगल स्टडीज की अधिष्ठाता प्रोफेसर प्रीति मिश्रा थी।

प्रोफेसर प्रीति सक्सेना ने उन कानून की प्राथमिकताओं के बारे में चर्चा की जो कि दंड की बजाय न्याय प्रदान करते हैं तथा संवैधानिक प्रावधानों को कानून की मूलभूत तिकड़ी से जोड़ते हैं। प्रोफेसर प्रीति मिश्रा ने पीड़ित केंद्रित दृष्टिकोण के माध्यम से आपराधिक न्याय प्रणाली के कार्यान्वयन पर विचार करके नए कानून के प्रवर्तन के बारे में बताया। प्रोफेसर सीपी सिंह ने दोनों अतिथियों एवं सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए यह कहा की सरकार द्वारा तीन पुराने ड्रैकोनियन कानूनों को निरस्त करके तीन नए आपराधिक कानूनों को लाना एक सराहनीय कार्य है। इन कानूनों के लागू होने से जहां एक और अधिकतम 3 वर्ष में न्याय प्राप्त होगा वहीं दूसरी ओर अपराधियों की दोष सिद्ध की दर में वृद्धि होगी परंतु झूठी एफ .आई .आर .करना, झूठी गवाही देना, झूठी चार्ज शीट फाइल करना, दहेज अधिनियम एवं अनुसूचित जाति जनजाति अधिनियम के दुरुपयोग आदि को भारतीय न्याय संहिता में अपराध घोषित नहीं किया गया है इन्हें अपराध घोषित करने पर मुकदमों की संख्या में कमी आएगी। इसके अतिरिक्त नार्को पॉलीग्राफिक ब्रेन मैपिंग टेस्ट को अनिवार्य किया जाना चाहिए और इसकी रिपोर्ट को विधिपूर्ण साक्षी माना जाना चाहिए उनका यह भी कहना था कि पुलिस अधिनियम 1861 को निरस्त करके नया पुलिस अधिनियम बनाया जाना चाहिए।

महापौर ने अधिकारियों को हास्टल चलाने वालों से कामर्शियल हाउस टैक्स वसूलने के दिए निर्देश

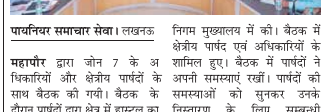

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

महापौर द्वारा जोन 7 के अधिकारियों और क्षेत्रीय पार्षदों के साथ बैठक की गयी। बैठक के दौरान पार्षदों द्वारा क्षेत्र में हास्टल का प्रयोग कर रहे हैं, लेकिन टैक्स रेजीडेंसियल देने की बात कही। महापौर द्वारा अधिकारियों को पार्षदों के सहयोग से हाउस टैक्स हास्टल चलाने वालों से कामर्शियल लेने के आदेश दिए गए। साथ ही महापौर द्वारा अधिकारियों को नवनिर्मित सड़कों की पट्टिका लगाने के निर्देश दिए गए हैं।

शनिवार को महापौर सुषमा खर्कवाल ने नगर निगम के जोन 7 की समीक्षा बैठक लालबाग के नगर निगम मुख्यालय में की। बैठक में क्षेत्रीय पार्षद एवं अधिकारियों के शामिल हुए। बैठक में पार्षदों ने अपनी समस्याएं रखीं। पार्षदों की समस्याओं को सुनकर उनके निस्तारण के लिए सम्बन्धी अधिकारियों को निर्देशित किया। बैठक में महापौर ने पेसे घर जिनका इस्तेमाल लोग हॉस्टल के रूप में कर व्यापार कर रहे हैं, उन्हें चिन्हित कर ऐसे ग्रह स्वामियों से हाउस टैक्स के बजाय कॉमर्शियल टैक्स वसूल किए जाने के निर्देश जारी किए। इसके अतिरिक्त वार्ड में अधिकारी या कर्मचारीयों के किये जा रहे कार्य की पूर्व सूचना पार्षद को दिए जाने एवं उन कार्यों को करने से पूर्व पार्षदों के सुझाव लिए जाने के निर्देश दिए।

नेशनल एनेस्थीसिया व ऑपरेशन थिएटर टेक्नोलॉजिस्ट दिवस मनाया गया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

संजय गांधी पीजीआई के एनेस्थीसिया विभाग में आठवां नेशनल एनेस्थीसिया एवं ऑपरेशन थिएटर टेक्नोलॉजिस्ट दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि संस्थान के निदेशक पद्मश्री प्रोफेसर राधा कृष्ण धीमन, विभागाध्यक्ष एनेस्थीसिया प्रोफेसर प्रभात तिवारी, सीएमएस प्रोफेसर संजय धीराज तथा मेडिकल सुपरीटेंडेंट प्रोफेसर वी के पालीवाल जी की विशिष्ट उपस्थिति रही।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक ने एनेसथीसिया और ओटी टेकनीशियनों द्वारा किए गए कार्यों एवं भूमिका को सराहा। प्रोफेसर प्रभात तिवारी ने ओपन हार्ट सर्जरी के दौरान एनेस्थीसिया के चिकित्सकों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली ट्रांस एसोफेगल इको उपकरण के रखरखाव में तकनीकी दक्षता के बारे में बताया। मुख्य चिकित्सा अधीक्षक प्रोफेसर संजय धीराज ने ऑपरेशन थिएटर असिस्टेंट के वर्क कल्चर व ओरिएंटेशन कोर्स के महत्व के बारे में बताया। चिकित्सा अधीक्षक प्रोफेसर वी के पालीवाल ने एनेसथीसिया और ओ टी तकनीशियनों द्वारा परदे के पीछे रहकर किये जाने वाले तकनीकी योगदान की प्रशंसा की।

सचिव, राजीव सक्सेना ने एनेस्थीसिया टेक्नीशियन के द्वारा किए जाने वाले क्रियाकलापों, मशीनों के रखाव संबंधित और सर्जरी के दौरान उनकी भूमिका के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक द्वारा सरस्वती पूजा और दीप प्रज्ज्वलित करके की गयी। इस अवसर पर सरस्वती वंदना में विभाग की श्रद्धा , रुचि ,प्रिया ,शिवानी, मीनू सिंह, प्रमिला तथा आयुषी ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान प्रोफेसर देवेंद्र गुप्ता, डाक्टर आशीष कनौजिया ,डा सुजीत सिंह गौतम, डा अमित रस्तोगी और डा रुद्राशीष हलदार उपस्थित रहे।

कुशवाहा महासभा ने ली आगामी चुनाव में सकारात्मक परिणाम लाने की शपथ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

अखिल भारतीय कुशवाहा महासभा उत्तर प्रदेश ईकाई की कार्यकारिणी समिति एवं प्रदेश के समस्त जनपद के जिला अध्यक्षों व सदस्यों की एक संयुक्त बैठक गोमती नगर शहीद पथ स्थित एक होटल में संपन्न हुई। इस दौरान राष्ट्रीय प्रधान महासचिव नीरज कुशवाहा ने बैठक की अध्यक्षता करते हुए आगंतुक जिला अध्यक्षों से जनपदों के चुनाव घोषित करने की तिथि निर्धारण हेतु निवेदन किया। प्रदेश महासचिव सुरेन्द्र कुशवाहा ने गत लोकसभा के स्वजातीय उम्मीदवारों की विजय होने की बधाई देने के साथ ही आगामी विधानसभा चुनावों में यूपी के चिन्हित करीब 70-80 विधानसभाओं को केन्द्रित कर करीब ढाई वर्षों तक स्वजातीय उम्मीदवारों की तैयारी करने का प्रस्ताव रखा। झांसी से आए उपाध्यक्ष विजय कुशवाहा एडवोकेट ने बुंदेलखण्ड में राष्ट्रीय सचिव गजेन्द्र कुशवाहा के साथ मिलकर आगामी विधानसभा में साकारात्मक परिणाम लाने की शपथ ली। लखनऊ की जिला इकाई के अध्यक्ष मूल चन्द्र मौर्य एवं महासचिव आनंद मौर्य ने आगामी माह में जनपद में एक वृहत सामाजिक कार्यक्रम जिसमें मेधावी छात्रों का सम्मान एवं गत लोकसभा में विजयी स्वजातीय समाज के सांसदगणों का सम्मान किया जायेगा। बैठक की समापन पर राष्ट्रीय प्रधान महासचिव में अखिल भारतीय कुशवाहा महासभा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष के विरुद्ध रोहिणी कोर्ट में उनके द्वारा गबन, कार्यवाही रजिस्टर से छेड़छाड़ एवं विभिन्न मामलों में दर्ज कोर्ट केस की स्थिति की जानकारी दी तथा महासभा को विश्वास दिलाया कि जल्द ही उनके द्वारा नकद 4.0 लाख रूपये कोर्ट के माध्यम से वापस लिए जाएंगे।

महासभा की राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष यशोदा कुशवाहा एवं नवनियुक्त यूपी के युवा अध्यक्ष सुधाकर सिंह कुशवाहा का महासभा ने सम्मान कर बधाईयां दी। यशोदा ने मध्यप्रदेश एवं हरियाणा की महिला अध्यक्ष की नियुक्ति उपरान्त यूपी की महिला अध्यक्ष की घोषणा करने का आश्वासन दिया। सुधाकर सिंह ने युवावर्ग को सामाजिक सेवा की तरफ केन्द्रित कर जल्द ही युवा संगठन को पूरे प्रदेश में विस्तार करने का आश्वासन दिया।

अमित वर्मा बने लखनऊ के ज्वाइंट पुलिस कमिश्नर कानून-व्यवस्था

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

शासन ने ईओडब्ल्यू में तैनात वर्ष 2008 बैच के आईपीएस अमित वर्मा को लखनऊ पुलिस कमिश्नरेट में ज्वाइंट पुलिस कमिश्नर कानून-व्यवस्था के पद पर तैनाती दी है। अभी तक यहां तैनात उपेंद्र कुमार अग्रवाल को ईओडब्ल्यू स्थानांतरित किया गया है। अग्रवाल पिछले कुछ समय से चिकित्सा अवकाश पर चल रहें हैं। इसके अलावा डीजीपी मुख्यालय में तैनात संतोष कुमार मिश्र को एसपी प्रशिक्षण एवं सुरक्षा, लखनऊ के पद पर नई नियुक्ति प्रदान की गई है।

हरियाली बढाने की मुहिम ने पकड़ी रफ्तार, अफसरों ने भी मां के नाम रोपे पौधे

संवाददाता। मोहनलालगंज

एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत शनिवार को मोहनलालगंज की सभी 78 ग्राम पंचायतों में दो लाख सात हजार चार सौ सत्तर पौधरोपण का लक्ष्य प्राप्त करने के व्यापक पौधरोपण महा अभियान का आगाज किया गया। डीसी मनरेगा एसके सिंह बीडीओ आशुतोष श्रीवास्तव व ज्वाइंट बीडीओ अमित सिंह और एपीओ उदयराज शर्मा की अगुवाई में सभी तकनीकि सहायक और सचिवों ने ग्राम प्रधानों के साथ अभियान में हिस्सा लिया।

इस दौरान मनरेगा श्रमिकों के जरिए पहले से तैयार गड्ढों में विभिन्न प्रकार के पौधे रोपे गए। बीडीओ आशुतोष श्रीवास्तव ने बताया अमरूद अर्जुन इमली जामुन बरगद पीपल नीम सागौन पाकड़ शीशम और जंगल जलेबी समेत अनेक प्रकार के पौधे लगाए जा रहे हैं। इन पौधों की देखरेख के लिए इस बार तीन वर्ष तक ग्राम पंचायतों को जिम्मेदारी दी गई है। पौधों की देखरेख और सिंचाई के लिए मनरेगा श्रमिक लगाए जाएंगे। इसके अतिरिक्त सचिव और तकनीकि सहायक खुद पौधरोपण की निगरानी रखेंगे। जिसकी ब्लॉक स्तर से भी प्रतिमाह रिपोर्ट ली जाएगी।

अफसरों ने सबस्टेशन पर किया पौधरोपण

एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत मोहनलालगंज के एक्सइएन एसके अग्रवाल ने शनिवार को एसडीओ एसवी यादव और जेई आशुतोष कुमार के साथ मोहनलालगंज ओल्ड सबस्टेशन पर शीशम और अमरूद के पौधे लगाए। एक्सइएन ने बताया सभी सबस्टेशन पर शनिवार को सुबह से ही पौधरोपण की मुहिम चलाई गई। जिसके तहत जेई और एसडीओ की अगुवाई में प्रत्येक सबस्टेशन पर एक सौ पौधे लगाए गए। कर्मचारियों को रोपे गए पौधों की देखरेख और सिंचाई की भी जिम्मेदारी दी गई है।

अतिक्रमण के दानव का हुआ अंत, पंचायत ने लहलहा दी पौधरोपण की हरियाली

मोहनलालगंज। रातों में जहां सरकारी भूमि पर अतिक्रमण की भरमार थी। शनिवार को पौधरोपण के बाद हरियाली लहलहाने लगी। तकनीकि सहायक राजकिशोर शुक्ल और सचिव अनुज त्यागी की अगुवाई में मनरेगा श्रमिकों ने सैकड़ों फलदार पौधे लगाकर ग्रामीणों के लिए पोषण वाटिका की बुनियाद रख दी। मोहनलालगंज की ग्राम पंचायत रातीं में एक हेक्टेअर से अधिक सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा कर खेती की जा रही थी। शिकायत के बाद राजस्व टीम ने निशानदेही कर सरकारी भूमि से अतिक्रमण खाली करा दिया। ग्राम पंचायत की पहल पर शनिवार को इसी भूमि में से तकरीबन दो बीघे जमीन पर अमरूद के पौधे दो सौ पौधे लगाकर फल वाटिका लगाई गई। जबकि शेष तीन बीघे भूमि पर दो हजार अन्य पौधे लगाए गए हैं। तकनीकि सहायक राजकिशोर शुक्ल ने बताया अतिक्रमण मुक्त कराई गई भूमि पर फल वाटिका और वानर वाटिका की बुनियाद रखी गई है। पौधों की सिंचाई और देखरेख के लिए केयर टेकर भी रखा गया है।

डेबरिया और परसपुर में पोषण वाटिका की रखी नींव

मोहनलालगंज की ग्राम पंचायत डेबरिया भरोसवा और परसपुर थट्ठा में शनिवार को पोषण वाटिका व औषधीय वाटिका की नींव रखी गई। डेबरिया भरोसवा में जहां लेमनग्रास एलोवेरा अजवाइन तुलसी अमरूद और आंवला के ढाई सौ से अधिक पौधे रोपे गए हैं। वहीं परसपुर थट्ठा में अमरूद आंवला इमली जामुन व जंगल जलेबी के पौधे लगाए गए हैं। शनिवार को डीसी मनरेगा एसके सिंह बीडीओ आशुतोष श्रीवास्तव और ज्वाइंट बीडीओ अमित सिंह ने एपीओ उदयराज शर्मा के साथ डेरिंग पंचायतों में पहुंचकर पौधरोपण अभियान में भाग लिया। अफसरों ने पौधों की देखरेख में कोताही न बरतने की हिदायत दी।

नाबार्ड के उपप्रबन्ध निदेशक डॉ. एके सूद का ने किया मुबारकपुर पैक्स, बाराबंकी का दौरा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के उप प्रबन्ध निदेशक, डॉ एके सूद ने शनिवार को जनपद बाराबंकी में स्थित मुबारकपुर पैक्स का दौरा किया। इस कार्यक्रम में उपस्थित अन्य गणमान्य नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक, आर्यावर्त बैंक के अध्यक्ष, संतोष एस. एवं उत्तर प्रदेश को ऑपरेटिव बैंक लि. के अपर प्रबन्ध निदेशक श्री सतीश चन्द्र मिश्रा शामिल थे। इस कार्यक्रम में बैंकर्स, स्वयं सहायता समूह के सदस्यों, किसान उत्पादक संगठनों, पैक्स मेम्बर्स, आदि सहित प्रमुख हितकारों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के आरंभ में संतोष एस, आर्यावर्त बैंक के अध्यक्ष ने उप प्रबन्ध निदेशक, नाबार्ड का स्वागत किया और नाबार्ड की योजनाएँ जो ग्रामीण विकास के लिए बनीं हैं, उनके लिए नाबार्ड की भूमिका को सराहा। कार्यक्रम में उप प्रबन्ध निदेशक, नाबार्ड के कर कमलों द्वारा केन्द्रीय सरकार की विभिन्न योजनाओं जैसे कृषि अवसंरचना निधि (एआईएफ) , प्रधान मंत्री सूम खाद्य उन्नयन योजना (पीएम एफ एम ई), एन आर एल एम एवं कृषि विपणन अब संरचना (एएमआई) फंड के अंतर्गत आर्यावर्त बैंक द्वारा वित्तपोषित लाभार्थियों को स्वीकृति पत्र प्रदान किए गए। तद्पश्चात फिनो पेमेंट्स बैंक के पाँच व्यावसायिक प्रतिनिधियों को नाबार्ड के वित्तीय समावेशन कोश में अनुदानित माइक्रो-एटीएम भी प्रदान किए गए। अपने मुख्य सम्बोधन में डॉ सूद ने आर्यावर्त बैंक, डीसीसीबी, एवं पैक्स के अधिकारियों को धन्यवाद किया तथा उनके द्वारा ग्रामीण विकास के लिए किए जा रहे कार्य की सराहना और प्रशंसा की। उन्होने कहा की क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक और सहकारी बैंक लघु एवं माध्यम कृषकों की जरूरतों को समझते हैं एवम् उनकी मदद भी करते हैं।

वाइकिंग लड़ाके हमले और लूट बंद करने के लिए अथेराल्ड से फिरौती मांगने लगे हैं। मजबूर राजा को यह समझौता करना पड़ा है। अथेराल्ड बुरी तरह परेशान है। खजाना खाली है, फिरौती कहां से दी जाए? किंग अथेराल्ड ने टैक्स लगाने की व्यवस्था का एलान कर दिया है। उन्हें क्या पता कि वह आने वाली सरकारों को क्या सिखा रहे हैं?

वाइकिंग लड़ाके और टैक्स का चाबुक

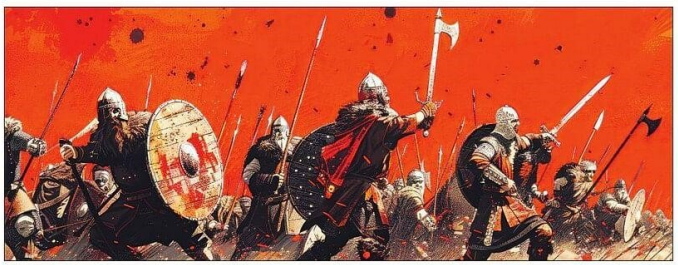

विलियम पिट ने 1802 में इनकम टैक्स को हटा लिया। एक साल बाद नेपोलियन फिर चढ़ आया, तो प्रधानमंत्री हेनरी एडिंगटन इसे फिर वापस ले आए। किंग-क्वीन की कई पीढ़ियों को वक्त निगल गया। बड़ी-बड़ी जंगें करोड़ों लोगों की जान लेकर इतिहास बन गईं, मगर इनकम टैक्स आया, तो फिर वापस नहीं गया।

अंशुमान तिवारी
वरिष्ठ लेखक-पत्रकार

बजट की गंध हवा में है। आमतौर पर बजट वसंती होता है, मगर इस बार का बजट मानसूनी है। बजट है, तो एक ही चर्चा है टैक्स की...उम्मीदों के कबूतर उड़ाने वाले कह रहे हैं कि इस जानलेवा महंगाई में नौकरीपेशा वर्ग के लिए रियायत का मरहम आ सकता है। मगर सत्ता के दरबाजों में कान लगाने पर यह सुनाई देता है कि सरकार जीएसटी को सख्त कर सकती है। कई उत्पादों पर रियायती दर से लगने वाला टैक्स खत्म हो सकता है। टैक्स से हिकारत तारीखी है। प्लेटो, सिसरो और मार्क अंटनी में एक दिलचस्प समानता थी कि तीनों ही टैक्स से बुरी तरह चिढ़ते थे। प्लेटो कहता था कि ईमानदार ज्यादा टैक्स चुकाता है और बेईमान कम। टैक्स की यह व्याख्या अजर-अमर हो गई। सिसरो बोला कि टैक्स ही सत्ता की ताकत है, तो मार्क अंटनी ने कहा कि टैक्स अगर सभ्य होने की फीस है, तो मुझे रिफंड चाहिए, मैं जंगली ही भला। टैक्स की दुनिया है ही इतनी अभिशप्त। टैक्स व्यवस्था की बोहनी ही खराब थी। खपत, संपत्ति और आय पर तरह-तरह के टैक्स की शुरुआत युद्धों और लूट की छाया में हुई थी, इसलिए चाहे भारत हो या यूरोप, सरकारों का यह चाबुक खाल ही उतार देता है।

आइए, टाइम मशीन को उड़ान के लिए रनवे पर पहुंचने का इशारा हो गया है। संभालिए अपनी सीट और बांधिए कुर्सी की पेटी। हम यहां से सीधे नौवीं सदी के यूरोप की तरफ जा रहे हैं। उस यूरोप में घूमते हुए आप खुद को बचाइएगा, क्योंकि आपका सामना दुनिया के सबसे निर्मम लड़ाकों से हो सकता है, जिन्हें वाइकिंग कहा जाता था। यह नौवीं सदी का ब्रिटेन है। दूर से ही देखिए यहां की कत्ल-ओ-गारत। ब्रिटेन वाइकिंग के हमलों से तार-तार हो रहा है। स्कैंडिनेविया के ये लड़ाके यूरोप को रौंद रहे हैं। निर्ममता में इनका कोई सानी नहीं है। ब्रिटेन वाले आपको बताएंगे कि वाइकिंग हमले और लूट के बाद वापस उत्तर में चले जाते हैं और कुछ समय बाद फिर लौटते हैं। वाइकिंग लड़ाके पश्चिम एशिया, रूस, उत्तरी अफ्रीका और कनाडा तक मार करते हैं। इनकी बर्बरता की दंतकथाएं सुनकर आप कांप उठेंगे। शुक्र है, आप ब्रिटेन के सुरक्षित इलाके में हैं। टाइम मशीन आपको नौवीं सदी के उस मौके पर ले आई है, जब किंग अल्फ्रेड ऑफ वेसेक्स राजपाट संभाल रहे हैं। आगे इनकी गिनती ब्रिटेन के महान शासकों में होगी। वाइकिंग हमलों और लूटपाट से ध्वस्त ब्रिटेन को खड़ा करना अल्फ्रेड की जिम्मेदारी है।

टाइम मशीन
अतीत से सूत्रें वर्तमान की धड़कन ■ हर पखवाड़े

सत्ता संभालते ही उन्होंने एंग्लो सैक्सन राज्य को उत्तरी लड़ाकों के मुकाबले में उतारा है। नतीजतन वाइकिंग का आतंक कुछ कम होने लगा है। दसवीं सदी की तरफ बढ़ते हुए आप देख पा रहे हैं कि वक्त इतना रहमदिल साबित नहीं हुआ। किंग अल्फ्रेड फानी दुनिया से कूच कर गए। यह 978 का साल है। अल्फ्रेड के बेटे अथेलरेड सत्ता में हैं। आने वाला वक्त उन्हें किंग अथेलरेड द अनरेडी के नाम से जानेगा। आइए, भागकर टाइम मशीन में बैठिए। यूरोप पर वाइकिंग के भयानक हमले का दूसरा सबसे भयानक दौर शुरू हो गया है। बहुत खून-खच्चर मचा है। ग्रेट हीदन आर्मी ने ब्रिटेन के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया है। किंग अथेलरेड के पास वाइकिंग की ताकत का कोई जवाब नहीं है। वाइकिंग लड़ाके हमले और लूट बंद करने के लिए फिरौती मांगने लगे हैं। मजबूर राजा को यह समझौता करना पड़ा है। वाइकिंग को पहली फिरौती 991 में गई। लड़ाकों को 10,000 रोमन पौंड के चांदी के सिक्के दिए गए, जिनका वजन करीब 3,300 किलोग्राम था। अब तो वाइकिंग बार-बार फिरौती वसूलने लगे। अब हम देखेंगे वह दौर, जिसके लिए जोखिम उठाकर हम 21वीं सदी से वाइकिंग की दुनिया में आए हैं। अथेराल्ड बुरी तरह परेशान है। खजाना खाली है, फिरौती कहां से दी जाए? किंग अथेराल्ड ने टैक्स लगाने की व्यवस्था का एलान कर दिया है। उन्हें क्या पता कि वह आने वाली सरकारों को क्या सिखा रहे हैं। वाइकिंग को फिरौती की रकम के लिए डेनगेल्ड का नाम का टैक्स लगा है। जमींदार इसे चुका रहे हैं। हेरगेल्ड नाम एक और टैक्स लगा है, जो वाइकिंग से मुकाबले के लिए नौसेना के काम आएगा। आगे शाउस ऑफ वेसेक्स के आखिरी सम्राट एडवर्ड द कन्फेसर ने 1056 में हेरगेल्ड को खत्म कर दिया, अलबत्ता डेनगेल्ड या जमीन वाले टैक्स की वसूली जारी रही। 11वीं सदी में वाइकिंग का दबदबा टूटने लगा, मगर डेनगेल्ड जारी रहा। अब हम 1066 में हैं, जहां किंग विलियम एक अनोखा काम करने जा रहे हैं, जिसके बाद टैक्स सत्ता की जरूरत बन जाएंगे। विलियम ने विश्व के इतिहास की पहली आर्थिक जनगणना शुरू करा दी है। उनके कारिंदे पूरे मुल्क में घूम-घूमकर जमीन-जायदाद और संपत्तियों का सर्वे कर रहे हैं। यह सर्वे टैक्स लगाने के मकसद से हो रहा है। विलियम की यह व्यवस्था अगले बीस साल तक जारी रहेगी, जिसमें ब्रिटेन के हर घर में जानवरों तक की गिनती होगी। आइए, अब एक किताब देखिए, जिसका नाम है *डुम्सडे बुक*। दरअसल इसी किताब में विलियम की आर्थिक जनगणना को संजोया गया है। *डुम्सडे बुक* यानी दुनिया के खात्मे की किताब। इस सर्वे को यह अपना नाम यों ही मिला है। इस दौर में जजमेंट डे की तरह डुम्सडे शब्द का इस्तेमाल किसी मामले पर आखिरी फैसले के लिए होता है। इसलिए इस किताब में जो दर्ज है, वह पत्थर की लकीर है। इस रोचक किताब के पन्ने पलटते हुए आपको हैरत होगी। *डुम्सडे बुक* बताती है कि कैसे अलग-अलग तरह की जमीनों को वर्गीकृत कर उन पर टैक्स लगाया जाता था। यह औद्योगिक क्रांति से पूर्व ब्रिटेन का सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसके साथ संपत्तियों पर टैक्स लगना शुरू हुआ, जो फिर नहीं लौटा। टाइम मशीन की रफ्तार बढ़ाते हुए हम 18वीं सदी में पहुंच रहे हैं। अब हम मिलेंगे एक और विलियम से, जिनके राज में हम इनकम टैक्स का जन्म देखेंगे, जिससे पूरी दुनिया चिढ़ती है। इनकम टैक्स पुराने मिस और रोम में लगता था, मगर आज के इनकम टैक्स जैसा नहीं था। यह संपत्ति, खर्च, कमाई आदि पर मिला-जुलाकर टैक्स होता था। आधुनिक इनकम टैक्स भी एक बड़े युद्ध की छाया से निकला है। यह 1799 का ब्रिटेन है। नेपोलियन के साथ युद्ध में बर्तानवी अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो चुकी है। प्रधानमंत्री की कुर्सी पर हैं विलियम पिट द यंगर। युद्ध के खर्च के लिए प्रधानमंत्री ने पहली बार इनकम टैक्स का एलान कर दिया है। टैक्स की न्यूनतम दर दो पेंस है, जो 60 पाउंड की इनकम पर लगाया है। इनकम बढ़ने के साथ टैक्स बढ़ता जाता है। प्रधानमंत्री को एक करोड़ पाउंड चाहिए सेना के लिए। विलियम पिट इसे अस्थायी कहकर लाए हैं। 1802 में उन्होंने इसे हटा लिया। एक साल बाद नेपोलियन फिर चढ़ आया, तो प्रधानमंत्री हेनरी एडिंगटन फिर इनकम टैक्स ले आए। नेपोलियन गुजर गए। किंग-क्वीन की कई पीढ़ियों को वक्त निगल गया। बड़ी-बड़ी जंगें करोड़ों लोगों की जान लेकर इतिहास बन गईं, मगर इनकम टैक्स आया, तो वापस नहीं गया। मगर हमें तो वापस चलना है न। जुलाई खत्म होते-होते इनकम टैक्स रिटर्न भी तो भरना है। टाइम मशीन दिल्ली में उतर रही है। यहां सालाना बजट का मौसम है, आप बस यह दुआ कीजिए कि बजट में नए टैक्स न लगाए जाएं। फिर जल्द मिलेंगे अगले सफर पर...।

जानना जरूरी है
संस्कृति के पन्नों से

आशुतोष गर्ग
लेखक एवं अनुवादक

ब्रह्मा ने अग्निदेव से कहा, 'तुम सारे शरीर से सर्वभक्षी नहीं होओगे। तुम्हारे अपान भाग की ज्वाला ही केवल सर्वभक्षी होगी और तुम्हारे स्पर्श मात्र से सबकुछ शुद्ध हो जाएगा।' इसके बाद अग्निदेव का क्रोध शांत हुआ...

अग्नि को सर्वभक्षी होने का मिला शाप

एक छोटी बच्ची का नाम पुलोमा था। एक दिन पुलोमा किसी बात पर रोने लगी, तो पिता ने उसे डराने के लिए कहा, 'हे राक्षस, तू आकर पुलोमा को ले जा!' दुर्भाग्य से, उस समय एक राक्षस उनके घर में ही छिपा बैठा था। उसे लगा कि नन्ही पुलोमा पर उसका अधिकार हो गया। उसने पुलोमा को मन ही मन अपनी पत्नी मान लिया।** बाद में, पुलोमा जब बड़ी हुई, तो उसके पिता ने उसका विवाह महर्षि भृगु से कर दिया।

एक दिन महर्षि भृगु स्नान करने गए थे और उनकी गर्भवती पत्नी पुलोमा आश्रम में अकेली थी। तभी वह राक्षस ब्राह्मण का वेश धारण करके आया। उसे देखकर पुलोमा भिक्षा लाने भीतर चली गई। राक्षस ने उसका अपहरण करने का निश्चय कर लिया। उसने वहां हवन-वेदी में प्रज्वलित अग्नि से पूछा, 'हे अग्निदेव! आप समस्त कृत्यों के साक्षी हैं। सत्य कहिए, क्या यह वही पुलोमा है, जिसे मैंने बचपन में अपनी पत्नी मान लिया था?'

धूप आवे दो

'हां! यह स्त्री वही पुलोमा है, परंतु इसका विवाह महर्षि भृगु से हो चुका है,' अग्निदेव ने कहा। राक्षस ने कहा, 'इस पर प्रथम अधिकार मेरा है। भृगु से इसका विवाह बाद में हुआ है।'

अग्निदेव बोले, 'बचपन में तुमने पुलोमा को अवश्य अपनी पत्नी माना था, किंतु तुम्हारा उससे विवाह नहीं हुआ। मैं पुलोमा के साथ तुम्हारे विवाह का साक्षी नहीं हूं। परंतु भृगु ने मेरे सामने विधिपूर्वक विवाह किया है। इस पर केवल महर्षि भृगु का अधिकार है।'

- **अग्निदेव की बात सुनकर राक्षस को क्रोध आ गया। इस बीच भृगु-पत्नी पुलोमा भिक्षा लेकर बाहर आईं। राक्षस के सिर पर खून सवार था। वह ब्राह्मण-वेश त्याग कर असली रूप में आ गया और गर्भवती पुलोमा को उठाकर भागने लगा। झटका लगने से पुलोमा का गर्भस्थ शिशु गिर गया।**

इस तरह गर्भ से च्युत होने के कारण उस बालक का नाम 'च्यवन' पड़ा, तथा भृगु-वंशज होने के चलते, वह 'भार्गव' भी कहलाया। भृगु-पुत्र च्यवन इतना तेजस्वी था कि राक्षस उसका तेज सहन नहीं कर पाया और तत्काल जलकर भस्म हो गया। इसके बाद भृगु-पत्नी पुलोमा अपने पुत्र च्यवन को लेकर आश्रम लौट आईं। कुछ देर बाद जब भृगु आश्रम में लौटे, तो उन्होंने पुलोमा को रोते हुए देखा। पुलोमा ने पूरी घटना सुनाई। भृगु ने उनसे पूछा, 'उस राक्षस ने इतने वर्षों बाद भी तुम्हें कैसे पहचान लिया? तुम्हारे बारे में उसे किसने सूचना दी?'

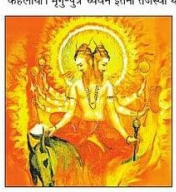

'अग्निदेव ने।' भृगु की पत्नी ने उत्तर दिया।

यह सुनकर क्रोधित भृगु ने हाथ में जल लेकर अग्निदेव को शाप दिया, 'मैं तुम्हें शाप देता हूं कि तुम सर्वभक्षी हो जाओ! अब से तुम किसी भी वस्तु का भक्षण करने लगोगे और तुम्हारी पवित्रता भंग हो जाएगी।'

अग्निदेव ने कहा, 'महर्षि, मैं धर्म के प्रति समर्पित हूं। इसलिए असत्य नहीं बोल सकता था। राक्षस ने मुझसे जो कुछ पूछा, मैंने सत्य कहा। आपको शाप वापस लेना होगा।'

भृगु ने शाप वापस लेने से मना किया तो अग्निदेव को भी क्रोध आ गया। उन्होंने स्वयं को यज्ञ आदि समस्त धार्मिक अनुष्ठानों से दूर कर लिया, जिससे सृष्टि में अव्यवस्था उत्पन्न हो गई। आखिरकार, ब्रह्मा को हस्तक्षेप करना पड़ा। ब्रह्मा ने अग्निदेव से कहा, 'तुम सारे शरीर से सर्वभक्षी नहीं होओगे। तुम्हारे अपान भाग की ज्वाला ही केवल सर्वभक्षी होगी और तुम्हारे स्पर्श मात्र से सब कुछ शुद्ध हो जाएगा।' इसके बाद अग्निदेव का क्रोध शांत हुआ और फिर से अग्निहोत्र आदि संपूर्ण कर्म विधि-विधान के साथ संपन्न होने लगे।

***नोट: इसीलिए बच्चों को हंसी-खेल में या डांटते-डपटते समय भी ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए और न ही राक्षसों जैसे नाम रखने चाहिए!**

क्या आपने भूतों को देखा है?

अयि रोषमुरीकरोषि नो चेत्
किमपि त्वां प्रति वारिधे वदामः।
जलदेन तवार्थिना विमुक्तानि
अपि तोयानि महान् न हा जहासि।।

हे सागर, यदि तू नाराज न हो, तो तुझसे कुछ बात करूं। जब तुझसे जल की याचना करने वाला बादल लोगों को जल दे रहा है, तो तू उससे बड़ा होकर भी जल क्यों नहीं देता है?

भामिनिविलास :-जगन्नाथ

प्रस्तुति : रास्त्री कोसलेंद्रदास

वर्ष 2021 में अमेरिका में एक सर्वे किया गया। इसमें शामिल 41 फीसदी लोगों ने कहा कि उन्हें भूतों पर यकीन है। बीस फीसदी लोगों ने तो यहां तक दावा किया कि उन्होंने भूत को देखा है। अगर ये लोग सही हैं, तो इसका अर्थ है अकेले अमेरिका में ऐसे पांच करोड़ से ज्यादा लोग हैं, जिन्होंने अपनी जिंदगी में भूतों का सामना किया है। मेरे घर के पास एक किराने की दुकान का मालिक मानता है कि उसके घर में भूत हैं। उसने घर में कैमरे लगा रखे हैं, जिनमें दर्ज कई असामान्य रिकॉर्डिंग उसने मुझे भेजी भी हैं। मैंने उन रिकॉर्डिंग्स में उसके घर में कुछ कमरों में छोटे-छोटे प्रकाश के बुलबुले देखे। कुछ भीमी आवाजें सुनाई देती हैं। कई बार किताबें सेल्फ से उड़ती भी दिखीं। एक समाजशास्त्री के रूप में मेरा काम भूत, परग्रही जीवों, पिरामिड शक्ति और अंधविश्वास जैसी

बैरी मार्कोव्स्की
प्रोफेसर एमेरिटस, सोशियोलॉजी, साउथ कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी

भूत पदार्थ और अपदार्थ, दोनों नहीं हो सकता। अगर भूत पदार्थ है, तो वह जगह घेरेगा, उसमें वजन होगा और उसे पकड़ भी सकते हैं। लेकिन अगर वह अपदार्थ है, तो उसका अस्तित्व ही संदिग्ध है।

चीजों में लोगों के विश्वास को परखना है। मैं मानता हूं कि असाधारण दावों की पुष्टि के लिए असाधारण सबूतों की आवश्यकता होती है। लोग जब अजीब आवाजें सुनते हैं, चीजों को चलते देखते हैं, गेंदें या रोशनी की किरणें आदि देखते हैं, तो उन्हें लगता है कि उन्होंने भूत देखा है। लेकिन किसी ने भूतों को बुढ़ा होते, खाते, सांस लेते या बाथरूम का इस्तेमाल करते हुए नहीं देखा है। तो क्या भूत किसी खास ऊर्जा से बने होते हैं, जो बिना नष्ट हुए मंडराते और उड़ते रहते हैं? अगर ऐसा है, तो इसका मतलब है कि जब भूत चमकते हैं, चीजों को हिलाते या आवाजें निकालते हैं, तो वे पदार्थों (जो जगह घेरता है और जिसका वजन होता है) की तरह काम कर रहे होंगे। पर अगर वे दीवार के पार हो जाते हैं या गायब हो जाते हैं, तो उन्हें पदार्थ नहीं होना चाहिए। जब भी भूत-प्रेत का पता लगाने वाला कोई व्यक्ति किसी कथित भुतहा जगह पर जाता है, तो उसे कुछ ऐसी चीजें मिलती हैं, जिसे वह पारलौकिक मान बैठता है। भूतों के व्यक्तिगत अनुभवों की वजह मानवीय इंद्रियों की सीमाएं हो सकती हैं। किराने की दुकान के वीडियो क्लिप की मैंने समीक्षा की। वीडियो में प्रकाश के कई छोटे-छोटे गोले कैद हुए, जो वास्तव में धूल के छोटे कण थे, जो कैमरे के लेंस के करीब तैरते दिखे। शेल्फ पर वजन बढ़ने के कारण ब्रेकेट जब अपनी जगह पर आया, तो झटका लगा और उस पर रखी चीजें गिरने लगीं। जाहिर है कि भूतों की कहानियां आपके मस्तिष्क द्वारा कुछ दृश्यों और ध्वनियों की व्याख्या करने के तरीके से ही पैदा होती हैं।

अध्ययन कक्ष

हिलबिली एलेजी
ए मेमॉयर ऑफ ए फैमिली ऐंड कल्चर इन क्राइसिस

लेखक : जेडी वेंस

प्रकाशक : हार्पर कॉलिन्स
मूल्य : 1,398 रुपये
पेपरबैक

आम से खास बने अमेरिकी की आत्मकथा

साल 2016 में पहली बार प्रकाशित यह किताब कई महीनों तक *न्यूयॉर्क टाइम्स* की बेस्ट सेलर रही, तब जेडी वेंस एक अपरिचित नाम था। लेकिन उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार घोषित होने के बाद उनकी आत्मकथा एक बार फिर चर्चा में है।

'मैं कोई सीनेटर, गवर्नर या पूर्व कैबिनेट सचिव नहीं हूं', जेडी वेंस अपनी आत्मकथा *हिलबिली एलेजी* के पहले पेज पर जब यह पंक्ति लिखते हैं, तो जाहिर है कि वह खुद को एक आम आदमी की तरह पेश करना चाहते हैं। साल 2016 में जब उन्होंने यह किताब लिखी, तब यह सब कुछ सच भी था, क्योंकि तब वेंस पूर्व नौसैनिक और येल लॉ स्कूल के स्नातक थे, जिनके पास एक अच्छी नौकरी, पत्नी, आरामदायक घर और दो कुत्ते भी थे।

अब उनकी आत्मकथा कुछ अलग ढंग से पढ़ी जाएगी, क्योंकि अब वेंस वाकई सीनेटर हैं और रिपब्लिकन पार्टी की तरफ से अमेरिका के उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार भी हैं। किताब प्रवासन की दो कहानियां सुनाती है। पहली का संबंध गरीब गोरों द्वारा चलाए गए आंदोलन से है, जो गांवों से लेकर सिमटते उद्योगों वाले शहरों में चला और जिसमें लेखक के नाना-नानी भी शामिल थे। दूसरी कहानी है वेंस और उनकी यात्रा की, जो मिडल टाउन से लेकर न्यू हैवेन, सिलिकॉन वैली और वाशिंगटन डीसी यानी सत्ता के गलियारों तक पहुंची। यह कहानी है प्रतिकूल परिस्थितियों से उभरे एक नायक की, जिसमें दर्द है और प्रेरणा भी। वेंस जब काफी छोटे थे, तभी से उनकी मां को नशे की दवाइयों की लत थी, जिससे उनका बचपन काफी प्रभावित हुआ। लेकिन उनके बचपन का जो हिस्सा उनके नाना-नानी के मार्गदर्शन में बीता, वह पुस्तक का सबसे यादगार हिस्सा है। नानी की प्रेरणा और नौसेना में भर्ती होने की वजह से उन्हें मिडलटाउन से निकलने में मदद तो मिली ही, वह आत्मविश्वास भी मिला, जिससे वह अपनी आत्मकथा लिख सके। पढ़ाई के दौरान उन्हें अलग-अलग तरह के लोगों के साथ मिलने-जुलने का मौका मिला और वहीं उन्हें अपनी मेंटर प्रोफेसर ऐमी चुआ मिलीं।

वेंस के संस्मरणों की इस किताब का एक हिस्सा तो काफी विनम्र और 'अगर मैं कर सकता हूं, तो कोई भी कर सकता है', प्रकृति का है। लेकिन किताब की खास बात है कि इसमें उत्साहवर्धक नैतिकता के साथ एक गंभीर किस्म की आत्म-स्वीकृति भी जुड़ी है, जो ज्यादातर आत्मकथाओं में विरले ही मिलती है। किताब उन्हें सिर्फ एक भाग्यशाली व साहसी नायक की तरह पेश नहीं करती, बल्कि उनके व्यक्तित्व के ऐसे कई पहलुओं को भी विवेचित करती है, जो सामाजिक आलोचना के पात्र हो सकते हैं। वेंस आगे बढ़ते गए, पर उनके कई साथी बेरोजगारी, नशीले पदार्थों के सेवन, घरेलू हिंसा, गरीबी और निराशा के मकड़जाल में फंसे रहे। क्या वेंस उनके लिए कुछ नहीं कर सकते थे? वह बहादुरी से अपने मानस पर लगे दागों को खोलते हैं, उनकी जांच करते हैं, नतीजों का सामना करते हैं और एक बेहतर व मजबूत इन्सान बनकर उभरते हैं। *हिलबिली एलेजी* आत्मकथा है और इस श्रेणी में कई अश्वेत, आप्रवासी, स्वदेशी और तमाम किस्म के लोगों ने अपने संस्मरण लिखे हैं। लगभग सभी संस्मरणों में अन्याय और पूर्वाग्रह के बीच से उभरा नायक दुनिया को व्यवस्थित करने के अपने तरीके ढूंढता है। प्रेरणा की खोज करने वाले इन्हें पढ़ते हैं, ताकि खुद में वैसे मूल्य पैदा कर सकें। लेकिन वेंस के संस्मरण बताते हैं कि जिंदगी एक व्यक्तिगत जिम्मेदारी है, जिसे हर कोई अपने तरीके से उठाता है और ऐसा होना भी चाहिए।

अभियान

amarujala.com
अमर उजाला

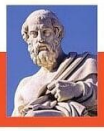

किसी अच्छी बात को दोहराने में कोई बुराई नहीं है।
-प्लेटो, महान दार्शनिक

गोल चबूतरा

Hindi@mithelesh

■ मिथिलेश बाठिया

जब किताबों से ऊब जाता हूं,
किसी छोटे बच्चे की कॉपी पड़ता हूं,
डूब जाता हूं...

वो जो गीली चद्दर झटक के ले आती थी,
ऐसी बारिशें कहां से लाऊं...

68, बिडन स्ट्रीट में 'स्टार थिएटर'

आज के ही दिन 1883 में कोलकाता के 68, विडन स्ट्रीट में स्टार थिएटर के उद्घाटन के साथ बंगाली रंगमंच ने एक नए युग में प्रवेश किया था। इस थिएटर का नाम मूल रूप से प्रसिद्ध अभिनेत्री बिनोदिनी के नाम पर रखा जाना था, लेकिन चूंकि उस समय की अन्य अभिनेत्रियों की तरह बिनोदिनी भी तवायफ परिवार से ताल्लुक रखती थीं, इसलिए इसका नाम 'स्टार थिएटर' रखा गया।

झरोखा
21 जुलाई

इस थिएटर का स्वामित्व बिनोदिनी के संरक्षक गोरमुख रॉय के पास था। थिएटर की शुरुआत नाटक 'दक्ष यज्ञ' से हुई, जो थिएटर के दिग्गज गिरीश चंद्र घोष द्वारा निर्देशित था। इसमें उन्होंने खुद बिनोदिनी के साथ अभिनय किया था। थिएटर का शुरुआती शो बेहद सफल रहा। दर्शक थिएटर और प्रदर्शन, दोनों से मंत्रमुग्ध हो गए। स्टार थिएटर में गिरीश-बिनोदिनी की जोड़ी के अन्य बेहतरीन नाटक भी हुए, लेकिन थिएटर थोड़े समय के लिए चला। कुछ समय बाद गोरमुख रॉय पीछे हट गए और उनका स्थान अन्य लोगों ने ले लिया। 31 जुलाई, 1887 को स्टार थिएटर में अंतिम नाटक का प्रदर्शन हुआ। इस थिएटर का नाम भी कई बार बदला गया। इसे बाद में 'एमराल्ड थिएटर', 'सिटी थिएटर' और 'क्लासिक थिएटर' के नामों से जाना गया। सेंट्रल एवेन्यू के निर्माण से पहले इसे ध्वस्त कर दिया गया था।

■ कांगड़ा से सूर्यदेव साहू

हर रोज किसी न किसी सड़क हादसे की तस्वीर हमारे सामने आती है। कई लोग तो अपनी जान तक गंवा देते हैं। कुछ के शरीर का कोई अंग खराब हो जाता है। लेकिन इसके लिए क्या केवल सरकार ही जिम्मेदार हैं? हम अपनी जिम्मेदारी कब समझेंगे?

सड़क पर सावधानी की जरूरत है !

जागरूक कब होंगे हम?

भारत में साल 2022 में कुल 4 लाख 61 हजार से ज्यादा सड़क हादसे हुए, जिनमें 1 लाख 68 हजार लोगों की मौत हो गई। औसतन रोजाना 1264 सड़क दुर्घटनाएं हुईं, जिनमें 462 लोगों की मौत हुई। ये आंकड़े 2022 के हैं, लेकिन अब भी ऐसा कोई दिन नहीं गुरजता, जब देश में छोटे और बड़े सड़क हादसों की खबरें न आती हों। यह चिंता से अधिक चिंतनीय विषय है। ऐसा लगता है कि ये सड़कें और वाहन, सड़क और वाहन न होकर मौत के साधन बन गए हैं। सवाल उठता है कि आखिर ऐसे हादसों की वजह क्या है? किसकी गलती से इतने लोगों की जानें चली जाती हैं? इसके लिए वास्तव में जिम्मेदार कौन है?

चिट्ठी 1

वास्तव में, इसके पीछे कई कारण हैं। एक तरफ ड्राइवरों को इसका जिम्मेदार ठहराया जा सकता है तो दूसरी ओर प्रशासन की लापरवाही भी कम दोषी नहीं है। अगर तेज रफ्तार इसकी वजह है तो कई जगह सड़कों की खराब स्थिति भी एक बड़ी वजह बनकर सामने आती है। तेज रफ्तार, नशाखोरी, जल्दबाजी में बेतरतीब ओवरटेक करने, मोबाइल पर बात करने, नाबालिगों द्वारा वाहन चलाने, यातायात नियमों से अनभिज्ञ होने, बारिश में पानी होते हुए वाहन चलाने जैसे कई कारण इन हादसों के बाद सामने आते हैं। उसके बाद भी न कोई नसीहत, न सीख दी जाती है। हर साल देश में यातायात सप्ताह मनाया जाता है और वाहन चालकों को सड़क हादसों से बचने के लिए जागरूक किया जाता है। उन्हें यातायात नियमों से भी परिचित कराया जाता है। इसके बाद भी इन सड़क हादसों में कमी नहीं आती। इसलिए वाहन चलाते समय खुद की सुरक्षा के साथ-साथ अन्य चालकों की सुरक्षा का ध्यान भी रखना चाहिए।

■ हेमा हरि उपाध्याय 'अक्षत', उज्जैन

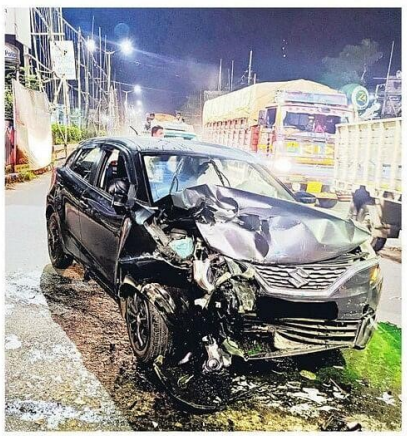

जल संरक्षण के पुराने तरीके अपनाएं

चंद दिनों पहले की बात है, जब दिल्लीवासी बूंद-बूंद पानी को तरस रहे थे। यही हाल देश के अन्य शहरों का भी था। विशेषकर जो औद्योगिक शहर हैं, वहां तो पानी की दोहरी जरूरत है। किसानों को पानी की जितनी जरूरत खेतों के लिए है, उतनी ही जरूरत उद्योगों को भी है। मगर अब जब हमें मानसूनी बारिश से पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध हो रहा है, तब शहर से लेकर गांव की गलियां एवं खेत भी जलभराव की समस्या का सामना कर रहे हैं। आखिर यह स्थिति क्यों है?

चिट्ठी 2

दरअसल, यह वरदान भी है और कुप्रबंधन की स्थिति में अभिशाप भी है। यह कुप्रबंधन मानव निर्मित है। हम जानते हैं कि नदियां, तालाब, झील पानी के प्राकृतिक स्रोत नहीं हैं। यहां तो ग्लेशियर और मानसूनी बारिश का पानी जमा होता है और इन दोनों स्रोतों से मिलने वाला पानी अमृत समान है। लिहाजा, हमें पानी को संचय करने के पुराने तरीके की ओर लौटना होगा।

मानसूनी बारिश से उपलब्ध पानी के प्रति सम्मान का भाव पैदा कर इसके प्रबंधन के तरीके अपनाएं तो जलभराव, बाढ़ जैसी आपदाओं से हम दूर रहेंगे। मानसूनी बारिश के पानी को भूमिगत जल का स्रोत बनाने के लिए पौधरोपण भी एक उपाय है। सबसे अहम बात यह है कि उद्यमियों को भी अपनी जरूरत के लिए मानसूनी बारिश से उपलब्ध पानी का संचय करना चाहिए।

■ मुकेश कुमार मनन, पटना

सदियों से दरक रहे हैं पहाड़

पहाड़ी क्षेत्र इस समय प्रकृति की मार से बुरी तरह त्रस्त हैं। प्रतिदिन चट्टानों का दरकना, हिमस्खलन जैसी घटनाएं हो रही हैं। अक्षय तृतीया के बाद लोगों की धार्मिक यात्राएं पहाड़ी क्षेत्रों के प्रसिद्ध मंदिरों में शुरू होती हैं तो गरमी शुरू होते ही पर्यटकों का पहाड़ों पर घूमने-फिरने, मनोरंजन और स्वास्थ्य लाभ के लिए पहुंचना आरंभ हो जाता है, जो बरसात के मौसम तक जारी रहता है। हर साल यात्रियों की संख्या में बड़ा इजाफा होता है। इस बार भी अब तक रिकॉर्ड तोड़ यात्री पहाड़ी क्षेत्रों में पहुंच चुके हैं। लोगों के वहां जाने के बावजूद उनके मन में अनिष्ट की आशंका बनी रहती है।

चिट्ठी 3

आज सोशल मीडिया का जमाना है। जरा सी देर में घटनाएं वायरल हो जाती हैं। ऐसे में अपनी सुरक्षा के नाम पर लोगों में अफरा-तफरी मचती है, जो कभी-कभी दूसरों के लिए जानलेवा साबित हो जाती है। वैसे भी बरसात के दिनों में पहाड़ पर चट्टानों का दरकने या बोल्डर गिरने की घटनाएं अभी ही नहीं हो रही हैं, बल्कि सदियों से जारी हैं। पुराने समय में संचार के साधनों के साथ ही आधुनिकता का भी अभाव था। लोग यात्रा पर जाते थे तो परिवार, रिश्तेदार, मित्र और हितैषी लोग ईश्वर पर भरोसा करके उनके सकुशल लौट आने की राह देखते थे। हादसे तब भी होते थे, लेकिन आज उनमें बढ़ोतरी ग्लोबल वार्मिंग का नतीजा है, जो पूरी तरह मानवीय गलतियों का देन है। तेज संचार व्यवस्था पल-पल लोगों की कुशलता की खबरें देती है, लेकिन यह हादसों के वक्त भय और आशंका भी पैदा करती है। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि नियति पर भरोसा रखकर ही पहाड़ी क्षेत्रों की यात्रा करें, अन्यथा घर पर सुकून से बैठकर चिंतामुक्त रहें।

■ अमृतलाल मारू 'रवि', इंदौर

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं

गाजियाबाद से ललित शंकर, मेरठ से अहमद खान, बरेली से दिलीप कुमार गुप्ता, मोहाली से अभिलाषा गुप्ता, हल्द्वानी से रवि शंकर शर्मा, फिरोजाबाद से शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, वाराणसी से अमित श्रीवास्तव, मेरठ से मनोज पुरुषार्थी, सूरत से कान्तिलाल मांडोत, रायपुर से संजीव ठाकुर।

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

कुछ अलग

यहां राज करती हैं बिल्लियां

जापान के ताशीरोजिमा द्वीप में बिल्लियों की संख्या इन्सानों से ज्यादा है। इसे 'कैट आइलैंड' कहा जाता है।

जापान के मियगी प्रांत में ताशीरोजिमा द्वीप बिल्लियों के लिए स्वर्ग जैसा है। इस मनमोहक द्वीप में बिल्लियों की संख्या इन्सानों से भी ज्यादा है। यह एक ऐसा द्वीप है, जहां 120 बिल्लियां लगभग 80 मनुष्यों के साथ रहती हैं। बिल्लियों को शुरुआत में इस द्वीप पर चूहों की बढ़ती संख्या से निपटने के लिए लाया गया था। चूहों का प्रकोप भले ही बहुत पहले खत्म हो गया हो, लेकिन बिल्लियों की संख्या में वृद्धि हुई और वर्तमान में उनकी कुल संख्या लगभग 120 हो गई है। ताशीरोजिमा की बिल्लियां अनोखा और बेहतर देखभाल वाला जीवन जीती हैं। द्वीप के निवासियों को इन बिल्लियों से गहरा स्नेह है और वे उन्हें शुभ मानते हैं।

इतिहास के अनुसार, 1600-1868 के बीच यह द्वीप बहुतायत में रेशम का उत्पादन करता था। इसकी वजह से यहां पर चूहों की संख्या काफी अधिक हो गई थी। इससे बाद चूहों की प्राकृतिक शिकारी बिल्लियों का आगमन हुआ। समय के साथ द्वीपवासियों का प्राथमिक व्यवसाय मछली पकड़ना बन गया। इससे बिल्लियों को आहार में मछलियां भी मिलने लगीं और उनकी संख्या बढ़ती चली गई। धीरे-धीरे द्वीप पर बिल्लियों की संख्या मनुष्यों से भी अधिक हो गई। यहां स्थानीय लोग बिल्लियों के भोजन का ध्यान रखते हैं और पूरे द्वीप पर बिल्लियों के लिए भोजन स्टेशन बने हुए हैं।

ताशीरोजिमा द्वीप पर बिल्लियों को समर्पित एक स्थल भी है, जिसे 'मियोरी श्राइन' कहा जाता है। यहां एक बिल्ली की दफनाया गया था। वह बिल्ली चट्टानें गिरने से दुर्घटनावश घायल होकर मर गई थी। यह द्वीप ज्यादा आकर्षक नहीं है और इसमें सुविधाजनक होटल तथा कैफे भी नहीं हैं। यहां पर्यटकों को अच्छे आवास और कैफे आदि विकल्पों के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है।

■ अनिल पाल, रोहतक

इतिहास के पन्नों से
दो महान हस्तियां

यह तस्वीर 'जय जवान जय किसान' का नारा देने वाले प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के गुंजरात दौरे की है। इसमें डॉ. वर्गीज कुरियन उनके साथ किसी मुद्दे पर बातचीत कर रहे हैं। ■ रुद्रप्रयाग से समर्थ कुकरेती

ग्रामोफोन

आशा संग भीमसेन जोशी को लेकर आए जयदेव

1984 में अमोल पालेकर एक फिल्म बना रहे थे- 'अनकही'। इसका निर्देशन भी वह खुद कर रहे थे। कहानी के हिसाब से अमोल पालेकर को एक ऐसे संगीतकार की तलाश थी, जो शास्त्रीय और अभिजात्पूर्ण धुनों से फिल्म को सजा सके, क्योंकि फिल्म पूरी तरह शास्त्रीय संगीत पर आधारित थी। इसके लिए उन्होंने जयदेव को चुना। यह जयदेव का ही कमाल था कि इस फिल्म में आशा भोसले के साथ पंडित भीमसेन जोशी भी थे। फिल्म में बालकवि बैरागी की रचना 'मुझको भी राधा बना ले नंदलाल' और कबीर की रचना 'कौनो ठगवा नगरिया लूटल हो' में आशा भोसले की खनकदार आवाज एक तरफ थी तो 'दुमक-दुमक पग दमक कुंज मधु' तथा तुलसीदास की रचना 'रघुवर तुमको मेरी लाज' में पंडित भीमसेन जोशी की भारी गंभीर आवाज दूसरी तरफ। 'अनकही' के लिए जयदेव को सर्वश्रेष्ठ संगीतकार का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। इससे पहले उन्हें फिल्म 'रेशमा और शेरा' तथा 'गमन' के लिए भी यह पुरस्कार मिल चुका था।

■ अजय श्रीवास्तव, बरेली

इस बार के बजट में हम क्या देखेंगे?

बेरोजगारी और महंगाई जैसे मुद्दों की उपेक्षा ही 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा की जीती गई सीटों की संख्या में कमी का कारण बनी, लेकिन इसका भाजपा को कोई पश्चाताप नहीं है। अब देखना है कि बजट में जनता को राहत मिल पाती है या नहीं?

पी चिदंबरम
पूर्व केंद्रीय मंत्री

अर्थव्यवस्था के कई अन्य ईमानदार शुभचिंतकों की तरह मैं भी हमेशा केंद्रीय बजट को पेश होने की पूर्व संध्या पर पढ़कर और विचार कर लिखता हूं और फिर अक्सर बजट के दिन संसद भवन से निराश होकर निकलता हूं। इसके बाद मैं लोगों के पास जाता हूं। विधायकों, अर्थशास्त्रियों, व्यापारियों, किसानों, महिलाओं, युवाओं और सबसे बढ़कर पार्टी कार्यकर्ताओं सहित विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से बात करता हूं। इनसे मुझे जमीनी हकीकत का पता चलता है, खासकर स्थानीय बाजारों में होने वाली हलचलों के बारे में। पिछले 10 वर्षों के दौरान लगभग हर साल मैंने पाया कि बजट में की गई 'घोषणाएं' 48 घंटों में गायब हो जाती हैं और चर्चाएं बंद हो जाती हैं।

■ कठिन चुनौतियां

इस निराशाजनक प्रदर्शन का मुख्य कारण बजट बनाने वालों का वास्तविकता से दूर रहना है, जिससे वे आर्थिक स्थिति का सही मूल्यांकन करने में असमर्थ रहते हैं। साल 2024-25 का बजट 23 जुलाई, 2024 को पेश किया जाएगा। आर्थिक स्थिति के सूक्ष्म मूल्यांकन से पता चलता है-

- युवाओं के साथ-साथ परिवारों और सामाजिक शक्ति के लिए बेरोजगारी सबसे बड़ी चुनौती है। दर्जनभर खाली पदों के लिए हजारों की संख्या में उम्मीदवार आवेदन करते हैं। परीक्षाओं में शामिल होते हैं और इंटरव्यू देते हैं। प्रश्न पत्र लीक हो जाता है। रिश्वत दी जाती है। कुछ परीक्षाएं या इंटरव्यू अंतिम समय में रद्द होना भारी निराशा का कारण बनते हैं। इसी का परिणाम है बेरोजगारी का भयंकर रूप से बढ़ना। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, अखिल भारतीय स्तर पर बेरोजगारी की दर 9.2 प्रतिशत है। कहने को तो कृषि, निर्माण और गिग इकोनॉमी के क्षेत्र में रोजगार में वृद्धि हुई है। युवा ऐसी नियमित नौकरियां चाहते हैं, जिनमें उन्हें सुरक्षा और उचित वेतन भी मिले। इस तरह की नौकरियां सरकारी निकायों में उपलब्ध हैं। 2024 की शुरुआत में ऐसे पदों पर 10 लाख रिक्तियां थीं, लेकिन इस बात के कोई प्रमाण नहीं हैं कि केंद्र सरकार ने उन्हें भरने के लिए कोई इच्छा जताई हो। इस तरह की नौकरियां विनिर्माण क्षेत्र और वित्तीय सेवाओं, सूचना प्रौद्योगिकी, शिपिंग, हवाई परिवहन, स्वास्थ्य एवं शिक्षा और शोध के क्षेत्र में पैदा की जा सकती थीं। विनिर्माण उत्पादन सकल घरेलू उत्पाद के 15 प्रतिशत पर आकर रुक गया। ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि भारतीय प्रमोटरों ने इस क्षेत्र में निवेश करने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। विनिर्माण और उच्च-मूल्य सेवाओं के तेजी से विस्तार के लिए आर्थिक नीतियों में आमूलचूल परिवर्तन और विदेशी निवेश के साथ विदेशी व्यापार को बढ़ावा देने के लिए साहसपूर्ण निर्णय लेने की आवश्यकता है।
- महंगाई या मुद्रास्फीति दूसरी सबसे बड़ी चुनौती है। सरकार द्वारा मापी गई थोक मूल्य मुद्रास्फीति 3.4 प्रतिशत के उच्चतम स्तर पर है। सीपीआई मुद्रास्फीति 5.1 प्रतिशत और खाद्य मुद्रास्फीति 9.4 प्रतिशत है। चूंकि भारत के हर हिस्से में सामानों की सप्लाई एक जैसी नहीं है, इसलिए अलग-अलग राज्यों और जिलों के दूरदराज इलाकों में कीमतों में अंतर देखने को मिलता है। अगर भारतीय आबादी के 20 से 30 प्रतिशत को छोड़ दिया जाए तो हर कोई महंगाई से प्रभावित हुआ है। इस वजह से कुछ लोगों में नाराजगी भी है। हालांकि बजट के भाषणों और आवंटन में बेरोजगारी से निपटने की ठोस रूपरेखा तैयार की गई है। इसके लिए आप सरकार को 50 अंक दे सकते हैं।

■ दो अन्य चुनौतियां

शेष 50 अंक शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और अन्य लोगों की प्राथमिकताओं के तहत आवंटित किए जा सकते हैं। भारत तब तक एक विकसित देश नहीं बन सकता, जब तक कि शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था को दुरुस्त नहीं किया जाएगा। शिक्षा, खासकर स्कूली शिक्षा का दायरा निस्संदेह बहुत व्यापक है, लेकिन उसकी गुणवत्ता खराब है। वास्तविकता यह है कि एक बच्चा औसत रूप से 7 से 8 साल स्कूल में बिताता है। इसके बाद भी करीब आधे बच्चे किसी भी भाषा में सरल पाठ पढ़ने या लिखने में असमर्थ हैं। संख्यात्मक रूप से यह चुनौतीपूर्ण है। वे किसी भी कुशल नौकरी के लिए उपयुक्त नहीं हैं। हजारों की संख्या में ऐसे स्कूल हैं, जहां एक ही शिक्षक हैं। वहीं, कई स्कूलों में बड़े पैमाने पर कक्षाओं, शौचालयों और शिक्षा सहायकों की भारी कमी है। पुस्तकालय या प्रयोगशालाओं की तो बात ही न करें। केंद्र सरकार को राज्य सरकार को मदद देते हुए इन बुनियादी समस्याओं को दूर करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, न कि एनईपी या एनटीए जैसे विवादास्पद संस्थानों को बढ़ावा देने में समय बर्बाद करना चाहिए।

स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर तो हैं, लेकिन पर्याप्त नहीं हैं। सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा में विस्तार हुआ है, लेकिन गुणवत्ता पर सवालिया निशान हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, सरकारी सुविधाओं के बाद अब भी लोगों को अपनी जेब से करीब 47 फीसदी खर्च करना पड़ रहा है। निजी स्वास्थ्य सेवाएं संख्या और गुणवत्ता, दोनों में बढ़ रही हैं, लेकिन आम लोगों की पहुंच से बाहर हैं। कुल मिलाकर, यह कहा जा सकता है कि डॉक्टरों, नर्सों और तकनीकी सहायकों के अलावा स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़ी मशीनों की भारी कमी है। स्वास्थ्य देखभाल पर केंद्र सरकार का खर्च सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात के रूप में 0.28 प्रतिशत और कुल व्यय के अनुपात के रूप में 1.9 प्रतिशत तक गिर गया है, जिसके कारण सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा को लेकर जनता संतुष्ट नहीं है।

■ एक जोरदार चेतावनी

अन्य लोगों की प्राथमिकताएं स्थिर मजदूरी, बढ़ता घरेलू कर्ज, मजदूरी के सामान की गिरती खपत, एमएसपी के लिए कानूनी गारंटी, शिक्षा ऋण का बोझ और अग्निपथ जैसी योजनाएं हैं। इन चुनौतियों के समाधान हैं- न्यूनतम वेतन 400 रुपये, कानूनी रूप से गारंटीकृत एमएसपी, शिक्षा ऋण माफी और अग्निपथ का उन्मूलन।

इन मुद्दों की उपेक्षा के कारण ही 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा को अपने बूते बहुमत नहीं मिला, लेकिन इसका भाजपा को कोई पश्चाताप नहीं है। सार्वजनिक बयानों को देखें तो वह अपने मॉडल पर पुनर्विचार करने को भी तैयार नहीं है। लोगों ने जुलाई में 13 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव में भाजपा को जोरदार तमाचा मारा है। इंडिया ब्लॉक ने उनमें से 10 सीटों पर जीत हासिल की और उसका वोट शेयर भी बढ़ा। क्या बजट में इन चेतावनियों का जवाब मिलेगा, यह देखने वाली बात होगी।

Licensed by The Indian Express Limited

सावन में बेलपत्र बेलपत्र में विटामिन

भोलेनाथ की भक्ति और उनकी कृपा पाने के लिए सावन माह सबसे श्रेष्ठ माना गया है। यह महीना हिंदू कैलेंडर का पांचवां महीना है। शिव पुराण के अनुसार, सावन के महीने में भगवान शिव और माता पार्वती पृथ्वी पर निवास करते हैं।

शिवलिंग की पूजा करते वक्त जल और बेलपत्र अर्पित किए जाते हैं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि इसके पीछे क्या कारण है? शिव पुराण के अनुसार, भगवान शिव को बेलपत्र चढ़ाने से एक करोड़ कन्यादान के बराबर फल मिलता है। ऐसा माना जाता है कि बेलपत्र और जल से भगवान शिव का मस्तिष्क शीतल रहता है। बेलपत्र का धार्मिक, औषधीय और सांस्कृतिक महत्व पुराणों और वेदों में बताया गया है। पुराणों के अनुसार, बेलपत्र से पूरे ब्रह्मांड का निर्माण हुआ है। मान्यता है कि समुद्र मंथन में हलाहल नाम का विष निकला था, जिसका प्रभाव विश्व पर न पड़े, इसलिए महादेव ने उसका पान किया था। विष के प्रभाव को कम करने के लिए देवी-देवताओं ने उन्हें बेलपत्र खिलाना शुरू कर दिया, साथ ही जल अर्पित किया, जिससे उन्हें राहत मिली और वे प्रसन्न हुए।

हरीशचंद्र पांडे

खुला आकाश

बेलपत्र में विटामिन ए, सी, बी1, बी6, बी12, कैल्शियम, पोटैशियम, राइबोफ्लेविन और फाइबर भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं, जो कई बीमारियों से लड़ने में मदद करते हैं।

बेलपत्र के पेड़ की छाल, जड़, फल और पत्ते, सभी का इस्तेमाल अलग-अलग रोगों को ठीक करने के लिए होता है। बेलपत्र के पवित्र वृक्ष से मसूड़ों से खून आना, अस्थमा, पीलिया, पेचिश, एनीमिया और कई अन्य बीमारियों का उपचार हो सकता है। इसमें विटामिन ए, सी, बी1, बी6, बी12, कैल्शियम, पोटैशियम, राइबोफ्लेविन और फाइबर भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं, जो कई बीमारियों से लड़ने में मदद करते हैं। इसमें एंटीफंगल और एंटीबायरल गुण होते हैं, जो शरीर को कई संक्रमणों से ठीक करने में मदद करते हैं। इसलिए कई लोग इसे घर में भी उगाते हैं और इसका नियमित सेवन करते हैं।

पुराणों के अनुसार, बेलपत्र से पूरे ब्रह्मांड का निर्माण हुआ है। एक चक्रत था, जब माता पार्वती के पसीने की बूंद मंदराचल पर्वत पर गिर गई और उससे बेल का पेड़ निकल आया। इसलिए इस पेड़ पर वे कई स्वरूपों में रहती हैं। बेलपत्र में उनके सभी स्वरूप बसते हैं। पेड़ की जड़ में गिरिजा, तनों में माहेश्वरी, शाखाओं में दक्षिणायनी और पत्तियों में पार्वती के रूप में वे बसती हैं। माता पार्वती का प्रतिबिंब होने की वजह से बेलपत्र को भगवान शिव पर चढ़ाया जाता है। कहा जाता है कि मनुष्य ही नहीं, देवता भी बेलपत्र के वृक्ष की पूजा करते हैं।